

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अगस्त, 2020
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2020

वर्ष : 78 अंक : 08
भाद्रपद, 2077 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

अगस्त, 2020



णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सत्त्वसाहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सत्त्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सत्त्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥



Website : www.jinwani.in

यदि ज्ञान प्राप्त करके भी क्रोध कम नहीं हुआ, कषाय ज्यों के त्यों है,
लालसाएँ समाप्त नहीं हुई तो कहना होगा वह ज्ञान, ज्ञान नहीं है।

— आचार्य श्री हीरा

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जय गुरु हस्ती

जय महावीर

जय गुरु हीरा-मान

शंक सीजन्य



अनन्य गुरुभक्त, सरलमना, सहृदय, करुणाशील

स्व. श्री माणकचन्दजी डागा सुपुत्र स्व. श्री प्रेमचन्दजी डागा

(स्वर्गगमन 03 अगस्त, 1995)

के 25वें पुण्य-स्मृति दिवस पर कोटि कोटि नमन

:: श्रद्धाघनत ::

कंचनदेवी डागा (धर्मसहायिका)

प्रकाशचन्द, विमलचन्द, हीराचन्द (भ्राता)

श्रीमती शकुन्तला-श्री पारसचन्दजी हीरावत (बहन-बहनोई)

विनयचन्द - पुष्पलता, नरेन्द्र कुमार - सुनीता डागा (पुत्र-पुत्रवधू)

कनक - श्री देवेन्द्रजी बड़ेर, मालती - श्री पारसजी मेडतवाल (सुपुत्री-दामाद)

विनीत - ऋचा, नमन-रिद्धि, निपुण-महक (सुपौत्र-सुपौत्रवधू)

सार्थक, भव (प्रपौत्र) एवं समस्त डागा परिवार, जयपुर

जय गुरु हस्ती

जय महावीर

जय गुरु हीरा-मान

धक सौजन्य

कामना को बश में न करने वाला कदम-कदम पर चुनौती के संक्लेश में,
आकुलता-व्याकुलता के घेराव में पड़ता है,
उसका मन चञ्चल एवं असन्तुष्ट रहता है।

-आचार्य श्री हस्ती

शास्त्र कह रहा है-मानव! जड़ के प्रभाव में आकर चलने के बजाय
अपने आत्म-स्वरूप में आत्मलक्ष्यी बनकर पुरुषार्थ में क्रिया करना
सीख ले तो अनन्त-अनन्त भवों के बन्धन ढीले हो सकते हैं।

-आचार्य श्री हीरा



गौतमचन्द जैन (सेवानिवृत्त डी.एस.ओ.)-श्रीमती विमला जैन

(अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री पद्मावती पोरवाल जैन
महिला मण्डल, क्षेत्र सवाईमाधोपुर)

आदित्य-श्रीमती नेहा जैन (सुपुत्र-सुपुत्रवधू)

मिहिर-श्रीमती नीतिका जैन (सुपुत्र-सुपुत्रवधू)

आर्जव, धीर (सुपौत्र)

70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

✚ संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

✚ संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

✚ प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

✚ प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

✚ सह-सम्पादक

नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

✚ सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

✚ भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)



लद्धूण वि आरियत्तणं,
अहीणपंचिदियथा हु दुल्लहा।
विणल्लिदियथा हु दीसई,
समयं गोचम! मा पमावडु॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.17

पाकर भी आर्यत्व,
पूर्ण-पञ्चेन्द्रिय पाना है अतिदुष्कर।
हैं कितने (ही) इन्द्रियविकल यहाँ,
गौतम! प्रमाद न क्षण का कर॥

अगस्त, 2020

वीर निर्वाण सम्वत्, 2546

भाद्रपद, 2077

वर्ष 78

अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा

कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

| | | | |
|------------------------|---|--|----|
| सम्पादकीय- | जीव का वीर्य गुण : पुरुषार्थ का पोषक | -डॉ. धर्मचन्द जैन | 7 |
| अमृत-चिन्तन- | आगम-वाणी | -डॉ. धर्मचन्द जैन | 10 |
| विचार-वारिधि- | चारित्रवान बनें | -आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. | 12 |
| प्रवचन- | विकार घटाने का साधन है ज्ञान | -आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. | 13 |
| | सन्तों के रक्षक हैं श्रावक | -उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. | 19 |
| | जीवन का मूल्य सच्चरित्र से है | -महान् अध्यक्ष श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. | 22 |
| | आसक्ति के चक्कर में चौरासी के चक्कर | -श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. | 25 |
| English-section | Uttarādhyayana Sūtra-Extracts | <i>Shri C. M. Bachhawat (Retd. IAS)</i> | 28 |
| दीक्षा-शताब्दी- | प्रतिक्रमण : एक प्रमाण-पत्र | -श्री अरुण मेहता | 38 |
| शोधालेख- | उत्तराध्ययनसूत्र में निहित दार्शनिक सिद्धान्त | -डॉ. धर्मचन्द जैन | 39 |
| | पर्यावरण-चेतना एवं संरक्षण | -डॉ. एन. के. खींचा | 49 |
| प्रेरक-प्रसङ्ग- | जीवन का स्वप्न | -आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी | 47 |
| चिन्तन- | सच्चे सुख के सात कदम | -डॉ. अनेकान्त कुमार जैन | 53 |
| विज्ञान-स्तम्भ- | धर्म और विज्ञान | -श्री प्रमोद महनोत | 56 |
| युवा-स्तम्भ- | मेरे जीवन के महावीर | -श्री मनीष मेहता | 58 |
| प्रासङ्गिक- | क्षमा : जीवन का अमृत | -श्री पदमचन्द गाँधी | 60 |
| परिवार-स्तम्भ- | पड़ोसिन | -श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा | 64 |
| तत्त्व चर्चा- | आओ मिलकर कर्मों को समझें (6) | -श्री धर्मचन्द जैन | 69 |
| संघ-निर्देश- | कोरोना से बचाव हेतु संघ द्वारा विनम्र निवेदन | -श्री धनपत सेठिया | 72 |
| गीत/कविता- | मैं कोरोना हूँ... क्यूँ आया हूँ? | -श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ' | 18 |
| | एक ही है मुक्ति का आधार | -श्री सुशील चाणोदिया | 24 |
| | गौतम का आया सन्देश | -श्री आनन्द पटवा | 27 |
| | लोक भावना | -श्रीमती अभिलाषा हीरावत | 46 |
| | पाकर दर्शन आज गुरु के | -श्री गजेन्द्र कुमार जैन | 48 |
| | विकारों पर विजय | -डॉ. रमेश 'मयंक' | 52 |
| | जीवन बोध क्षणिकाएँ | -श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. | 55 |
| | गुरुवर ने सुनाया | -श्रीमती अंशु संजय सुराणा | 57 |
| विचार/चिन्तन- | Some Pearls | - <i>Shri Dinesh Jain 'C.A.'</i> | 11 |
| | सिद्धियों से बढ़कर आत्मज्ञान | -श्री रणवीरमल भण्डारी | 59 |
| | जीवन का आनन्द ले हर दिन | -श्रीमती सुशीला जैन | 68 |
| साहित्य-समीक्षा- | नूतन साहित्य | -श्री गौतमचन्द जैन | 74 |
| समाचार विविधा- | समाचार-संकलन | -संकलित | 75 |
| | साभार-प्राप्ति-स्वीकार | -संकलित | 90 |
| बाल-जिनवाणी - | विभिन्न आलेख/रचनाएँ | -विभिन्न लेखक | 91 |

जीव का वीर्य गुण : पुरुषार्थ का पोषक

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जैनदर्शन आत्मवादी है। इसके साथ ही उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषकार-पराक्रम को महत्त्व देने से यह पुरुषार्थवादी भी है, किन्तु नियतिवादी नहीं है। इसके अनुसार सब कुछ पहले से नियत नहीं है। इस बात की पुष्टि प्रभु महावीर के द्वारा प्रतिपादित जीव के उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषकार एवं पराक्रम से भी होती है। प्रभु महावीर ने सूत्रकृताङ्ग, व्याख्याप्रज्ञप्ति, उपासकदशाङ्ग में नियतिवाद का खण्डन किया है तथा वीर्य एवं पुरुषकार का प्रबल समर्थन किया है।

जैनदर्शन जिस प्रकार कर्म का कर्ता आत्मा को मानता है उसी प्रकार वह कर्म को क्षय करने वाला भी आत्मा को स्वीकार करता है। आत्मा स्वयं अपना भाग्य-विधाता है। जैनदर्शन में यह भी स्वीकृत नहीं है कि कोई ईश्वर इस जगत् का संचालक है एवं वह विभिन्न प्राणियों को सुख-दुःख देता है। जैनदर्शन के अनुसार जीव के द्वारा कृत कर्म ही उसे समय-समय पर स्वतः फल प्रदान करते हैं।

जैनधर्म को पुरुषार्थवादी मानने का आधार जीव के उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषकार-पराक्रम हैं। इनसे जीव अपना अभ्युदय एवं पतन करता है। उत्थान का तात्पर्य है कार्य के सम्पादन हेतु तत्परता, कर्म का अर्थ है प्रवृत्त होना, बल का तात्पर्य है शारीरिक, मानसिक शक्ति तथा वीर्य का अभिप्राय है-मन, वाणी आदि का संचालन करने वाली प्राणशक्ति। पुरुषकार का तात्पर्य है मैं ऐसा कर सकता हूँ इस प्रकार की धारणा बनाकर प्रयत्नशील होना तथा पराक्रम का अभिप्राय है सामर्थ्य के अनुरूप या योग्य प्रयत्न। पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पति-कायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, नैरयिक, देव, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय एवं मनुष्य इन सभी में ये उत्थान,

कर्म, बल, वीर्य आदि उपलब्ध होते हैं। उत्थान, कर्म आदि का आधार जीव का वीर्य गुण है। उत्तराध्ययनसूत्र में ज्ञान, दर्शन आदि गुणों के साथ वीर्य को भी जीव का एक गुण प्रतिपादित किया गया है-

णाणं च दंसणं चैव, चरित्तं च तवो तथा।

वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 28, गाथा 11

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य एवं उपयोग जीव के लक्षण हैं, ये अजीव में नहीं होते। वीर्य गुण ही आत्मा को कुछ करने के लिए शक्ति प्रदान करता है। आत्मा को ही नहीं, यह मन, इन्द्रिय, शरीर आदि को भी कुछ करने के लिए बल एवं शक्ति प्रदान करता है। इस शक्ति को बाधित करने वाला आठ कर्मों में एक कर्म अन्तराय है। अन्तराय कर्म का एक भेद वीर्यान्तराय कर्म है। यह आत्मा की शक्ति को बाधित करता है। शरीर, इन्द्रिय आदि की शक्ति भी इससे बाधित होती है।

वीर्य मूलतः आत्मा या जीव का सामर्थ्य है जो आत्मबल, मनोबल एवं शरीरबल के रूप में प्रकट होता है। आत्मा में जो उत्साह एवं सामर्थ्य अनुभव में आता है, वह आत्मवीर्य है। मन की शक्ति मनोबल के रूप में प्रकट होती है, वह भी वीर्य है। इसी प्रकार शरीर का सामर्थ्य भी वीर्य है।

प्राणी की कोई भी क्रिया हो, उसमें वीर्य का प्रयोग होता है। चलना, फिरना, उठना, बैठना, बोलना, लिखना आदि कोई भी शारीरिक क्रिया हो, सभी में वीर्य की आवश्यकता होती है। आलसी व्यक्तियों में वीर्यान्तराय कर्म प्रभावी रहता है। अतः वे कुछ भी कार्य करने का उत्साह नहीं रखते। मन में जो संकल्प बल होता है वह भी वीर्य के बिना नहीं होता। मन की दृढ़ता भी वीर्य से आती है। बुद्धि के, सहकार से सच्चिन्तन में

भी वीर्य सहकारी होता है। व्रत, नियमों के पालन, तपस्या के आचरण एवं प्रारम्भ किए गए कार्य को पूर्ण करने के सतत पुरुषार्थ में भी वीर्य सहकारी होता है। यही नहीं शरीर एवं मन के द्वारा जो संयुक्त कार्य होते हैं उनमें सफलता वीर्य के सदुपयोग से मिलती है। धावक, योगी, पहलवान, खिलाड़ी आदि को आत्मबल, मनोबल एवं शरीरबल से सफलता प्राप्त होती है। निराश एवं हताश लोगों में वीर्यान्तराय कर्म उनके उत्साह एवं बल को प्रकट नहीं होने देता।

वीर्य के कारण ही कोई वीर कहलाता है। उसी से वह पराक्रम कर पाता है। जो कर्म करने में अर्थात् क्रिया करने में वीर होता है वही धर्म क्रिया करने में वीर बन पाता है—जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा। प्रभु महावीर दोनों प्रकार से वीर थे। प्रत्येक तीर्थङ्कर कर्म में भी वीर होता है और धर्म में वीर होता है—से वीरिणं पडिपुण्णवीरिण (सूत्रकृताङ्ग 1.6.9)। भरत चक्रवर्ती षट्खण्ड के अधिपति थे, कर्म में शूर थे, साथ ही वे धर्म में शूर होने से केवलज्ञानी भी बने। जीव विज्ञान में वीर्य शब्द का प्रयोग पुरुष की जनन शक्ति के सूचक द्रव्य के लिए होता है। यह भी मनुष्य के सामर्थ्य को प्रकट करता है। इसलिये जो वीर्य का दुरुपयोग करता है वह अपनी शक्ति को क्षीण करता है।

भगवतीसूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्ति) में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य एवं पुरुषकार-पराक्रम का बहुशः उल्लेख हुआ है। वहाँ कहा गया है कि कोई जीव यदि अपने कर्म की उदीरणा करता है अर्थात् उन्हें समय से पूर्व उदय में लाता है तो वह उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि के द्वारा कर पाता है। इनकी अनुपस्थिति में कोई जीव कर्म की उदीरणा नहीं कर सकता है। इसी प्रकार पूर्वबद्ध कर्म का उपशम करना हो तो भी उत्थान, कर्म, बल, वीर्य के प्रयोग की आवश्यकता होती है। बिना उत्थान, कर्म, बल, वीर्य के कोई जीव अपना विकास नहीं कर सकता है। वह मिथ्यादृष्टि से सम्यग्दृष्टि भी तभी बनता है जब उत्थान कर्म आदि का अवलम्बन लेता है।

वीर्य तीन प्रकार का होता है—1. बालवीर्य, 2.

बालपण्डित वीर्य और 3. पण्डित वीर्य। जो जीव पापों से अविरत है उसके उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि को बाल वीर्य कहा गया है। जो आंशिक रूप से पापों से विरत है उसके उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि को बालपण्डित वीर्य एवं जो पूर्णतया पापों से विरत है उसके उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि रूप पुरुषार्थ को पण्डित वीर्य स्वीकार किया गया है। हम प्रायः बालवीर्य वाले हैं। जितना भी पुरुषार्थ करते हैं उसमें बालवीर्य ही अधिक दृष्टिगोचर होता है। जो व्यक्ति भोगों में, भोग के साधनों में, धनार्जन में, पाप कार्यों को करने में, असंयम में, दूसरों को हानि पहुँचाने में अपनी शक्ति लगाता है, वह बालवीर्य का ही प्रयोग करता है। मिथ्यादृष्टि जीव तो सारे बालवीर्य वाले ही होते हैं, किन्तु सम्यग्दृष्टि जीवों में भी जो पापों से अविरत हैं, बालवीर्य वाले ही हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से ऐसा जीव अपने वीर्य का सही दिशा में प्रयोग करना नहीं जानता। जो जीव सम्यग्दृष्टि हैं, साथ ही श्रावक-श्राविका के रूप में व्रतों को स्वीकार कर आंशिक रूप से पाप कार्यों पर लगाम लगाते हैं वे बालपण्डितवीर्य वाले होते हैं। ऐसे जीवों को सही समझ तो होती है, किन्तु वे पापों को पूरा छोड़ने में अपना पुरुषार्थ नहीं कर पाते हैं। पुरुषार्थ नहीं दिखा पाने की इस कमजोरी में वीर्यान्तराय कर्म भी कारण बनता है। वे साधक मनुष्य धन्य हैं जो पंच महाव्रतधारी हैं, पाँच समिति तीन गुप्ति का पालन करते हैं तथा पापों से पूरी तरह विरत होकर जीते हैं साथ ही अप्रमत्तता पूर्वक साधना करते हैं वे पण्डितवीर्य वाले होते हैं। सूत्रकृताङ्ग (1.8.9.) में बालवीर्य एवं बाल-पण्डित वीर्य को सकर्मवीर्य तथा पण्डितवीर्य को अकर्मवीर्य कहा गया है।

यह चिन्तन करने की आवश्यकता है कि हमारा पुरुषार्थ किस दिशा में जा रहा है। हम अपने पुरुषार्थ का उपयोग करना सीख लें, उसे सही दिशा में लगायें तो वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम बढ़ता जायेगा एवं हमारा पुरुषार्थ भी समृद्ध होता रहेगा।

भगवतीसूत्र (शतक 1, उद्देशक 3) में कहा गया है कि वीर्य से योग उत्पन्न होता है अर्थात् मन, वचन,

काय की प्रवृत्ति वीर्य से होती है। वहाँ यह भी कहा गया है कि वीर्य शरीर से उत्पन्न होता है तथा शरीर जीव से उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि वीर्य की मूल उत्पत्ति का कारण जीव है। इसी आगम में यह भी स्पष्ट किया गया है कि कर्मों की निर्जरा भी जीव उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि से करता है। यही नहीं कर्मों की स्थिति एवं अनुभाग में भी वृद्धि या कमी जीव उत्थान, कर्म, बल, वीर्य से करता है। मोक्ष का भी साधन वीर्य है, तो नरक में जाने का भी एवं बड़े से बड़ा पाप करने का साधन भी वीर्य बनता है।

भगवतीसूत्र (शतक 1, उद्देशक 8) में निरूपित किया गया है कि जो सिद्ध जीव हैं, वे अवीर्य हैं। शरीर के न होने से वे किसी प्रकार की प्रवृत्ति नहीं करते हैं इसलिये उन्हें अवीर्य कहा गया है। जो संसारी जीव हैं वे दो प्रकार के हैं—एक वे जो शैलेशी अवस्था को प्राप्त हैं तथा दूसरे वे जो संसार में परिभ्रमण कर रहे हैं। जो शैलेशी अवस्था को प्राप्त हैं वे लब्धिवीर्य होते हैं, किन्तु कारण अवीर्य कहलाते हैं, क्योंकि वे किसी प्रकार की प्रवृत्ति नहीं करते हैं। जो अशैलेशी अवस्था में हैं अर्थात् संसार में परिभ्रमण कर रहे हैं वे जीव लब्धि वीर्य भी हैं और कारण वीर्य भी हैं। उन्हें वीर्य करने की योग्यता प्राप्त है, इसलिये लब्धिवीर्य कहलाते हैं तथा जब वे प्रवृत्ति करते हैं तो वे करणवीर्य कहे जाते हैं। जब संसारी जीव उत्थान, कर्म, बल आदि का प्रयोग नहीं करता है तब वह भी अवीर्य कहा जाता है। किन्तु प्रायः संसार में रहता हुआ जीव सवीर्य ही होता है।

संसार में रहकर जीव पाप भी करता है एवं पुण्य भी। कर्मों का आस्रव भी करता है एवं संवर भी। कर्मों का बन्ध भी करता है एवं निर्जरा भी। इन सबमें वीर्य सहायक होता है। एक योद्धा भी वीर्य का प्रयोग करता है तो एक आतङ्कवादी भी। एक हिंसक भी वीर्य का प्रयोग करता है तो अहिंसक भी। एक मिथ्याभाषी भी वीर्य का प्रयोग करता है तो एक सत्यवादी भी। एक चोर भी वीर्य का प्रयोग करता है तो एक ईमानदार भी। एक व्यभिचारी भी वीर्य का प्रयोग करता है तो एक ब्रह्मचारी

भी। एक परिग्रही भी वीर्य का प्रयोग करता है तो एक अपरिग्रही भी। इस प्रकार पाप की सभी प्रवृत्तियों में भी वीर्य प्रयुक्त होता है तो इनके परिहार में एवं धर्मकरणी में भी वीर्य लगता है। पाप, आस्रव, हिंसा, झूठ आदि में वीर्य का दुरुपयोग होता है जिसका परिणाम दुःख है तथा पुण्य, संवर, अहिंसा आदि में वीर्य का सदुपयोग होता है, जिसका परिणाम सुख है। पुरुषार्थ सही दिशा में किया जाये। गलत दिशा में किया गया पुरुषार्थ पतन की ओर ले जाता है तो सही दिशा में किया गया पुरुषार्थ उत्थान की ओर ले जाता है। जीवन व्यवहार में भी हम देखते हैं कि जो सही सोच के साथ सही समय पर सही प्रयत्न करता है वह सफलता प्राप्त करता है तथा जो गलत सोच के साथ बिना सोचे-समझे प्रयत्न करता है वह असफल रहता है।

वीर्य के सही प्रयोग का सम्बन्ध सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान से जुड़ा हुआ है। अज्ञान दशा में वीर्य का प्रयोग तो होता है, किन्तु वह मनुष्य के विकास में सहायक नहीं होता है। वह कर्मों की निर्जरा करने के स्थान पर कर्मों का बन्ध करता चला जाता है। वह मैत्री का सम्बन्ध स्थापित करने के स्थान पर शत्रुता का सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। वह जीवों का सहयोगी होने की अपेक्षा उनका अहितकारी हो जाता है। इसलिये वीर्य के सही प्रयोग में सम्यग्ज्ञान एवं सम्यग्दर्शन की महती भूमिका होती है। इसी के साथ मोह कर्म पर विजय प्राप्त करने में भी वीर्य सहयोगी होता है। अपने कषायों को देखना एवं उन्हें नियन्त्रित करना अपने वीर्य या पुरुषार्थ का सही प्रयोग है। धैर्य, परिश्रम, उत्साह, वैराग्य, सम्यग्दर्शन, उपशम श्रेणि, क्षपक श्रेणि आदि सभी पुरुषार्थ के सही प्रयोग से सम्भव हैं।

जीव का उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि स्वीकार करने से यह भी सिद्ध होता है कि उसमें अजीव पुद्गलों को प्रभावित करने की भी शक्ति होती है। पुद्गलों का जो प्रयोग परिणमन है वह जीवों के पुरुषार्थ या प्रयत्न से ही सम्भव हो पाता है।

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

जीवा णं भन्ते! कंखामोहणिज्जं कम्मं बंधंति? हंता बंधंति॥ कहण्णं भन्ते! जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं बंधंति? गोयमा! पमादपच्चया, जोगनिमित्तं च॥ से णं भन्ते! पमादे किंपवहे? गोयमा! जोगप्पवहे॥ से णं भन्ते! जोए किंपवहे? गोयमा! वीरियप्पवहे॥ से णं भन्ते! वीरिए किंपवहे? गोयमा! सरिरप्पवहे॥ से णं भन्ते! सरिरे किंपवहे? गोयमा! जीवप्पवहे॥ एवं सति अत्थि उट्टाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा॥

-भगवई (आचार्य महाप्रज्ञ), जैन विश्व भारती, लाडनूँ, शतक 1, उद्देशक 3, सूत्र 140-146

अर्थ-भन्ते! (क्या) जीव कांक्षामोहनीय कर्म का बंध करते हैं? हाँ, करते हैं। भन्ते! जीव कांक्षामोहनीय कर्म का बंध किस हेतु से करते हैं? गौतम! उसका प्रत्यय-हेतु (परिणामी कारण) प्रमाद और निमित्त-हेतु योग (मन, वचन और काया की प्रवृत्ति) है। भन्ते! प्रमाद किससे उत्पन्न होता है? गौतम! (प्रमाद) योग से उत्पन्न होता है। भन्ते! योग किससे उत्पन्न होता है? गौतम! (योग) वीर्य से उत्पन्न होता है। भन्ते! वीर्य किससे उत्पन्न होता है? गौतम! (वीर्य) शरीर से उत्पन्न होता है। भन्ते! शरीर किससे उत्पन्न होता है? गौतम! (शरीर) जीव से उत्पन्न होता है। ऐसा होने पर उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषकार-पराक्रम का अस्तित्व सिद्ध होता है।

विवेचन-भगवतीसूत्र जिसे व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र भी कहा जाता है, में ज्ञान-विज्ञान का खजाना है। प्रस्तुत सूत्रों में कांक्षामोहनीय कर्म शब्द का जो प्रयोग हुआ है वह दर्शनमोहनीय कर्म का सूचक है, क्योंकि 'कांक्षा' शब्द सम्यक्त्व के अतिचारों में परिगणित है। जब जीव सही बोध के अभाव में शंका ग्रस्त होता है तब अनेक मतवादों या मान्यताओं के उपस्थित होने पर उसे यह

कांक्षा उत्पन्न होती है कि किसे सही मानूँ और किसे नहीं? कांक्षा भी चेतना को मूढ़ बनाए रखती है, इसलिए यह मोह का एक रूप है।

इस सूत्र में इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है कि कर्म का बन्धन जीव ही करता है। इससे जीव का कर्तृत्व सिद्ध होता है। नियतिवाद एवं ईश्वरवाद जैन परम्परा में मान्य नहीं हैं। प्रश्न यह है कि जीव बन्ध कैसे करता है? उत्तर में कहा गया है कि प्रमाद के कारण और योग के निमित्त से जीव कांक्षामोहनीय कर्म का अथवा उपलक्षण से सभी कर्मों का बन्ध करता है।

प्रत्यय का अर्थ है मूल कारण एवं निमित्त का तात्पर्य है सहकारी कारण। बन्धन में प्रमाद मूल कारण है तथा योग निमित्त कारण है। प्रमाद जहाँ मोहनीय कर्म का अथवा कषाय का सूचक है वहाँ मन, वचन और काया की प्रवृत्ति रूप योग नामकर्म का द्योतक है। जैन साहित्य में बन्धन के कारणों का विभिन्न दृष्टियों से प्रतिपादन किया गया है। स्थानाङ्गसूत्र (स्थान 5) में मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय एवं योग को आस्रव का द्वार कहा गया है। तत्त्वार्थसूत्र (8.1) में भी इन्हीं पाँच को बन्ध का हेतु कहा गया है-मिथ्यात्वाविरतिप्रमाद-कषाययोगाः बन्धहेतवः। इन पाँच में प्रमाद एवं योग का समावेश हो जाता है। प्रज्ञापनासूत्र एवं उत्तराध्ययनसूत्र में संक्षिप्त में राग और द्वेष को कर्म का बीज बताया गया है। कषाय एवं योग से कर्मबन्ध होता है, यह कर्मग्रन्थों में भूरिशः स्वीकृत है। संक्षेप में कषाय एवं योग को बन्ध का कारण कहने के पीछे हेतु यह है कि योग से प्रकृति एवं प्रदेश बन्ध होता है तथा कषाय से स्थिति एवं अनुभाग बन्ध होता है।

भगवतीसूत्र में जो 'प्रमाद' को बन्ध का मूल कहा गया है उसके पीछे भी कोई दृष्टि है। यह प्रमाद ही है जो जीव की चेतना में जड़ता का प्रभाव डालता है।

सूत्रकृताङ्गसूत्र (1.83) में भी 'पमायं कम्मामाहंसु' वचन से प्रमाद को कर्म कहा है। अप्रमत्त अवस्था यदि निरन्तर रहे तो मुक्ति दूर नहीं रहती।

जैनदर्शन में 'प्रमाद' शब्द आत्म-विस्मृति का सूचक माना जाता है। भगवती के वृत्तिकार अभयदेवसूरि ने प्रमाद का अर्थ 'मद्य' आदि किया है। प्रमाद के पाँच प्रकार प्रसिद्ध हैं—मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, और विकथा। ये सब चेतना में जड़ता लाते हैं। स्थानाङ्गसूत्र में प्रमाद के छह प्रकार भी निर्दिष्ट हैं—मद्य, निद्रा, विषय, कषाय, द्यूत (जुआँ) और प्रतिलेखन (प्रतिलेखना में प्रमाद)। अभयदेवसूरि की वृत्ति में प्रमाद के आठ प्रकार भी बताये हैं—

पमाओ य मुणिंदेहिं भणिओ अट्टभेयओ।
अण्णाणं संसओ चेव मिच्छानाणं तहेव य।
रागो दोसो मइब्भंसो, धम्मंमि य अणायरो।
जोगाणं दुप्पहीणाणं, अट्टहा वज्जियव्वओ॥

अज्ञान, संशय, मिथ्या-ज्ञान, राग, द्वेष, मतिभ्रंश, धर्म में अनादर और योग दुष्प्रणिधान—ये सभी प्रकार के प्रमाद कर्म-बन्ध के कारण होते हैं।

प्रमाद के आठ प्रकारों में राग एवं द्वेष की गणना होने से प्रमाद को कषाय का भी प्रतिनिधि कहा जा सकता है। प्रमाद में मिथ्याज्ञान एवं मिथ्यात्व का भी ग्रहण हो जाता है। यह प्रमाद किससे उत्पन्न होता है। इसके उत्तर में कहा गया है कि वह योग से उत्पन्न होता

है। इसका तात्पर्य है कि वह योग के माध्यम से प्रकट होता है। 'योग' शब्द का प्रयोग जैनदर्शन में मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति के लिए होता है। इस प्रवृत्ति का संचालन वीर्य से होता है। वीर्य का तात्पर्य है सामर्थ्य या शक्ति। यह वीर्य शरीर से प्रवाहित होता है। फिर प्रश्न किया गया है कि शरीर किससे उत्पन्न होता है? इसके उत्तर में कहा गया है कि शरीर जीव से उत्पन्न होता है। यदि जीव न हो तो हमें मनुष्य आदि के शरीर की प्राप्ति नहीं हो सकती। सिद्ध जीव पूर्णतः मुक्त होते हैं अतः उनके शरीर उत्पन्न नहीं होता, किन्तु जो जीव अष्टविध कर्मों से युक्त हैं उन्हीं के शरीर की उत्पत्ति होती है।

भगवतीसूत्र में यह प्रतिपादन व्यावहारिक दृष्टि से किया गया है। हमें यह सत्य प्रतीति में भी आता है। निश्चयनय के अनुसार तो जीव से शरीर उत्पन्न नहीं हो सकता, क्योंकि निश्चय से जीव सिद्धों के समान शुद्ध है। किन्तु व्यवहारनय में कर्मबद्ध जीव से शरीर उत्पन्न होता है, यह सत्य है। शरीर के होने पर ही वीर्य या सामर्थ्य की अभिव्यक्ति होती है, जिसे करण वीर्य कहा गया है। वीर्य होने के कारण ही भगवतीसूत्र में जीव में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि की सिद्धि की गयी है। वीर्य होने पर ही योग होता है तथा योग होने पर ही प्रमाद होता है। वीर्य का उपयोग जीव के उत्थान में भी होता है तो पतन में भी होता है। यह स्वयं जीव पर निर्भर करता है कि वह उसका उपयोग किस प्रकार करना चाहता है।

SOME PEARLS

Sh. Dinesh Jain 'C.A.'

1. Bird sitting on a tree is not afraid of the branch shaking or breaking, because bird trusts not on the branches, but on its own wings. Always believe in your-self.
2. Never change your originality for the sake of others, because in this world no one can play your role better than you. So be yourself and win the world.
3. Some flowers grow best in the sun, others grow well in shade. Some way we have been where we can grow best. So thanks to every situation.

चारित्रवान बनें

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- संसार में जो दृश्यमान पदार्थ हैं, वे टिकने वाले नहीं हैं। जो उत्पन्न हुआ उसका विनाश सुनिश्चित है, जो बनता है वह एक दिन अवश्य बिगड़ता है। ये इमारतें बनी हैं, कोठियाँ बनी हैं, बंगले बने हैं, किले बने हैं, वे सब कभी न कभी नष्ट होंगे, यह अवश्यम्भावी है। यह वस्तु का स्वभाव है।
- अगर किसी की वाणी में ऊपर से कटुता है, तो वह इतनी बुरी नहीं है, जितनी कि भीतर भरी कटुता। ऊपर वाला बोल देगा और समाधान पाकर शान्त हो जाएगा, पर भीतर की कटुता बड़ी खतरनाक होती है।
- जिसमें श्रद्धा नहीं है, वह ज्ञान का अधिकारी नहीं बन सकेगा।
- ज्ञान के साथ जो तपस्या है वह ऐसी बड़ी-बड़ी शक्तियों को प्रकट कर देती है, जिससे मानव का मन हिल जाता है।
- आग की चिनगारी मनो भर भूसे को जलाने के लिए काफी है, वैसे ही तपस्या की चिनगारी कर्मों को काटने के लिए काफी है।
- मन-शुद्धि और चित्त-शुद्धि करेंगे तो आत्मा में पवित्रता की ताकत आयेगी और कल्याण के भागी बन सकेंगे।
- जीवन चलाना महत्वपूर्ण बात नहीं है, लेकिन महत्वपूर्ण बात है-जीवन बनाना।
- बन्धन संसार है और बन्धन को काटने की प्रक्रिया चारित्र है।
- ज्ञान अपने भीतर भी उजाला करता है और दूसरों के भीतर भी उजाला करता है।
- यदि विषय-कषाय नहीं घटते हैं तो कहना चाहिए कि अब तक हमारे जीवन में चारित्र नहीं है।
- चारित्र उस क्रिया का नाम है जो सञ्चित कर्मों को काटने का काम करती है।
- चारित्रवान कभी भी सामने वाले की गलती नहीं निकालता।
- चरित्र नहीं है तो चारित्र नहीं। चरित्र आने के बाद एक लाइन और बढ़ाते हैं, 'आ' की मात्रा लगाते हैं, तब चारित्र आता है।
- नियम या प्रतिज्ञा करने में गरीब-अमीर का भेद नहीं है।
- चारित्रवान मानव नमक हैं, जो सारे संसार रूपी सब्जी का ज़ायका बदल देते हैं।
- जब कभी भी सोते-जागते, उठते-बैठते हम वीतराग का स्मरण करेंगे, ध्यान करेंगे, चिन्तन करेंगे, तब एक-एक क्षण परम कल्याणकारी होगा, जन-जन के ताप त्रय को दूर करने वाला होगा।
- आस्रव-त्याग के साथ जो तप की आराधना होगी वह दोगुनी ताकत वाली होगी।
- चारित्र के साथ, आस्रव-त्याग के साथ तपस्या की महिमा है।
- सद्गृहस्थों का कर्तव्य प्रतिदिन तप करना है।
- महावीर का जो मुक्ति-मार्ग है, वह त्याग या वीतरागता-प्रधान है।
- यदि महावीर के बताये माफिक ऊनोदरी आदि तप करने लगे तो समझ लीजिए कि लोगों की आधी बीमारी कम हो जाए।

- 'नमो पुरिसवरगंधहृत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

विकार घटाने का साधन है ज्ञान

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा नेहरू पार्क, जोधपुर में 02 सितम्बर, 1994 को सामायिक-स्वाध्याय भवन में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के प्रसंग पर फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व का पावन दिवस उपस्थित है। आज का दिन ज्ञानार्जन के लिए है, पाप विसर्जन के लिए है, इन्द्रियों के दमन के लिए है और कषायों के शमन के लिए है। आज परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में नमन करने का दिन है तो मोक्ष-मार्ग में गमन करने का दिन भी है। आज का दिन जन्म-जन्म तक दुःख देने वाले कर्मों के निकन्दन के लिए है तो भीतर में रहे हुए अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन और अनन्त सुख के फूलों का चमन खिलाने के लिए है।

मंगलमय पर्वाधिराज पर्व बिना किसी विशेष प्रेरणा के जन-जन के मन को आकर्षित कर रहा है। घनघोर घटा उमड़ रही हो तो मोर को नाचने की प्रेरणा नहीं देनी पड़ती, इसी तरह आत्मविकास का आध्यात्मिक पर्व आने पर आबाल-वृद्ध सभी स्वयं होकर आगे बढ़ने के लिए उपस्थित हो रहे हैं। बसन्त के खिलने पर कोयल नहीं बोले तो फिर कोयल और कौवे में क्या अन्तर? आज तो पवन के सहारे हिलने वाले ध्वज की तरह तरंगित होकर लोग पहुँच रहे हैं।

आत्मविकास का पर्व उपस्थित होने पर मानव यदि साधना में चरण नहीं बढ़ाये तो भक्त की भक्ति ही क्या? भक्ति की आराधना करने को आप सब उपस्थित हैं।

आराधना कैसे करनी चाहिए? किसके लिए करनी चाहिए? क्या समझकर करनी चाहिए? इस भेद-ग्रन्थि का विमोचन ज्ञान का प्रकाश करता है। इसीलिये भगवान महावीर द्वारा उपदिष्ट मोक्ष-मार्ग की वाणी में सबसे पहले जिस तत्त्व का नम्बर लिया है वह है-ज्ञान। ज्ञान के विषय में थोड़ी बात सामने रखूँ-

नाणं च दंसणं च चेव, चरित्तं च तवो तथा।

एस मग्गुत्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसीहिं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 28, गाथा 2

मोक्ष-मार्ग में तीर्थङ्कर भगवन्तों ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप को आत्मकल्याण में साधक माना है। उनमें सबसे पहला है-ज्ञान। संसार में, परमार्थ में, लोक-व्यवहार में, लोकोत्तर प्रसंगों में सबसे पहले ज्ञान की बात कही जा रही है। चलना है तो मार्ग की जानकारी चाहिये। खाना है तो पदार्थों का ज्ञान चाहिये। व्यापार करना है तो वस्तुओं का ज्ञान चाहिये। रोग का निदान करना है तो उपचार के पहले रोग क्या है, इसकी जानकारी चाहिये।

प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में ज्ञान को प्रमुखता दी गई है। संसार के करणीय-आचरणीय तत्त्वों में पहला तत्त्व है-ज्ञान। आठ कर्मों में पहला नम्बर है ज्ञानावरणीय कर्म। तीर्थङ्कर भगवान महावीर ने पढमं नाणं तवो दया। पहले ज्ञान, फिर दया या क्रिया की बात कही है।

प्रश्न हो सकता है-इतनी सारी भूमिका का तात्पर्य क्या है? क्यों तीर्थङ्कर भगवन्तों ने हमको-आपको अज्ञानी समझा है? क्या आज तक इतने वर्षों तक साधना की अनेकानेक क्रियाएँ कर लेने के बाद भी हमने ज्ञान का महत्त्व नहीं समझा? आराधना के मार्ग में जिन्होंने घर-बार सब छोड़ दिया, फिर भी क्या वे ज्ञानी नहीं? क्यों भगवान कह रहे हैं-संबुज्झह किं न बुज्झह। बोधकर, ज्ञान प्राप्त कर, बोध क्यों नहीं प्राप्त करता है? कारण है-बोध करना अतिदुर्लभ है। संसार में बहुत कुछ जान लेने के पश्चात् भी जिसे जानना चाहिए उसको

नहीं जानने पर भी जीव अज्ञानी कहलाता है। जिसे यूँ कहा गया है-

ज्ञातं ज्ञातं मया ज्ञातं, घोष्यते ऽनुदिनं त्वया?
किं ज्ञातं यदि न ज्ञातं, आत्मतत्त्वं सुनिर्मलम्॥

जब भी ज्ञान की बात चलती है लोग यह समझते हैं- यह हमारे लिए नहीं, किसी अज्ञानी के लिए है, किसी मूर्ख के लिए है। अनजान के लिए ज्ञान की महिमा बताई जा रही है। हम तो जानने वाले हैं। पर नीति कह रही है-ज्ञातं ज्ञातं...। मैंने समझ लिया, मैं सब जानता हूँ, तुम मुझे क्या समझाते हो, क्या बतलाना चाहते हो? मैं हिन्दी जानता हूँ, गणित जानता हूँ, भाषा-ज्ञान जानता हूँ, कर्तव्य-अकर्तव्य इन सबको जानकर चल रहा हूँ, तुम नया क्या बतलाओगे?

शास्त्र कह रहा है-मानव! तूने बहुत जाना, फिर भी कुछ नहीं जाना। एक जान लिया तो सब कुछ जान लिया। हाँ, ठीक है आपने ज्ञान मिलाया, विज्ञान मिलाया, पर अभी तक जैसा जीवन जीना चाहिये वह नहीं जाना। जिस दिन जान लोगे उस दिन कीचड़ में नहीं बैठोगे। जिस दिन ज्ञान हो जायेगा उस दिन से पाप में प्रवृत्ति नहीं होगी। जिस दिन समझ में आ जायेगा उस दिन अभयकुमार की तरह राजघराना, कुल-वैभव को छोड़कर आत्मसाधना के मार्ग में चल पड़ोगे। हम तो ज्ञान का मात्र अहंकार कर रहे हैं। मैं जानता हूँ यह अहं भीतर घुसा है। वस्तुतः जो जानता है कहता नहीं, वह करता है। जो कहता है और करता नहीं, वह मात्र सिर का बोझ बढ़ाए जा रहा है।

मैं ज्ञान की बात कहने जा रहा हूँ। मगध सम्राट् श्रेणिक घूमने की दृष्टि से बगीचे में आए। वहाँ एक सन्त को देखा। सन्त सुड़ोल आकृति वाला भव्य था। उसे देखकर श्रेणिक के मन में भाव जगा, श्रद्धा हुई और आदरपूर्वक सन्त चरणों में ज्ञान करने की भावना से बैठ गया। सन्त का ध्यान पूर्ण हुआ। मगध सम्राट् ने एक जिज्ञासा रखी-भगवन्! यह अवस्था, ऐसी सुकुमारता और ऐसा शरीर वैभव पाकर भी आप दीक्षित क्यों हुए?

सन्त ने कहा-राजन्! मैं अनाथ था।

राजा ने सोचा-इतना सुकुमाल शरीर अनाथ का नहीं हो सकता। आपकी लावण्य-कान्ति देखकर कोई भी आपको अनाथ नहीं कह सकता, पर आपने फरमाया है तो आप एक कृपा करें मैं आपका नाथ बनने को तैयार हूँ।

राजन्! जो स्वयं अनाथ है, वह दूसरों का क्या नाथ बनेगा?

राजा ने सोचा-मुनिराज को भ्रम है। इन्होंने शायद मेरे को पहचाना नहीं। शायद आपको भी भ्रम है कि महाराज हमें अज्ञानी क्यों बता रहे हैं? क्या महाराज हमको जानते नहीं?

श्रेणिक 'अनाथ' शब्द का अर्थ नहीं जानता था, पर जिस दिन जाना, शास्त्र वर्णन करता है कि वह अपनी मिथ्या मान्यताओं-मिथ्या भ्रमणाओं को छोड़कर सम्यग्दर्शी बन गया। महाराजा श्रेणिक अनाथ शब्द को जानने के साथ सम्यग्दर्शनी बन गये।

परदेशी नहीं जानता था। उसकी मान्यता थी-शरीर और आत्मा में कोई भेद नहीं। जो आत्मा है वह शरीर है और जो शरीर है वही आत्मा है। अगर शरीर और आत्मा अलग-अलग हैं तो मुझे दिखाओ। हाथ में आँवला है वह दिखता है। मैंने आत्मा की परीक्षा के लिए अनेक-अनेक प्रयोग किये। जिनको मौत के फन्दे पर लिटाया जाता है, अगर आत्मा है तो उन्हें दिखनी चाहिए। मैंने चोरों के शरीर के एक-एक हिस्से को काट-काट कर देखा है, पर मुझे कहीं आत्मा दिखाई नहीं दी। अगर आत्मा है तो मेरे दादा-दादी धार्मिक थे, वे मुझे कहने क्यों नहीं आए? अगर पुण्य-पाप का फल होता तो यहाँ से जाने वाला वापस आकर क्यों नहीं कहता? अगर आत्मा है तो वह दिखती क्यों नहीं?

वह नहीं समझा था तब तक नहीं मानता था। आपकी समझ है या नहीं? यदि जान रहे हैं तो आत्मा की खुराक दूसरी है और शरीर की खुराक दूसरी। आप जिस चर्या से चल रहे हैं वह आत्मा की जानकारी की बात सुदृढ़ नहीं करती। जिसने आत्मा को समझ लिया

वह आत्मधर्म की क्रिया करते हुए दिखाई देगा। शरीर की कोई कीमत नहीं है, कोई इज्जत और प्रतिष्ठा नहीं है। यह शरीर आत्मा के सहारे है। आपका सुनना, देखना, बोलना यह सब आत्मतत्त्व के सहारे से है। जिस दिन यह समझ लिया तो सबसे पहले आत्मा को खुराक देना चाहोगे।

दो चीजे हैं। मकान अलग है, मकान का मालिक अलग। दोनों में राजी किसे रखना? परदेशी को जब तक आत्मा का ज्ञान नहीं था, तब तक वह धार्मिक क्रियाओं से दूर था। उसके हाथ खून से रंगे रहते थे। गाजर-मूली की तरह वह आदमी को मारते देर नहीं करता था। जिस दिन समझ में आया, वह बारह व्रतधारी बन गया। आपके समझ में आया या नहीं? आया तो आप कितने व्रतधारी बने? मैं चिन्तन की दृष्टि से आपको पूछता भी जा रहा हूँ।

विरति का फल देने वाला है-ज्ञान। नाणस्स फलं विरतिः। जिसने समझा, उसने त्यागा। जब तक त्याग नहीं होगा तब तक जीवन नहीं बनेगा। बाह्य समझदारी और ज्ञान में अन्तर है। ज्यों-ज्यों समझदारी बढ़ती जाती है त्यों-त्यों भार बढ़ता है। ज्ञान बढ़ता है तो भार हल्का हो सकता है। जिस दिन ज्ञान होगा अनन्तानुबन्धी की चौकड़ी चली जायेगी। आदमी हल्का होगा। जब तक समझ नहीं आती बात नहीं बनती।

शालिभद्र समझ रहा था। उसके पास वैभव की कोई कमी नहीं थी। सूर्य किधर उगता है, किधर अस्त होता है उसे पता नहीं। घर का खर्चा कैसे चलता है, किस चीज की क्या कीमत है, पता नहीं। कभी माँ ने आवाज लगाई-बेटा! नीचे आ, नाथ आया है। अब तक भी मेरा कोई नाथ है? मैं इतनी ऋद्धि-भोग-सामग्री प्राप्त कर अनाथ हूँ। जिस दिन समझ में आ गया, क्या क्रिया? उसकी पुण्यशालिता देखिये, प्रतिदिन आवश्यकता की सब वस्तुएँ देवलोक से आ रही हैं। इतना सुख-सौभाग्य। आप तो क्या, कोई राजा भी रोज नए कपड़े पहने, यह सम्भव नहीं। वह भी कपड़े धुलवाता होगा। पर शालिभद्र ऐसा भाग्यशाली है कि आज जो कपड़ा पहना, दोबारा

पहनने में आया ही नहीं। इतना सौभाग्य होने पर भी जब समझ में आ गया तो ठोकर मार दी। जिस दिन समझ में आया उसी रात चिन्तन चला कि मेरे भी कोई नाथ हैं। उसने एक-एक कर छोड़ना चालू किया। कब? जब समझ में आया तब?

ज्ञान और विज्ञान दो शब्द हैं। प्राचीन साहित्य में इनके अर्थ के बारे में कहा गया है-

मोक्षे धीःज्ञानं विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः।

जितनी कलाएँ हैं, शिक्षाएँ हैं, जानकारियाँ हैं, समझ हैं वे सब विज्ञान हैं, विशेष ज्ञान हैं। जिसकी आत्मा में परमात्मा बनने की बुद्धि है, व्रतों में-महाव्रतों में-चारित्र में गमन करने की बुद्धि है, वह ज्ञान है। ज्ञान मोक्ष का हेतु है और विज्ञान संसार की विद्याओं का द्योतक है।

हमें वही ज्ञान मिलाना है। हम उस ज्ञान की बात कर रहे हैं जो इन्द्रियों से, मन से, बाहर से होने के बजाय भीतर से होता है, आवरण हटने पर होता है। ज्ञान आत्मा का गुण है। इसी ज्ञान की बात पर्युषण के दिनों में करने की है। एक कड़ी के माध्यम से कहूँ-

**पयुर्षण आया, प्रेरणा ये लाया,
ज्योतियाँ जगाओ रे, वीर गुण गाओ रे।**

**अज्ञान-अन्धेरा हटा लो,
आलोक ज्ञान का पा जाओ,
पाप को घटाओ रे।।**

कवि ने प्रेरणा की। ज्ञान किसे कहना? पढ़ाई की दृष्टि से जवाहरलाल नेहरू भी पढ़े हुए थे, जिन्ना भी पढ़े हुए थे, गाँधीजी को भी लोग ज्ञानवान कहते थे तो गोडसे भी मूर्ख नहीं था। पढ़ा कृष्ण भी था तो पढ़ा कंस भी था। शायद सीता से ज्यादा सूर्पणखा पढ़ी थी। जो विद्याएँ-कलाएँ-ज्ञान सूर्पणखा के पास था वह सीता के पास शायद नहीं था। आप याद किसको करते हैं? वन्दनीय कौन? राम को लोग याद करते हैं या रावण को? मैं नहीं कह रहा हूँ, तुलसीदास कहते हैं-

काम-क्रोध-मद-लोभ की, जब लग घट में खान।

तुलसी पण्डित मूर्खा, दोनों एक समान।।

जब तक हम हम स्वार्थी बनकर हिंसा कर रहे हैं, झूठ बोल रहे हैं, लड़ाई-झगड़े कर रहे हैं, टाँग खिंचाई कर रहे हैं, पद-प्रतिष्ठा के लिए मर रहे हैं, तब तक हम पढ़े-लिखे नहीं हो सकते। ज्ञानी नहीं कहला सकते।

शास्त्र की भाषा में ज्ञानी तभी कहा जाता है जब हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने की बुद्धि है। छोड़ने योग्य छोड़ा क्या? ग्रहण करने योग्य ग्रहण किया क्या?

मैं साहित्य-इतिहास की छोटी सी बात सामने रखूँ-दशपुर जिसे मन्दसौर कहा जाता है, का एक लाड़ला सोमदेव का पुत्र सूद्रसोमा। धर्मपत्नी का आत्मज रक्षित। ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के कारण पिता ने उसे विद्याध्ययन के लिए पाटलिपुत्र भेजा। बड़े मनोयोग से, तत्परता से, ऐश-आराम छोड़ विद्याध्ययन में लगा। नीति का कथन है-

सुखार्थी चेत् त्यजेद् विद्यां।

विद्यार्थी चेत् त्यजेद् सुखं।।

जो आदमी आराम, खेलना, कूदना, नाचना चाहता है वह विद्याध्ययन नहीं कर सकता। जिसे सुख चाहिये वह अध्ययन छोड़ दे और जिसे पढ़ना है वह सुख छोड़, दे ऐसा नीति कहती है। एक म्यान में दो तलवार नहीं रहती। सुख और विद्या साथ-साथ नहीं रहेंगे। वह मनोयोग पूर्वक पढ़ा और चौदह विद्याओं का निधान बना।

उसके घर लौटने की सूचना हुई। राजा को भी सूचना मिलती है कि मेरे नगर का एक रत्न (लड़का) विद्या में पारंगत बनकर आ रहा है। धनवान को बधाई देने वाले कई मिलेंगे। रूपवान् को पदक देने वाले मिल जायेंगे। विद्याध्ययन कर के आने पर उसकी गाँव-गाँव ख्याति हो, इस दृष्टि से राजा स्वयं हाथी के हौदे पर बैठकर स्वागत-सत्कार में जा रहा हो ऐसा प्रायः कम होता है। नगर के श्रेष्ठजनों ने स्वागत-सत्कार किया और वह अपने घर आया।

घर आकर माँ के चरणों में निवेदन किया-मातुश्री, आज सब लोग आए; पिता थे, भाई और पड़ौसी ही नहीं, राजा तक सभी उपस्थित थे, पर आप कहीं दिखाई नहीं दी, इसीलिए मेरे को सूना-सूना लगा। बेटा घर आया, उस समय माँ सामायिक कर रही थी। मैं पर्युषण की बात नहीं कर रहा। यहाँ आकर भी कई खुले बैठ जाते हैं, पर उस माँ को धर्म का महत्त्व ध्यान में था। ऐसी विरली माताएँ होती हैं जो अपने बच्चे के आगमन पर और वह भी विद्वान् बनकर आ रहा है, राजा स्वागत में खड़ा है, नगर के सभी प्रतिष्ठित लोग सत्कार करना चाहते हैं, इस स्थिति में माँ का नहीं आना और घर पर रहकर मोह से दूर रहना सचमुच माँ के लिए कठिन होता है।

सामायिक पूर्ण हुई तो लड़के (आर्य रक्षित) ने माँ को प्रणाम किया, लेकिन माँ ने मुँह फेर लिया। लड़के ने सोचा-इससे बढ़कर और तिरस्कार क्या हो सकता है? आज बच्चों का ऐसा अपमान हो तो शायद वे कभी माँ का मुँह तक नहीं देखे, लेकिन उसमें स्नेह था, कर्तव्यशीलता थी, अन्तरंग प्रेम था।

आज कई माँ-बाप भी ऐसे मिल सकते हैं जो लड़के के नमस्कार करने पर मुँह फेर लें। पर वह पुत्र, पुत्र था। उसने सोचा-दुनिया में माँ से बढ़कर कोई नहीं हो सकता। उसने माँ से पूछा-माँ! क्या बात है? आप मेरे पर प्रसन्न नहीं, मेरी क्या गलती हुई, बताइये। ऐसा पूछने वाले भी विरले मिलेंगे।

मैं पढ़े-लिखे लड़कों की बात कहूँ। एक बात मन के विपरीत हो गई तो वे सामने भले ही माँ ही क्यों न हो, जान लेने को तैयार हो जाते हैं। मैंने कभी एक अखबार में पढ़ा था-दाल में बाल पत्नी का काल। खाते-खाते एक भाई के दाल में बाल आ गया। गुस्से में उसने थाली फेंकी। थाली की तीखी किनारी पत्नी के कण्ठ पर जाकर लगी और नस कट जाने से पत्नी की कुछ देर में मृत्यु हो गई। उस पढ़े-लिखे को क्या कहें? क्या वह जानकार है? अगर उसे जानकार कहें तो फिर अज्ञानी कौन

होगा? दाल में बाल सहन नहीं कर सका, वह ज्ञानी हो ही नहीं सकता।

जब तक मन में क्रोध-लोभ की खान है तब तक किसी का अपशब्द भी खटकता है और जब हमारे कषाय घटते हैं तो समझना चाहिये कि हमने ज्ञान में चरण रखा है। आज व्यक्ति-व्यक्ति में अहंकार सातवें आसमान चढ़ रहा है। अहंकार की वजह से भाई-भाई में झगड़ा है, बाप-बेटे में मनमुटाव है। अगर ज्ञान प्राप्त करके क्रोध कम नहीं हुआ, कषाय ज्यों के त्यों है, लालसाएँ समाप्त नहीं हुई तो कहना होगा उसका ज्ञान, ज्ञान नहीं। आप जरा अपने-आपका चिन्तन तो करें। ज्ञान प्राप्त करके भी आप हमेशा बुराई करते हैं, ठगते हैं, कपटाई करते हैं, तो उस ज्ञान का क्या अर्थ?

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतद् ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय।।

विद्या प्राप्त करके जो वाद-विवाद कर रहा है, झगड़ा कर रहा है तो समझना चाहिये वह पोथी का पण्डित है। धन प्राप्त करके जो अहंकार करता है तो वह दुष्टवृत्ति वाला है। शक्तिवान् होकर यदि कमजोर लोगों को सताता है तो वह शक्तिवान् नहीं बल्कि बुझदिल है।

मैं उस माँ और बच्चे के प्रसंग को लेकर कह रहा था कि चौदह साल अध्ययन करने के बाद भी माता प्रसन्न नहीं। एक दृष्टान्त पढ़ा। एक बाप के दो बेटे थे। दोनों पढ़े-लिखे। एक डॉक्टर तो दूसरा वकील। दो-दो समर्थ बेटों के बाप की रोनी सूरत है। एक व्यक्ति जो मिलने वाला था वहाँ पहुँचा तो बाप रोने लगा। पूछा-क्या तकलीफ है? बोला-मेरे दो लड़के हैं, दोनों ने अच्छा नाम किया है, वे समर्थ हैं, बस यही तकलीफ है। कल मैं जा रहा था रास्ते में एकसीडेन्ट हो गया, कुछ चोट लगी। एक कहता है-पिताजी, रोग और दुश्मन को बढ़ने नहीं देना चाहिए, इसलिए जल्दी से उपचार करा लें तो पैर ठीक हो जायेगा। दूसरा कहता है-इलाज मत कराना। पैर खराब हो जायेगा तो मैं मुकदमा करूँगा, किसने चोट लगाई। ऐसी पढ़ाई किसलिए? पढ़ाई का सार क्या?

इलाज कराऊँ तो एक नाराज और इलाज नहीं कराऊँ तो दूसरा नाराज। मैं पढ़े-लिखे की बात कह रहा हूँ।

माँ ने कहा-बेटे! तेरी पढ़ाई पर मैं खुश नहीं हूँ। बेटे ने कहा-मातुश्री! मुझे क्या करना चाहिए?

माता-बेटे! गाँव के बाहर बगीचे में तोसलीपुत्र आचार्य पधारे हुए हैं वे तुम्हें आत्मज्ञान करा सकते हैं। तू उनसे दृष्टिवाद का ज्ञान सीख। उनसे ज्ञान सीखकर आयेगा तो मुझे सच्ची शान्ति मिलेगी।

बेटा विनयवान था। वह सारे कार्यक्रम कैन्सिल कर आचार्य भगवन्त के चरणों में पहुँचा। वह नहीं जानता था कि सन्तों के चरणों में कैसे जाया जाता है। वह बाहर खड़ा रहा। इतने में एक श्रावक जी आये। दरवाजे में प्रवेश के साथ निस्सहि...निस्सहि किया। उसने समझा यह प्रवेश की विधि है।

निस्सहि क्या? मैं मन से, वाणी से, काया से पाप की प्रवृत्तियों को दरवाजे पर छोड़कर आ रहा हूँ। अब मैं मन, वचन, काया से आत्मज्ञान की बात करूँगा। उसने भी श्रावक के कथनानुसार निस्सहि-निस्सहि कहकर प्रवेश किया और वन्दन करने लगा।

नव-आगन्तुक को देखकर आचार्य श्री ने पूछा-कहो, भाई!

वह बोला-गुरुदेव! मुझे आपसे दृष्टिवाद का ज्ञान सीखना है। तोसलीपुत्र आचार्य ने कहा-दृष्टिवाद का ज्ञान उसे दिया जाता है जो साधु बनता है। उसने कहा-“गुरुदेव! आप मुझे साधु बनायें या गृहस्थ रखें, मुझे दृष्टिवाद का ज्ञान करना है।”

साधु बना। ग्यारह अङ्ग का ज्ञान किया। आचार्य वज्र के पास दस पूर्व का ज्ञान लेने रवाना होता है। नौ पूर्व का ज्ञान सीखते-सीखते माँ को बेटे की याद आई। माँ ने दूसरे बेटे से कहा-‘जा, भाई को बुलाकर ला!’

भाई ने कहा-‘भय्या! माँ याद कर रही है।’

क्यों? उन्होंने दृष्टिवाद सीखने को कहा था। अभी समय है, रुक! मैं फिर चलूँगा।

भाई ने कहा-‘मैं यहाँ बैठे-बैठे क्या करूँ?’

तो कहा- 'तू बैठा मत रह, तू भी साधु बन जा।' इतिहास वर्णन करता है फलगुरक्षित भाई के कहने से साधु बन गया।

एक दिन आचार्य श्री के चरणों में पूछा-अब कितना ज्ञान बाकी है? मैं माता-पिता का कर्जा चुकाने के लिए एक बार गाँव जाना चाहता हूँ। आचार्य श्री ने उपयोग लगाया और कहा-जो तुम्हें उचित लगे करो।

लड़का घर पहुँचा। एक उपदेश में माँ को वैराग्य हो गया। मैं ज्ञान की बात कर रहा हूँ-ज्ञान कैसा हो? ज्ञान की आँख आचार है। हमें सब बातें याद आती हैं, ज्ञान की बात याद नहीं आती। ज्ञान का पहला आचार है

खाने के समय खाना, सोने के समय सोना, इसी तरह ज्ञान के समय ज्ञान की बात याद आती है।

ज्ञान के आठ आचार हैं। ज्ञान कषाय और पाप को घटाने वाला है। अगर सुनते-सुनते आपके विकार घट रहे हैं तो मार्ग पर हैं, यदि विपरीतता आ रही है तो समझिये ज्ञान और ज्ञानियों के साथ धोखा कर रहे हैं। आप स्वयं विचार कीजिये खुद ज्ञान के मार्ग में कदम बढ़ाइये। ज्ञान करेंगे तो पाप घटेंगे और जितने-जितने पाप घटेंगे उतनी-उतनी मात्रा में मोक्ष-मार्ग की ओर आपकी गति बढ़ेगी।

मैं कोरोना हूँ... क्यों आया हूँ?

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

युगों-युगों तक याद रहे,

उस क्रान्ति की शुरुआत करूँगा,

मैं कोरोना हूँ..माँ प्रकृति का रक्षण करने आया हूँ।

प्रकृति पर जो प्रहार करे उसका मैं प्रतिकार करूँगा,
शोषणकर्ता अपराधी को सबक सिखाने आया हूँ।

निर्दोष मूक पशु-पक्षियों के जीने का अधिकार बनूँगा,
हर पल धधकती हिंसा की आग बुझाने आया हूँ।

शैतानों के भ्रष्टाचार का मैं ही पर्दाफाश करूँगा,
अस्पतालों की सरकारों की पोल खोलने आया हूँ।

आडम्बर के ठेकेदारों के अहंकार का नाश करूँगा,
भ्रम में जीते हर मानव को सत्य दिखाने आया हूँ।

इच्छाओं की विषबेल को जड़ से मैं समाप्त करूँगा,
सन्तोषी को मिले शान्ति यह अहसास कराने आया हूँ।

ना करना मुझसे राग द्वेष
मैं कर्तव्य का निर्वाह करूँगा,
कर्म नियति आदि की आज्ञा से,
परिवर्तन करने आया हूँ।

सरल सहज और संयम प्रेमी,
सबका मैं सम्मान करूँगा,
सात्त्विक शुद्ध जीवनशैली के,
सर्वलाभ बताने आया हूँ।

जिनके धर्म से धरती अविचल,
उनका गुणगान करूँगा,
ज्ञानी गुणीजनों को वन्दन,
अभिनन्दन करने आया हूँ।

धर्म बढ़े तो पाप घटेगा ऐसा मैं सत्पुरुषार्थ करूँगा,
धर्मचक्र से दुनिया को पावन तीर्थ बनाने आया हूँ।
मैं कोरोना हूँ ..माँ प्रकृति का रक्षण करने आया हूँ।

-जिनशासन, बी-102, वीतराज सिटी, जैसलमेर
बाईपास रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

सन्तों के रक्षक हैं श्रावक

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा.

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. द्वारा लक्ष्मी नगर, जोधपुर में 19 जून, 2006 को फरमाये गये इस प्रवचन का आशुलेखन एक श्रद्धालु श्रावक के द्वारा किया गया है। श्री गौतमचन्द्रजी जैन (डी.एस.ओ.) ने संशोधन में सहयोग किया है।

-सम्पादक

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

धर्म और व्यवहार को लेकर बात चल रही थी। धर्म और व्यवहार मिलकर चलते हैं तो प्रशस्त कहे जाते हैं। दोनों अलग-अलग होकर चलते हैं तो व्यवहार में दोष के कारण धर्म बदनाम होता है। धर्मगुरु भी बदनाम होते हैं। यह बात कल भी श्रावकों को कही कि आपने सन्तान को किस तरह के संस्कार दिये? ऐसे संस्कार दें जिससे धर्म के प्रति प्रवृत्ति बढ़े, धर्म के प्रति भावना बढ़े। जिस तरह श्रावक को अपनी सन्तान के प्रति भोलावण दी जाती है उसी तरह भगवान महावीर स्वामी ने श्रावक-श्राविका को अम्मा-पियरो कहकर सन्त-सतियों के प्रति भोलावण दी है।

सन्त और सती किस तरह से अपने नियमों का, उपनियमों का, सिद्धान्तों का, समाचारी का, व्रतों का पालन कर सकें, ऐसा सहयोग श्रावकों को हर समय देते रहना चाहिये। उचित सहयोग दीजिये, अनुचित सहयोग मत दीजिये। चतुर्विध संघ मिला-जुला संघ है। साधु और श्रावक दोनों जुड़ें। अकेला सन्त भी बिना श्रावकों के अपना व्यवहार ठीक ढंग से नहीं निभा पाता। दोनों एक-दूसरे के उपकारी हैं। आप हमारे शरीर की रक्षा करते हुये और आहार-पानी देकर, वस्त्र-पात्र आदि देकर उपकार करते हैं, तो सन्त भी आपको सांसारिक मार्ग से उठाकर अध्यात्म से जोड़ते हैं। दोनों एक-दूसरे के उपकारी हैं। परस्पर एक-दूसरे के उपग्रह-विभाग हैं।

जीव ही नहीं अजीव भी जीव के उपकारी हुये हैं। आप घर से यहाँ तक चलकर आये तो किसके सहयोग

से चलकर आये? आप पाँव या वाहन की बात करेंगे और मैं धर्म की बात करता हूँ। आप आये धर्मास्तिकाय की सहायता से। जीव चलता है अपनी आत्मशक्ति के कारण से, शारीरिक शक्ति के कारण से, परन्तु धर्मास्तिकाय सहयोगी नहीं हो तो आप गति नहीं कर सकते।

आकाश जीव, अजीव आदि पदार्थों को स्थान देता है। आप बैठे हैं तो कहाँ बैठे हैं? आकाश में बैठे हैं, तो आपका आकाश तो ऊपर है, किन्तु यह जो खाली जगह है, वहाँ पर भी आकाश रहा हुआ है तथा काल जीव और पुद्गल इन दोनों में परिवर्तन करने का काम करता है। जीव के लिए पुद्गल भी सहयोगी है। आहार-पानी का सेवन पुद्गल का सेवन है। व्यक्ति पुद्गल से अपना जीवन चलाता है। जीव भी जीव का उपकारी होता है। आप लोग सहायक बनते हैं तो घर चलता है। पिता पुत्र के उपकारी हैं तो पुत्र-पिता का उपकारी है। जहाँ कहीं देखिये वे एक-दूसरे के उपकारी हैं। गुरु शिष्य के लिए, शिष्य गुरु के लिए समय-समय पर उपकार करता रहता है। इसी तरह से साधु आपके लिये उपकारी है। आप साधु के लिए उपकारी हैं। उपकारी होना तो आवश्यक है। बिना सहयोग से किसी की गाड़ी नहीं चलती। भले अहंकारवश सन्त कह दें मुझे तो श्रावकों की जरूरत नहीं। उस सन्त को अगर कहें कि कितने चातुर्मास किये बिना श्रावकों के? तो उत्तर नहीं मिलेगा। श्रावक सन्तों के संयम में सहायक होते हैं, उपकारी होते हैं। श्रावक समझते हैं कि सन्तों का जीवन कैसा, उनमें

किस तरह के आचार-विचार होते हैं, किस तरह का सन्तों का व्यवहार होता है। इन सब बातों का श्रावक जानकार होता है। अगर जानकारी नहीं हो तो व्यवहार बराबर निभा नहीं सकते। जानकारी नहीं है तो अनुचित सहयोग करने के लिए तैयार हो जाते हैं। श्रावक यदि हर साधु को अच्छा समझता रहेगा तथा शिथिलता में सहयोग करेगा तो साध्वाचार सुरक्षित नहीं रहेगा। अजैन व्यक्ति आचार-विचार को समझता नहीं। उसमें भक्ति तो है, परन्तु संयम की प्रेरणा नहीं है। कुछ सम्प्रदाय अजैन लोगों के कारण बढ़ गयी। यहाँ तक कि सन्त कुछ दान देने की बात कह दें तो पैसा नहीं होने पर गहने उतार कर डाल देते हैं। वे इसके जानकार नहीं हैं। यह अभी उनकी अज्ञान अवस्था है।

कुछ श्रावक जानकार हैं, परन्तु मोह बन्धन के कारण से, लाभ के कारण से, प्रलोभन के कारण से कुछ कहने में समर्थ नहीं हैं। अगर सन्त गलत रास्ते चल रहा है, तो उसको सही रास्ता बताने में कोई कोताही नहीं बरतें।

श्रावक ईमानदारी से कहने में हिचकिचाते हैं। वे सोचते हैं कि अगर हम कह देंगे तो महाराज नाराज हो जायेंगे। यह आस्था बनी रहती है कि महाराज राजी हैं तो अपने को अच्छा आशीर्वाद मिलेगा। हर किसी को डर रहता है, भावना रहती है कहीं महाराज रूठ न जायें। भगवान को डर रहता है कि कहीं भक्त की आस्था हट न जाय। महाराज से श्रावक को यही डर रहता है, नाराज हो गये तो, कहीं उल्टा-सुल्टा बोल जायेंगे। डर रहता है, तो कुछ प्रलोभन भी रहता है। महाराज को राजी करने के लिए कोशिश रहती है।

एक अच्छे श्रावक थे। उनको महाराज के आचार-विचार में कमी लगी। शाम के समय 50 आदमी बैठे थे, निवेदन करने के लिए खड़ा हुआ और निवेदन किया, बाबजी! आपकी यह बात ठीक नहीं लगी, तो अधिकांश श्रावक उस श्रावक का साथ नहीं देंगे जो सच्चा है, ईमानदारी से कह रहा है, पर अधिकांश

आदमी उसका साथ न देकर महाराज का साथ देंगे। हर वक्त डर रहता है, कहीं महाराज रूठ न जाय। महाराज भी सोचते हैं भक्त की कहीं भक्ति-आस्था हट न जाय, अतः सच्चा उपदेश देने में घबराते हैं। परन्तु जो सच्चे सन्त होते हैं वे नाराजगी की परवाह नहीं करते, वे तो श्रावक के हित के लिए कहते हैं। वे तो खरा कहते हैं, परन्तु खारा नहीं कहते। श्रावक समझ रहे हैं, महाराज जो कह रहे हैं वह उनके हित के लिए कह रहे हैं। आज सामायिक के लिए कह रहे हैं, पौषध के लिए प्रेरणा कर रहे हैं। आज दया के लिए प्रेरणा, आज ब्रह्मचर्य के लिए प्रेरणा कर रहे हैं। वे अपना हित समझते हैं। हित समझने वाले कभी नाराज नहीं होते। खरे होते हैं, परन्तु खारे नहीं होते। कुछ ऐसे भी हैं जो खरे के साथ खारे भी हो जाते हैं। परन्तु यह सन्त को शोभा नहीं देता।

शाम को आप दुकान से जाते हो तो ताला लगाकर जाते हो। कभी ताला खुला रह जाता है तो आपके घर आकर कोई कहे कि दुकान का ताला खुला पड़ा है और आपको दस गालियाँ देवे तो भी आपको बुरा नहीं लगेगा, क्योंकि वह आपके हित की बात कह रहा है। अगर हित की बात कहे और नाराज होवे तो कोई बात नहीं। आज नाराज हैं तो कल अपने-आप सही लगेगा। इसी प्रकार सन्तों के हितकारी वचन अभी भले ही कटु लगें, किन्तु समय आने पर वे ही अमृत की भाँति लगेंगे। ज्ञान आयेगा तब कहेंगे ये तो गुरुदेव के वचन का फल है। ये सब गुरु का उपकार है। क्योंकि उन्होंने उसके हित की बात कही थी। सन्तों का, श्रावकों के प्रति हित रहा हुआ है। श्रावक कभी इस प्रकार से हित में कमजोरी पाल लेते हैं, यह सुझ श्रावक का काम नहीं है।

आप लोगों के बिना सन्त गिरावट के रास्ते जाते ही नहीं, क्योंकि उसमें सहयोग आपका रहता है। चाहे पैसे का सहयोग हो, चाहे आहार-पानी का सहयोग हो। आप ही सहयोग देने वाले हैं। ऊपर उठाने वाले भी आप हो।

मैं यही बात कह रहा था। आखिर सबको डर

रहता है, भगवान को डर रहता है कहीं भक्ति-आस्था टूट न जाय। मुझे डर है कि भक्त और भगवान के बीच चलने वाले सिद्धान्तों तथा सत्य का रास्ता छूट न जाए। बिना कड़वी दवाई के रोग जाता नहीं। रोग को नष्ट करने के लिए कड़वी दवाई लेनी पड़ेगी। कभी गलत रास्ता चुने हुये को कड़ाई से कहना पड़ता है। सन्त सुधार के लिए कहते हैं। उसको रास्ते पर लाने के लिए कहते हैं। धर्म-ध्यान की प्रेरणा कराते हैं उसके आत्म हित के लिए, उसमें सन्तों का कुछ भी स्वार्थ नहीं है। परमार्थ है तो सन्तों का नहीं है। ये सब श्रावक के हैं। अगर श्रावक नाराज हो जायेगा तो क्या करेगा, कुछ नहीं करेगा। कौनसा एक श्रावक के ऊपर आश्रित बैठे हैं। एक पर आश्रित नहीं हैं। सन्तों के लिए सब घर खुले हैं। जहाँ श्रावक नहीं, वहाँ पर भी सन्तों को आहार-पानी मिलता है। सन्तों का त्याग देखकर, सन्तों का जीवन देखकर लोग जुड़ते हैं। अब तो गाँवों में भी लोग जानने लगे हैं। गाँव में शिक्षा के कारण, कुछ परिचय के कारण से, संस्कारों के कारण, उनमें सन्तों के प्रति भावना आ गई है।

कभी-कभी सम्प्रदाय का जोर होता है उसके कारण सन्त कैसे भी हों लोग बचाव करते हैं कि हमारे महाराज हैं, कुछ भी करें करने दो। पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी कहते थे-सच्चा सो मेरा, मेरा सो सच्चा नहीं। यह सुधार का मार्ग है इसमें गफलत ठीक नहीं। कभी श्रावक कहने के लिए तैयार होते हैं, चेताने के लिए तैयार होते हैं, किन्तु जहाँ आत्मार्थीपना नहीं वहाँ कहने का कोई मतलब नहीं। एक श्रावक आगरा स्थानक में आया, वहाँ पर दीवारों पर सुन्दर चित्रकारी थी, वह देखने लगा, देखने के बाद एक सन्त वहाँ आये और कहा-श्रावक जी यहाँ क्या देखते हो, ऊपर देखो सुन्दर काम किया गया है। फूल-पत्ती बनाई हुई है। जगह-जगह देखिये। श्रावक जानकार था, होशियार था। देखकर वापस नीचे आया और श्रावक जी ने हाथ जोड़कर सन्त से पूछा-आपने देखा, मैंने भी देखा, परन्तु

देखने से हमको क्या लाभ हुआ? सन्त समझदार था। 25 क्रियाओं का जानकार था। श्रावक को 9 तत्त्व और 25 क्रियाओं का जानकार होना चाहिये। आपने देखा, मैंने भी देखा लाभ क्या हुआ? उसी समय सन्त चेत गये। कुछ जानकार थे, आत्मार्थीपन था। उसी समय श्रावक जी के सामने कान पकड़कर प्रतिज्ञा कर ली। आज के बाद मैं ऐसा काम नहीं करूँगा। अगर थोड़ा बहुत जानकार हो तो रास्ता उसी समय मिल जाता है।

जोधपुर में सन्तों ने चौमासा किया। छोटे सन्त भी थे, बड़े सन्त भी थे, क्योंकि उस समय बड़े श्रावक छोटे सन्तों की सेवा और बच्चे बड़े सन्तों की सेवा करते थे। एक दिन छोटे सन्त को मीठा खाने की मन में आ गई। वे पुंगल पाड़े में पहुँच गये। मिठाई की दुकान देखकर रुक गये। उसके सामने ही तीन चक्कर काटे, तो एक श्रावक ने सोचा-आज महाराज के मन में मिठाई की आ गई है। श्रावक जी ने हलवाई से कहा कि महाराज घूम रहे हैं जो भी लेना है दे देवें। हलवाई बोला-अन्नदाता कृपा करें। सन्त ने दो-चार नग ले लिये और रवाना हो गये। श्रावक जी ने दुकानदार से पैसे के लिए पूछा। दुकानदार ने कहा-किस बात के पैसे 'थारे सन्त हैं तो म्हारे भी हैं।' शाम को श्रावकजी बड़े महाराज के पास गये, उनसे आज्ञा माँगी कि छोटे सन्तों की सेवा करनी है। बैठकर शास्त्र की कई बातें पूछी। अन्त में पूछा-मीठा की इच्छा टूटी कि नहीं? इतने में सन्त समझ गये। श्रावक जी ने मुझे मिठाई लेते देख लिया। श्रावकजी बोले-इस तरह से बाजार में मिठाई लेते रहोगे तो पतन हो जायेगा। श्रावकों की श्रद्धा समाप्त हो जायेगी। छोटे सन्त वहाँ से उठे, बड़े सन्त के पास गये और पाँच विगय का त्याग जीवन भर के लिए कर लिया। श्रावक जी बोले-मैंने अन्तराय दिखा दी, मैं भी आज से मिठाई जीवन भर के लिए छोड़ता हूँ। कभी अगर श्रावक समझाने वाले होते हैं तो समझ जाते हैं। दूसरे विचारों वाला है तो बात अलग है, सन्तों का सहायक बन जाता है।

(शेषांश पृष्ठ 71 पर)

जीवन का मूल्य सच्चरित्र से है

महान् अध्यक्षसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

महान् अध्यक्षसायी सरस व्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा निमाज, जिला-पाली (राज.) में 01 सितम्बर, 2016 को फरमाये गये इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व अनादिकाल से मोह निद्रा में सुषुप्त जीव को मोह-माया से मोचन का अवसर प्रदान करता है। यह विषय-वासना के विसर्जन का पर्व है तो आत्मगुणों के आकलन का पर्व है। पर्युषण पर्व आत्म-ज्योति को जाग्रत करने वाला है।

पर्युषण आया, प्रेरणा यह लाया,

ज्योतियाँ जगाओ रे।

पर्व मनाओ रे।।

आत्मबल प्रकटाइये, पावन पर्व मनाइये,

जिन पथ आओ रे।

पर्व मनाओ रे।।

पर्व प्रतिवर्ष आते, जागरण सन्देश लाते,

निन्दिया उड़ावो रे।

पर्व मनाओ रे।।

पर्युषण पर्व आत्मज्योति को जाग्रत करने का पर्व है, नीन्द उड़ाने का पर्व है। पर्युषण पर्व का आज तीसरा दिवस है। ज्ञान के प्रकाश, श्रद्धा की श्वास के साथ आज चारित्र में चरण बढ़ाने का दिन है। चरित्र चारु होगा तो चारित्र भी ज्येष्ठ और श्रेष्ठ होने वाला है। चरित्र अच्छा नहीं तो चारित्र का भव्य भवन खड़ा होने वाला नहीं है।

आज चारित्र-दिवस है। इसमें प्रवेश करने के पहले आचार-विचार-व्यवहार को चारु बना लो, जिससे उत्तम चरित्र पर चारित्र की नींव पड़े। जैन

बनने के पहले मैन बनना आवश्यक है। सन्त बनने के लिए पहले शान्त बनना जरूरी है। चरित्र को चारु बना लेंगे तो ही चारित्र का मूल्याङ्कन हो सकेगा। पद और प्रतिष्ठा चरित्र से मिलती है। अनुभवियों ने कहा-“चरित्र मानव जीवन का पाणी है, आब है, शोभा है।” आसमान की शोभा कहने-सुनने से नहीं, सितारों से होती है। देश की शोभा गद्दारों से नहीं, वफ़ादारों से होती है।

आजकल ज्ञान का स्थान विज्ञान ने और दर्शन का स्थान दूरदर्शन ने ले लिया है। एक आदमी की आँखों पर गोल्डन फ्रेम का चश्मा है, हाथ में घड़ी है, ब्रासलेट है, गले में चैन है, कानों में लूंग है, अँगुलियों में अँगूठियाँ हैं, कपड़े सुन्दर हैं तो क्या इनसे आपका चरित्र अच्छा हो जाएगा? चरित्र स्वभाव से अच्छा होता है। मानव की शोभा चरित्र से है। आपकी सूरत और सीरत दोनों अच्छी होनी चाहिए। नहीं तो लोग कह देंगे-रूप रूढ़ा गुण बायरा, रोहिड़ा रो फूल। सूरत अच्छी है और सीरत अच्छी नहीं तो उसका कोई मोल नहीं है।

चरित्र को मानव-जीवन की आब कहा जा रही है। यहाँ हीरे-जवाहरात के जौहरी बैठे हैं। वे जानते हैं कि मोती का मूल्याङ्कन पानी से होता है। नीतिकारों ने कहा है-पानी गए न उबरे, मोती मानस चून। पानी यानी इज्जत। चारित्र यानी आचरण।

मोती में पानी है तो उसकी कीमत है। चूना है और पानी नहीं तो चूना भरा हुआ होगा। आदमी का शरीर है, द्रव्य प्राण है किन्तु जीव? जीव अजर है,

अमर है। मरता तो यह शरीर है। आदमी का यदि चरित्र ठीक नहीं तो वह चाहे जितना होशियार क्यों न हो उसका कोई मूल्य नहीं है।

मतिमान हुए दुतिमान हुए.....।

.....॥

कहा जा रहा है-आपने गुरु-चरणों में रहकर मिलाया है। मति वाले हैं तो बुद्धिमान कहलायेंगे। आपको इतिहास का ज्ञान है, भूगोल जानते हैं, कविता करना आता है, आप आशुकवि हैं। सब हैं, किन्तु यदि चारित्र अच्छा नहीं तो वह विद्या-वह ज्ञान ठगने का साधन तो है, जीवन-निर्माण का साधन नहीं।

झूठ से जीवन नहीं चलता, जीवन सत्य से चलता है। लोगों के मुँह से प्रायः यही निकलता है कि संसार में बैठे हैं झूठ के बिना काम नहीं चलता। व्यापार में हो या अन्य किसी काम में और यहाँ तक कि घर के कामों में भी झूठ बोलना पड़ता है। मैं कहूँ-सत्य के बिना जीवन नहीं चलता। मान लीजिए-आपको भूख लगी है। भूख तो भोजन करने पर ही शान्त होगी, लेकिन आपको सत्य बोलना ही नहीं है तो आपका उत्तर होगा-‘नहीं, अभी भूख नहीं है।’ आप चाहे घर पर हों, चाहे दूकान पर झूठ बोले बिना काम चल सकता है, लेकिन सत्य के बिना काम नहीं चलता। व्यापार में सत्य है तो ठीक। व्यापार लाख से नहीं, साख से चलता है। साख है तो सब है नहीं तो लाख क्या काम का?

आप कहते भी हैं-इफ वेल्थ इज लॉस्ट नथिंग इज लॉस्ट। धन गया तो कुछ नहीं गया। स्वास्थ्य गया तो थोड़ा-बहुत गया। यदि चारित्र नहीं रहा तो सब कुछ चला गया। अनुभवी कहते हैं-धन तो हाथ का मैल है। आज चला गया तो कल वापस आ सकता है। लक्ष्मी को इसीलिए चञ्चल कहा जाता है। लक्ष्मी एक जगह नहीं रहती। आप तिजोरी में ताला लगाते हैं, एक ही जगह दो ताले लगा दें, धन

यदि नहीं रहना है तो नहीं रहेगा।

आपको अपना चरित्र सुरक्षित रखना है। चरित्र चारु होगा तो मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा मिलेगी ही।

आज पर्युषण पर्व का तीसरा दिवस चारित्र-दिवस है। आप चरित्र अच्छा बनाओ। नींव कमजोर है तो महल मजबूत नहीं रह पाएगा। गुरुदेव (आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) जब भी किसी को दीक्षा देते हैं तो फरमाते हैं-“जाइ सम्पन्ने, कुल सम्पन्ने।” चारित्र के आरोहण कराने के पहले दीक्षित होने वाला यदि जाति सम्पन्न, कुल सम्पन्न और विनय सम्पन्न है तो वह ली हुई प्रतिज्ञा प्राण-पथ से निभायेगा। जाति सम्पन्न बैल गर्दन भले ही टूट जाय, लिए बोझ को पार पहुँचाता है। जाति सम्पन्न-कुल सम्पन्न मरना मञ्जूर कर लेगा, मान्यता तोड़ना मञ्जूर नहीं करेगा। अच्छे खानदान वालों के संस्कार चारित्र से नापे जाते हैं। चारित्रवान् पर चाहे जैसा संकट आ जाए वह स्वीकृत नियमों का पूरी निष्ठा से पालन करेगा। पर, जो चारित्र से भ्रष्ट हैं वे एक को दबाते हैं, दूसरे को उछालते हैं।

जातिवान-कुलवान पर कभी संकट आ भी जाए तो वह गुरु को कहकर जाता है। बिना कहे दगा देकर जाने वाला जातिवान शिष्य नहीं होता। हाँ, कहने में भले कोई अपने-आपको सुशिष्य कह दे, किन्तु सुशिष्य तो वही होता है जो गुरु-आज्ञा की भली-भाँति आराधना करता है। ज्ञाताधर्म कथाङ्ग में आपने मेघकुमार वृत्तान्त सुना है। मेघकुमार ने संयम लिया। पहली रात को उसे सन्तों के आने-जाने से ठोकरें खानी पड़ी, परीषह सहना पड़ा। कहावत है-‘आज ही माथो मुण्डायो, आज ही घड़ा (ओला) पड़िया।’

मेघकुमार जाति सम्पन्न था, कुल सम्पन्न था, विनय सम्पन्न था। वह भगवान महावीर के चरणों में पहुँचा। सोचकर गया था कि भगवान से कह लौट

जाऊंगा। भगवान सर्वज्ञ थे, सर्वदर्शी थे। घट-घट की जानने वाले थे इसलिए कह दिया- 'आओ मेघ! तुम्हें रात को परीषह सहन करना पड़ा, इसलिए मन में चञ्चलता आ गई। किन्तु तुम अपने पूर्व जन्म को याद करो। हाथी के भव में तुमने तीन दिन तक एक पैर ऊँचा रखकर खड़ा रहना मञ्जूर किया, किन्तु खरगोश की रक्षा। मेघकुमार को जाति स्मरण ज्ञान हो गया और वह स्थिर हो गया।

हमारे यहाँ जो पहले दीक्षा लेता है वह बड़ा होता है। पीछे से दीक्षा लेने वाला चाहे सेठ है या राजकुमार वह छोटा ही होगा। सेठ के पहले मुनीम साधु बन जाए और सेठ बाद में दीक्षा ले तो वह उम्र में भले ही बड़ा हो, दीक्षा पर्याय में छोटा ही रहेगा। बेटा पहले दीक्षा ले ले और बाप बाद में दीक्षा ले तो बेटा बड़ा, बाप छोटा रहेगा। यह शासन की मर्यादा है। इसे हम शासन का गौरव भी कह सकते हैं। क्यों तो जिनशासन में चारित्र-पर्याय का महत्त्व है।

चारित्र का महत्त्व धर्मशासन का मान है, देश में चारित्र के दीवानों ने देश का मान बढ़ाया, देश का सम्मान बनाए रखना। वीर दुर्गादास की बात आपको ध्यान में ही है। मैं एक-दो जैन श्रावकों का उदाहरण रखना चाहता हूँ। रियाँ के सेठ जीवनदासजी मुणोत का चारित्र ही था जिससे कुचामन के ठाकुर

उनके पुत्र को लेकर गए कि हमारे यहाँ कोई सेठ रहेगा तो नगर का गौरव बढ़ेगा।

सेठ कौन होता है? जिसका पेट बड़ा वह सेठ नहीं होता, पर जिस सदगृहस्थ का जीवन श्रेष्ठ होता है, धीर-वीर-गम्भीर का जिसमें गुण होता है वह सेठ कहलाता है। सेठ गलती को अन्दर से सुधारता है और बाहर में इज्जत जाने नहीं देता। सेठ समाज के प्लेटफार्म पर बात नहीं रखता, किन्तु अन्दर ही अन्दर कमी दूर करने का प्रयास करता है।

सेठ तो ऐसे-ऐसे होते हैं जो व्यक्ति-व्यक्ति में रहे दोशों का निकन्दन करता है। कुचामन या रियाँ के सेठजी की क्या बात कहूँ। जोधपुर के महामन्दिर की पहली पोल के चाहे कैसा ही गुनहगार है, पोल के हाथ लगा दे तो उसके सारे गुनाह माफ़ हो जाते। वह लाडूनाथजी का चारित्र ही तो था।

श्रावकों का श्रेष्ठ चरित्र होता है। सभी बातें एक निश्चित समय में रखना सम्भव नहीं है। हमारे बीच गुरुदेव विराज रहे हैं। गुरुदेव के चारित्र से चारित्र जगे। चारित्र माँगने से मिलने वाला नहीं है। इसके लिए तो चारित्र में चरण बढ़ाने होंगे। चारित्र हार्ट है, चारित्र मार्ट है, चारित्र आर्ट है। आप चारित्र-धर्म का आचरण करें, इसी शुभभावना के साथ.....।

एक ही है मुक्ति का आधार

श्री सुशील चाणोदिया

(तर्ज :: मेरा जीवन कोरा कागज....)

एक ही है मुक्ति का आधार जिनवाणी,
जीव अनन्ता को लगाए पार जिनवाणी।
एक ही है मुक्ति का आधार जिनवाणी।।
गहन अर्थों गूढ विषयों से सुसज्जित जो,
केवलज्ञानी केवलदर्शी से है भाषित जो।
वीतरागों का परम उपकार जिनवाणी।

एक ही है मुक्ति का आधार जिनवाणी।।
अनुत्तर प्रतिपूर्ण तत्त्वों से भरी न्यारी,
न्याययुक्त है मार्ग यह, एकान्त हितकारी।
कर्मों के महारोग का उपचार जिनवाणी।
एक ही है मुक्ति का आधार जिनवाणी।।
सिद्धि का और मुक्ति का, निर्याण का मग भी,
सर्व दुःख से हीन यह निर्वाण का मग भी।
तथ्य है, और सत्य का संचार जिनवाणी।
एक ही है मुक्ति का आधार जिनवाणी।।

आसक्ति के चक्कर में चौरासी के चक्कर

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा 08 मार्च, 2020 को जोधपुर के सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरु पार्क में फरमाये गए प्रवचन का आलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

धर्म जिज्ञासु बन्धुओं!

असङ्ग होने वाला ही आनन्द प्राप्त करता है। संसार के प्राणियों के दुःख का कारण है-सङ्ग। सङ्ग को बोलचाल की भाषा में आप आसक्ति कह सकते हैं। आसक्ति कहो या अटैचमेंट या फिर जुड़ाव कहो अथवा संयोग, सब एक ही है।

संसार के सभी जीव सुख चाहते हैं। चाहना तो सबकी सुखी बनने की है, परन्तु अधिकांश लोग संयोग बढ़ाते जाते हैं। जितना-जितना संयोग बढ़ता है, उतना-उतना दुःख बढ़ता है। क्यों? तो संयोग से कभी सच्चा सुख नहीं मिलता। जीव बाहर-ही-बाहर में सुख देखता है, वह भीतर देखना ही नहीं चाहता। पाँच इन्द्रियों के विषय और उन विषयों की पूर्ति के लिए ज्यों-ज्यों साधन जुटाता है, सामग्री बढ़ाता है, फिर भी व्यक्ति को सुख नहीं मिलता। सुख-सुविधा के साधन बढ़ाने में दुःख बढ़ता जाता है।

आप चाहे धन-दौलत बढ़ाएँ, पद-प्रतिष्ठा पाएँ कुटुम्ब-परिवार जुटाएँ अथवा सुख-सुविधा के साधन सुलभ करा लें, आपको सुख मिलेगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता, परन्तु टेंशन जरूर मिलेगा। साधन-सामग्री बढ़ाते हुए भी सुख के बजाय यदि दुःख बढ़े तो कहना होगा-जीव आसक्ति के चक्कर में चौरासी के चक्कर लगा रहा है।

अहंकार और आसक्ति केवल धन-सम्पदा तक की नहीं होती, वह तो सीखे हुए ज्ञान की भी हो सकती है। अहंकार और आसक्ति क्रियाओं की हो या किसी वस्तु

पर भी क्यों न हो, आसक्ति के कारण मैं और मेरेपन का भाव बढ़ता है। यह मेरी मम्मी, ये मेरे पापा, ये भाई-यह बहिन। जन्म के साथ पारिवारिक-परिजनों के प्रति मेरेपन का भाव रहता ही है। एक बच्चा आज जन्मा है, जब वह बोलने लगता है तो कहता है-पापा, मम्मी, दादा, दादी। यह मेरा घर, यह मेरी दुकान। मेरा और मेरेपन का भाव निरन्तर बढ़ता जाता है। बढ़ते-बढ़ते यह भाव मित्रों तक जाता है, पत्नी और सन्तान तक पहुँचता है।

मैं और मेरेपन का भाव दुःख का कारण है। व्यक्ति जब बाहर-ही बाहर देखता है तो उसे सब जगह मेरापन ही दिखता है। अज्ञानी और ज्ञानी में यही तो फर्क है। ज्ञानी के भावों में भी संसार अर्थात् मेरापन नहीं तो फिर घर-परिवार, कुटुम्ब-कबीला, धन-दौलत और सुख-सुविधा के साधनों में वह मेरापन कैसे करेगा? उसके चिन्तन में तो यह भाव रहता है कि यह शरीर भी मेरा नहीं है। अज्ञानी संसार के हर पदार्थ को मेरा मानता और मेरा कहता है। मैं और मेरेपन का भाव दुःख का कारण है।

सम्यग्दृष्टि संसार की किसी भी वस्तु को अपनी नहीं मानता। आप प्रायः एक दोहा बोलते हैं-

सम्यग्दृष्टि जीवड़ा करे कुटुम्ब प्रतिपाल।

अन्तर्गत न्यारो रहे ज्यूँ धाय खिलावे बाल।।

संसारी जीव में आसक्ति का भाव रहता है जबकि सम्यग्दृष्टि में अनासक्ति का भाव होता है। आपने कई बार सुना है-भरत चक्रवर्ती छह खण्ड का राजा था तो भी वह सम्यग्दृष्टि था। क्यों? कारण क्या? बात यह है

कि उसका किसी के साथ ममत्वभाव नहीं था। उसके चिन्तन में था- 'मैं अखण्ड आत्मा हूँ, छह खण्ड का स्वामी नहीं।'

आपने आनन्द श्रावक का नाम सुना है। आनन्द श्रावक के पास बारह करोड़ की सोनैय्या थी, चालीस हजार गायें थी। इतनी धन-सम्पदा होते हुए भी उसे कोई आसक्ति नहीं थी।

राजा श्रेणिक जब तक अनाथी मुनि के सम्पर्क में नहीं आया तब तक वह अपने-आपको नाथ मानता था। अनाथी मुनि के साथ संवाद हुआ। अनाथी मुनि ने राजा से कह दिया- 'राजन्! आप तो स्वयं अनाथ हो, मेरे नाथ क्या बनोगे?' संवाद के चलने के बाद राजा श्रेणिक को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई, तब वह मगध के सम्राट् के साथ आत्मा का स्वामी बन गया।

ज्ञानियों का कथन है-ज्यों-ज्यों मेरापन घटता जाता है त्यों-त्यों सुख बढ़ता जाता है। आप इस विषय को साधारण नहीं समझें। यह गहरा विषय है। आप गम्भीरता से चिन्तन-मनन करेंगे तो आपको स्वयं लगेगा कि यह धन-दौलत तो क्या, मेरा अपना शरीर भी मेरा नहीं है। आप में से कई हैं, जो कहने में तो कह देंगे कि यह शरीर मेरा नहीं है। उनका कहना तो ठीक है, पर इसे भी समझने की जरूरत है। क्या यह शरीर वास्तव में मेरा है? यदि मेरा है तो क्या यह सदा स्थायी रहेगा? क्या इस शरीर का कभी नाश नहीं होगा? आप जानते हैं-शरीर नाशवान है। शरीर सदा एक-सा नहीं रहता। शरीर एक दिन मृत्यु को प्राप्त होगा।

शरीर नाशवान है, जबकि आत्मा अजर है, अमर है। जीव जब माँ के गर्भ में आता है तब उसके पास तैजस और कार्मण शरीर रहते हैं। गर्भस्थ जीव ओज आहार करता है। हर गर्भस्थ जीव आत्म-प्रदेशों से ओज आहार ग्रहण करता है और ओज आहार से शरीर निरन्तर बढ़ता है, टिका रहता है। मरण के समय जीव ओज आहार छोड़ता है। इसीलिए ज्ञानीजन कहते हैं-मरते समय जीव

को कुछ समय भयंकर वेदना होती है। पूज्य आचार्यश्री जयमलजी म.सा. का यह भजन आपने सुना होगा, भजन में कहा है-

जीवा! तू तो भोलो रे प्राणी, इम रुलियो संसार।टेर।।
अट्टु करोड़ सुई लाल करी जीवा, चाँपे रूँ-रूँ माय।
आठ गुणी होवे वेदना रे जीवा, गर्भावास रे मांय।

जीवा! तू तो भोलो रे प्राणी।।

जन्मता करोड़ गुणी जीवा, मरता कोड़ा-कोड़।

जन्म-मरण री जाणो, जग में मोटी खोड़।।

जीवा! तू तो भोले रे प्राणी।।

इस शरीर में साढ़े तीन करोड़ रोम-राजि हैं। जन्मते समय करोड़ गुना और मरते समय क्रोड़ा-क्रोड़ गुना दुःख होता है। इतना दुःख होने पर भी जीव जब गर्भ में आता है और शरीर धारण करता है तो कहता है-यह शरीर मेरा। मेरे-मेरे की आसक्ति के कारण जीव दुःख पाता है, कष्ट उठाता है।

आपने सुना है-व्यवहार में प्राणातिपात सबसे बड़ा पाप है तो निश्चय में मिथ्यात्व सबसे बड़ा पाप है। करुणा में सम्यक्त्व की भजना है और सम्यक्त्व में करुणा की नियमा है। आप इसे ठीक से समझें। करुणा का जीवन में कोई स्थान नहीं, मेरा ऐसा कहना नहीं है। करुणा से ही तो सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। क्यों? कारण क्या? बात यह है-करुणा से ही तो हृदय कोमल बनता है। करुणा कब होगी जबकि ममता छूटेगी। ममता छूटे बिना करुणा नहीं और करुणा के बिना सम्यक्त्व नहीं। आप वस्तु का ही नहीं, बल्कि शरीर की ममता का त्याग करें। ममता चाहे वस्तु की हो या शरीर की, ममता छोड़े बिना मोक्ष नहीं मिलता।

संसार है और रहेगा भी, पर सम्यग्दृष्टि सोचता है संसार में मेरा कुछ भी नहीं है। जब तक यह आसक्ति नहीं छूटती, शान्ति नहीं मिल सकती। आसक्ति-त्याग की बात आपने कई बार सुनी है। ज्ञानीजन कहते हैं-आसक्ति को देखो। "संग इति पासहा.....।"

जो भी ज्ञाता-द्रष्टा है उसकी आसक्ति टूटती जाती है। सम्यग्दर्शनी मानता है-मेरा कुछ भी नहीं है। एक वाक्य में कहना हो तो क्या कहना? “कोई न मेरा, मैं न किसी का; अध्यात्म नाम उसी का।” यानी मैं किसी का नहीं और मेरा कोई नहीं। यह भाव आपने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. में देखा होगा।

“एगो मे सासओ अप्पा।” मैं शाश्वत आत्मा हूँ। मेरा क्या? मेरा तो मेरा ज्ञान है। मेरा दर्शन है, ज्ञान-दर्शन के अलावा सब संयोग हैं। सम्यग्दृष्टि ऐसा केवल कहता नहीं, मानता है। उसके लिए जहाँ भी-जब भी पुद्गल के प्रति मेरेपन का भाव है वहाँ समकित नहीं रहती। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का भजन आप कई बार गुनगुनाते हैं-

मैं हूँ उस नगरी का भूप

जहाँ न होती छाया-धूप।

अभी पूरा भजन बोलने का समय नहीं है, फिर भी इतना जरूर कहूँगा कि आप क्या साथ लेकर आए? क्या साथ लेकर जाएँगे? न घर आपका है, न परिवार। यह धन-दौलत भी कोई न साथ लेकर गया और न साथ जाने वाली है। फिर, आसक्ति क्यों? ज्ञानीजन यही तो

कहते हैं-आसक्ति को देखो।

आप आसक्ति को देखोगे तो लगेगा कि आसक्ति मेरा स्वभाव नहीं है। आसक्ति मेरे स्वभाव से भिन्न है। मेरा स्वभाव तो मेरा धर्म है। ममत्व मेरा स्वभाव नहीं हो सकता। ममता रखने वाला किस गति में जाएगा? कब जाएगा? कहाँ जाएगा यह सब भविष्य के गर्भ में है। आप कल की बात छोड़ दें, एक पल का भी किसी को भरोसा नहीं हो सकता। कपिल केवली की दृष्टि ज्यों ही आत्मा की ओर मुड़ी, उसे केवलज्ञान हो गया। क्या कपिल ने शास्त्रों का अध्ययन किया? क्या उसे कोई ज्ञान था? कपिल केवली की दृष्टि ज्यों ही सम्यक् बनी, वह संसार-सागर से तिर गया।

आपको, हमको आत्म-ज्ञान की जरूरत है। आत्म-ज्ञान से विरक्ति होगी और विरक्ति से ही मुक्ति होगी। इसके लिए स्वभाव में आना होगा। अपने स्वभाव में आना ही तो धर्म है। टेंशन का कारण है-ममत्वभाव। टेंशन है तो दुःख है। आप चिन्तन करें और चिन्तन करते-करते ज्यों ही आसक्ति के चक्कर से निकलेंगे तो चौरासी के चक्कर समाप्त हो सकेंगे।

इसी मंगल मनीषा के साथ.....

गौतम का आया सन्देश

श्री आनन्द पटवा

(तर्ज :: बम्बई से आया मेरा दोस्त.....)

गौतम का आया सन्देश, वीर को प्रणाम करो,
दिन को भले खाओ पीओ, रात को चौविहार करो।
कोरोना की आयी महामारी, घर पर तू रहना भाई
घर पर बैठे नित्य सामायिक-स्वाध्याय करना
अपने कर्मों को हल्का करना...गौतम का।।1।।
स्वाध्याय में कुछ आगम पढ़ना, थोड़े कुछ नये सीखना
जिसको ना आवे कुछ भी, उनको कुछ तो सिखाना
सीखे हुये ज्ञान को तुम विस्तार करो.गौतम का।2।
घर पर सामूहिक प्रार्थना नित्य करना,

घर का वातावरण शुद्ध करना

आपस में प्रेम को तुम बढ़ाओ,

घर को स्वर्ग बनाओ...गौतम का।।3।।

संवत्सरी को अट्टम छट्ट तप चौमासी पर
चतुर्दशी को उपवास, आयम्बिल करो अष्टमी पर
इतना जो न हो सके तो,

नवकारसी नित्य करो...गौतम का।।4।।

नमो अरिहंताणं गाना, अवसर मिला है सुहाना
मोक्ष में है अगर जाना, शाश्वत सुखों को है पाना
'आनन्द' बातों को कम कर दो,

प्रभु भक्ति ज्यादा करो...गौतम का।।5।।

-मैसूर (कर्नाटक)

Uttarādhyayana Sūtra-Extracts

Shri C. M. Bachhawat, IAS (Retd.)

Continue From July 2020 issue

| | 23rd Lecture: Kesi and Gautama | |
|--------------|---|---|
| 23.21 -24 | <p>Kēśi said to Gautama, “I want to ask you something, holy man.” Then to these words of Kēśi Gautama made the following reply: “Sir, ask whatever you like.” Then with his permission Kēśi spoke to Gautama: (21, 22)</p> <p>“The Law taught by the great sage Pārśva, recognises but four vows, whilst that of Vardhamāna enjoins five. (23)</p> <p>“Both Laws pursuing the same end, what has caused this difference? Have</p> | Question by Kesi |
| 23.25 -31 | <p>Then to these words of Kēśi Gautama made the following reply: “Wisdom recognises the truth of the Law and the ascertainment of true things. (25)</p> <p>“The first saints were simple but slow of understanding, the last saints prevaricating and slow of understanding, those between the two simple and wise; hence there are two forms of the Law. (26) “The first could but with difficulty understand the precepts of the Law, and the last could only with difficulty observe them, but those between them easily understood and observed them.” (27) “Well, Gautama, you possess wisdom, you have destroyed my doubt; but I have another doubt which you must explain to me, Gautama. (28) “The Law taught by Vardhamāna forbids clothes, but that of the great sage Pārśva allows an under and upper garment. (29) “Both Laws pursuing the same end, what has caused this difference? Have you no misgivings about this twofold Law, O wise man?” (30) To these words of Kēśi Gautama made the following reply: “Deciding the matter by their superior knowledge, (the Tīrthakaras) have fixed what is necessary for carrying out the Law. (31)</p> | Reply by Gautama |
| 23.37 -38 | <p>Kēśi said to Gautama: “Whom do you call a foe?” To these words of Kēśi Gautama made the following reply: (37) “Self is the one invincible foe, (together with the four) cardinal passions, (viz. anger, pride, deceit, and greed, they are five) and the (five) senses (make ten). These (foes), O great sage, I have regularly vanquished.” (38)</p> | Victory over self – the supreme objective |
| 23.52 -53 | <p>Kēśi said to Gautama, “What do you call the fire?” To these words of Kēśi Gautama made the following reply: (52)</p> | Self control |

| | | |
|-----------------|---|--|
| | “The passions are the fire; knowledge, a virtuous life, and penances are the water; sprinkled with the drops of knowledge the fire of the passions is extinguished and does not burn me.” (53) | |
| 23.58 | “The mind is that unruly, dreadful, bad horse; I govern it by the discipline of the Law (so that it becomes a well-) trained Kambōja-steed.” (58) | Nature of mind |
| | 24th Lecture: The Samitis MESSAGE : Minute details of virtuous conduct of a saint | |
| 24.2 | The eight articles of the creed are the Samitis and the Guptis; there are five Samitis and three Guptis. (1) The Samitis are: 1. iryā-samiti (going by paths trodden by men, beasts, carts, etc., and looking carefully so as not to occasion the death of any living creature); 2. bhāṣā-samiti (gentle, salutary, sweet, righteous speech); 3. eṣaṇā-samiti (receiving alms in a manner to avoid the forty-two faults that are laid down); 4. ādāna-samiti (receiving and keeping of the things necessary for religious exercises, after having carefully examined them); 5. uccāra-samiti (performing the operations of nature in an unfrequented place). The three Guptis (which are here included in the term Samiti in its wider application) are: 1. mano-gupti (preventing the mind from wandering in the forest of sensual pleasures by employing it in contemplation, study, etc.); 2. vāg-gupti (preventing the tongue from saying bad things by a vow of silence, etc.); 3. kāya-gupti (putting the body in an immovable posture as in the case of Kāyōtsarga). (2) <i>These are the five Samitis for the practice of the religious life, and the Guptis for the prevention of everything sinful. (26)</i> | 5 Samitis and 3 Guptis – explained later in chapter |
| | 25th Lecture: The True Sacrifice MESSAGE : Identity by karmas and not caste | |
| 25.6-8,11,14,16 | The priest wanted to turn the approaching monk off: “I shall not give you alms, mendicant, beg somewhere else. (6) “Priests who are versed in the Vēdas and are chaste as behoves offerers, who are versed in the Jyōtiṣāṅga and are well grounded in the sacrificial science, who are able to save themselves. and others, such priests ought to be presented with food and all they desire.” (7, 8) “You do not know what is most essential in the Vēdas, nor in sacrifices, nor in the heavenly bodies, nor in duties. (11) “Tell us the most essential subject in the Vēdas, and tell us what is most essential in the sacrifice; tell us the first of the heavenly bodies, and tell us the best of dharmas. (14) | Priest and Saint- meeting conversation Jayghosa&Vijayghosa |

| | | |
|--------------|---|---|
| | <p>“The most essential subject in the Vēdas is the agnihōtra, and that of the sacrifice is the purpose of the sacrifice; the first of the heavenly bodies is the moon, and the best of dharmas is that of Kāśyapa (i.e. Rīṣabha). (16)</p> <p>** This is the 2nd chapter dealing with priest and saint</p> | |
| 25.19 -29 | <p>“He who is called by people a Brāhmaṇa and is worshipped like fire (is no true Brāhmaṇa). But him we call a true Brāhmaṇa, whom the wise point out as such. (19) “He who has no worldly attachment after entering the order, who does not repent of having become a monk, and who takes delight in the noble words, him we call a Brāhmaṇa. (20) “He who is exempt from love, hatred, and fear, (and who shines forth) like burnished gold, purified in fire, him we call a Brāhmaṇa. (21) “A lean, self-subduing ascetic, who reduces his flesh and blood, who is pious and has reached Nirvāṇa, him we call a Brāhmaṇa. (22) “He who thoroughly knows living beings, whether they move or not, and does not injure them in any of the three ways, him we call a Brāhmaṇa. (23) “He who does not speak untruth from anger or for fun, from greed or from fear, him we call a Brāhmaṇa. (24) “He who does not take anything that is not given him, be it sentient or not sentient, small or large, him we call a Brāhmaṇa. (25) “He who does not carnally love divine, human, or animal beings, in thoughts, words, or acts, him we call a Brāhmaṇa. (26) “He who is not defiled by pleasures as a lotus growing in the water is not wetted by it, him we call a Brāhmaṇa. (27) “He who is not greedy, who lives unknown, who has no house and no property, and who has no friendship with householders, him we call a Brāhmaṇa. (28) “He who has given up his former connections (with his parents, etc.), with his kinsmen and relations, and who is not given to pleasure, him we call a Brāhmaṇa. (29)</p> | True Brahmana |
| 25.31 | <p>“One does not become a Śramaṇa by the tonsure, nor a Brāhmaṇa by the sacred syllable Ōṃ, nor a Muni by living in the woods, nor a Tāpasa by wearing (clothes of) Kuśa-grass and bark. (31)</p> | Monk – Outer clothes, postures - immaterial |
| 25.32 -33 | <p>“One becomes a Śramaṇa by equanimity, a Brāhmaṇa by chastity, a Muni by knowledge, and a Tāpasa by penance. (32)</p> <p>“One becomes a Śramaṇa by equanimity, a Brāhmaṇa by chastity, a Muni by knowledge, and a Tāpasa by penance. (32) “By one's actions one becomes a Brāhmaṇa, or a Kṣatriya, or a Vaiśya, or a Śūdra. (33)</p> | Brahmana, Ksatriya etc. – By Conduct |
| 25.43 | <p>“Thus foolish men, who love pleasure, will be fastened (to Karman), but the passionless will not, even as the dry clod of clay (does not stick to the wall).” (43)</p> | Karman – Avoid like dry clod of clay |

| | | |
|-----------|--|--|
| 25.44 | When Vijayaghōṣa had learned the excellent Law from the houseless Jayaghōṣa, he entered the order. (44) | Humility – after acquiring right knowledge |
| | 26th Lecture: The Correct Behaviour MESSAGE : Daily routine of monks | |
| 26.11-12 | A clever monk should divide the day into four (equal) parts (called pauruṣī), and fulfil his duties (uttaraguṇa) in all four parts. (11) In the first Pauruṣī he should study, in the second he should meditate, in the third he should go on his begging tour, and in the fourth he should study again. (12) | Monks – Daily Routine - Purushartha |
| | 27th Lecture: The Bad Bullocks MESSAGE : Enforce discipline | |
| 27.1,8,16 | There was a Sthavira and Gaṇadhara, the learned sage Garga. This leader of the Gaṇa once made the following reflections: (1) “Just as bad bullocks are when put before a car, so are bad pupils when yoked, as it were, to the car of the Law; they break down through want of zeal. (8) “As are bad pupils, so are bad bullocks; I shall leave these lazy donkeys, and shall practise severe austerities.” (16) | Bad bullocks and bad pupils are of same nature |
| | 28th Lecture : The Road To Final Deliverance MESSAGE : Be virtuous of 4 qualities | |
| 28.2 | Right knowledge; II. Faith; III. Conduct; and IV. Austerities; this is the road taught by the Jinās who possess the best knowledge. (2) | 4 Jewels (4 Ratnas/ Virtues) |
| 28.5-8 | This is the fivefold knowledge. The wise ones have taught the knowledge of substances, qualities, and all developments. (5) Substance is the substrate of qualities; the qualities are inherent in one substance; but the characteristic of developments is that they inhere in either (viz. substances or qualities). (6) Dharma, Adharma, space, time, matter, and souls (are the six kinds of substances); they make up this world, as has been taught by the Jinās who possess the best knowledge. (7) Dharma, Adharma, and space are each one substance only; but time, matter, and souls are an infinite number of substances. (8) | Knowledge – Type of |
| 28.14 | 1. jīva, Soul; 2. ajīva, the inanimate things; 3. bandha, the binding of the soul by Karman; 4. puṇya, merit; 5. pāpa, demerit; 6. āsrava, that which causes the soul to be affected by sins; 7. saṃvara, the prevention of āsrava by watchfulness; 8. the annihilation of Karman; 9. final deliverance: these are the nine truths (or categories). (14) | 9 Fundamental Truths |

| | | |
|--------------|--|---|
| 28.29 -30 | There is no (right) conduct without right belief, and it must be cultivated (for obtaining) right faith; righteousness and conduct originate together, or righteousness precedes (conduct). (29) Without (right) faith there is no (right) knowledge, without (right) knowledge there is no virtuous conduct, without virtues there is no deliverance, and without deliverance there is no perfection. (30) | Virtuous Conduct - Prerequisites |
| 28.32 -33 | III. Conduct, which produces the destruction of all Karman, is 1. sāmāyika, the avoidance of everything sinful; 2. chēdōpasthāpana, the initiation of a novice; 3. parihāraṁśuddhika, purity produced by peculiar austerities; 4. sūkṣmasamparāya, reduction of desire; 5. akaṣāyayathākhyāta, annihilation of sinfulness according to the precepts of the Arhats, as well in the case of a chadmastha as of a Jina. (32, 33) | Virtuous Conduct -Samayika etc.- Destruction of Karmans |
| 28.34 | IV. Austerities are twofold: external and internal; both external and internal austerities are sixfold. (34) | Austerities - type |
| 28.35 | By knowledge one knows things, by faith one believes in them, by conduct one gets (freedom from Karman), and by austerities one reaches purity. (35) | 4 Virtues – Process in attaining Purity |
| | 29th Lecture: The Exertion in Righteousness MESSAGE : Righteousness in minute details | |
| 29.1 | obedience to co-religionists and to the Guru. 5. ālōchanā, confession of sins before the Guru; 6. nindā, repenting of one's sins to oneself; 7. garhā, repenting of one's sins before the Guru; 8. sāmāyika, moral and intellectual purity of the soul; 9. chaturviṁśatistava, adoration of the twenty-four Jinas; 10. vandana, paying reverence to the Guru; 11. pratikramaṇa, expiation of sins; 12. kāyōtsarga, a particular position of the body; 13. pratyākhyāna, self-denial; 14. stavastutimaṅgala, praises and hymns; 15. kālasyapratyupēkṣaṇā, keeping the right time; 16. prāyaścittakarāṇa, practising penance; 17. kṣamāpana, begging forgiveness; 18. svādhyāya, study; 19. vāchanā, recital of the sacred texts; 20. pariṛcchanā, questioning (the teacher); 21. parāvartanā, repetition; 22. anuprēkṣā, pondering; 23. dharmakathā, religious discourse; 24. śrutasyārādhanā, acquisition of sacred knowledge; 25. ēkāgramanaḥsannivēśanā, concentration of thoughts; 26. saṁyama, control; 27. tapas, austerities; 28. vyavadāna, cutting off the Karman; 29. sukhāśāta, renouncing pleasure; 30. apratibaddhatā, mental independence; 31. vichitraśayanāsanāsēvanā, using unfrequented lodgings and beds; 32. vinivartanā, turning from the world; 33. | Righteous Path – all 73 aspects explained with importance thereof |

| | | |
|-----------|--|--|
| | <p>sambhōgapratyākhyāna, renouncing collection of alms in one district only; 34. upadhipratyākhyāna, renouncing articles of use; 35. āhārapratyākhyāna, renouncing food; 36. kaṣāyapratyākhyāna, conquering the passions; 37. yōgapratyākhyāna, renouncing activity; 38. śarīrapratyākhyāna, renouncing the body; 39. saḥāyapratyākhyāna, renouncing company; 40. bhaktapratyākhyāna, renouncing all food; 41. sadbhāvapratyākhyāna, perfect renunciation; 42. pratirūpatā, conforming to the standard; 43. vaiyāvṛtya, doing service; 44. sarvaguṇasampūrṇatā, fulfilling all virtues; 45. vītarāgatā, freedom from passion; 46. kṣānti, patience; 47. mukti, freedom from greed; 48. ārjava, simplicity; 49. mārḍava, humility; 50. bhāvasatya, sincerity of mind; 51. karaṇasatya, sincerity of religious practice; 52. yōgasatya, sincerity of acting; 53. manōguptatā, watchfulness of the mind; 54. vāg-guptatā, watchfulness of the speech; 55. kāyaguptatā, watchfulness of the body; 56. maṇḥsamādhāraṇā, discipline of the mind; 57. vāksamādhāraṇā, discipline of the speech; 58. kāyasamādhāraṇā, discipline of the body; 59. jñānasampannatā, possession of knowledge; 60. darśanasampannatā, possession of faith; 61. chāritrasampannatā, possession of conduct; 62. śrōtrēndriyanigraha, subduing the ear; 63. chakṣurindriyanigraha, subduing the eye; 64. ghrāṇēndriyanigraha, subduing the organ of smell; 65. jihvēndriyanigraha, subduing the tongue; 66. sparśanēndriyanigraha, subduing the organ of touch; 67. krōdhavijaya, conquering anger; 68. mānavijaya, conquering pride; 69. māyāvijaya, conquering deceit; 70. lōbhavijaya, conquering greed; 71. prēmadvēṣamithyādarśanavijaya, conquering love, hate, and wrong belief; 72. śailēśī, stability; 73. akarmatā, freedom from Karman.</p> | |
| 29.8 | 8. By moral and intellectual purity (literally, equilibrium) the soul ceases from sinful occupations. (8) | Samayik – Prevents from sinful occupations |
| 29.17 | 17. By begging forgiveness he obtains happiness of mind; thereby he acquires a kind disposition towards all kinds of living beings; by this kind disposition he obtains purity of character and freedom from fear. (17) | Forgiveness – Begging – Happiness of mind |
| 29.18 -19 | 18. By study he destroys the Karman which obstructs right knowledge. (18) 19. By the recital of the sacred texts he obtains destruction of Karman, and contributes to preserve the sacred lore, whereby he acquires the Law of the Tīrtha, which again leads him to the complete destruction of Karman, and to the final annihilation of worldly existence. (19) | Swadhyaya(Self Study) |

| | | |
|----------|---|---|
| 29.43 | 43. By doing service he acquires the Karman which brings about for him the nāman and gōtra of a Tirthakara. (43) | Service of Sadhus (Vaiyya Vritya) - Benefits |
| 29.48 | 48. By simplicity he will become upright in actions, thoughts, and speech, and he will become veracious; thereby he will truly practise the Law. (48) | Religion – Simplicity essential |
| 29.54 | 54. By watchfulness of speech he keeps free from prevarication; thereby he enables his mind to act properly. (54) | Speech Control |
| 29.67-70 | 67. By conquering anger he obtains patience; he acquires no Karman productive of anger, and destroys the Karman he had acquired before. (67) 68. By conquering pride he obtains simplicity, etc. (as in 67, substituting pride for anger). (68) 69. By conquering deceit he obtains humility, etc. (as in 67, substituting deceit for anger). (69) 70. By conquering greed he obtains content, etc. (as in 67, substituting greed for anger). (70) | Kasay – Benefits of Absitence / Victory over 4 Bad Qualities |
| | 30th Lecture: The Road of Penance MESSAGE : Austerities destroy karmas | |
| 30.2 | By abstaining 1. from destroying life; 2. from lying; 3. from taking anything which is not given; 4. from all sexual indulgence; 5. from having any property; and 6. from eating at night, the soul becomes free from āsravas. (2) | Asravas – 6 elements, including not eating at night. |
| 30.5-6 | As a large tank, when its supply of water has been stopped, gradually dries up by the consumption of the water and by evaporation, so the Karman of a monk, which he acquired in millions of births, is annihilated by austerities, if there is no influx of bad Karman. (5, 6) | Asravas. Prevention . Destruction of Karmas accumulated over million years |
| | 31st Lecture: Mode of Life MESSAGE : exercise self-control | |
| 31.2-3 | One should desist from one thing, and practise another: desist from neglect of self-control, and practise self control. (2) Love and hatred are two evils which produce bad Karman; if a monk always avoids them, he will not stand within the circle (of transmigration). (3) | Various do and don'ts for a Monk The chapter details minutely various do's |

| | | |
|------------|--|--|
| | 32nd Lecture: The Causes of Carelessness MESSAGE : Control your desires | |
| 32.2 | By the teaching of true knowledge, by the avoidance of ignorance and delusion, and by the destruction of love and hatred, one arrives at final deliverance which is nothing but bliss. (2) | Path to Liberation – Knowledge, Veetragta, etc. |
| 32.8 | Misery ceases on the absence of delusion, delusion ceases on the absence of desire, desire ceases on the absence of greed, greed ceases on the absence of property. (8) | Causes of misery : Examples of colour, sound, smell, touch etc. |
| 32.10 7 | He who endeavours to recognise the vanity of all desires, will arrive at perfect indifference. When he ceases to desire the objects (of the senses), his desire for pleasures will become extinct. (107) | Control of Desire |
| | 33rd Lecture: The Nature of Karman MESSAGE : 8 kinds of karmans | |
| 33.2- 3 | The eight kinds of Karman are briefly the following: 1. Jñānāvaraṇīya (which acts as an obstruction to right knowledge); 2. Darśanāvaraṇīya (which acts as an obstruction to right faith); 3. Vēdanīya (which leads to experiencing pain or pleasure); 4. Mōhanīya (which leads to delusion); 5. Āyuhkarman (which determines the length of life); 6. Nāman (which determines the name or individuality of the embodied soul); 7. Gōtra (which determines his Gōtra); 8. Antarāya (which prevents ones entrance on the path that leads to eternal bliss). (2, 3) | Karman – 8 kinds |
| 33.4 | 1. Obstruction of knowledge is fivefold (viz. obstruction to): a. Śruta, knowledge derived from the sacred books; b. Ābhinibōdhika, perception; c. Avadhijñāna, supernatural knowledge; d. Manaḥparyāya, knowledge of the thoughts of other people; e. Kēvala, the highest, unlimited knowledge. (4) | 5 types of Knowledge |
| | 34th Lecture: On Leśyā MESSAGE : Karmas produce & act through leśyās | |

| | | |
|--------------|---|--|
| 34.1,3 | I shall deliver in due order the Lecture on Lēśyā; hear the nature of the six Lēśyās (produced by) Karman. (1) 1. They are named in the following order: black, blue, grey, red, yellow, and white. (3) | Karmans – produce Lesyas |
| 34.10 -15 | 3. The taste of the black Lēśyā is infinitely more bitter than that of Tumbaka, (the fruit of the) Nimb-tree, or of Rōhiṇī. (10) The taste of the blue Lēśyā is infinitely more pungent than Trikaṭuka and Hastippalī. (11) The taste of grey Lēśyā is infinitely sourer than that of unripe Mango and Kapittha. (12) The taste of red Lēśyā is infinitely more pleasant than that of ripe Mango and Kapittha. (13) The taste of yellow Lēśyā is infinitely better than that of excellent wine and various liquors, honey and Mairēyaka. (14) The taste of white Lēśyā is infinitely better than that of dates, grapes, milk, candied and pounded sugar. (15) | Karmans - Lesyas |
| 34.21 -22 | 7. A man who acts on the impulse of the five āsravas, does not possess the three Guptis, has not ceased to injure the six (kinds of living beings), commits cruel acts, is wicked and violent, is afraid of no consequences, is mischievous and does not subdue his senses—a man of such habits develops the black Lēśyā. (21, 22) | Karmans - Black Lesya |
| 34.31 -32 | A man who abstains from constant thinking about his misery and about sinful deeds, but engages in meditation on the Law and truth only, whose mind is at ease, who controls himself, who practises the Samitis and Guptis, whether he be still subject to passion or free from passion, is calm, and subdues his senses—a man of such habits develops the white Lēśyā. (31, 32) *** Similarly details about production of other Lesysa | Karmans - White Lesya |
| 34.60 | While the last muhūrta is running and a part of it is still to come, the souls with their Lēśyās developed, go to a new birth. (60) | Karmans in next birth |
| | 35th Lecture: The Houseless Monk MESSAGE : Set yourself to liberation | |
| 35.2 | Giving up the life in a house, and taking Pravrajyā, a sage should know and renounce those attachments which take hold of men. (2) | Monk – Renounce all worldly attachments |
| 35.2 | Rejecting food when the time of his death arrives, and leaving the human body, he becomes his own master, and is liberated from misery. (20) | Monk - Sankhelna |

| | | |
|------------------|---|--|
| | 36th Lecture: On Living Beings and Things Without Life MESSAGE : Know the nature of world | |
| 36.1 | Now learn from me with attentive minds the division of Living Beings and Things without life, which a monk must know who is to exert himself in self-control. (1) | Jiva-Ajiva |
| 36.4-8 | Things without life are 1. possessing form, 2. formless; the formless things are of ten kinds, those possessing form are of four kinds. (4) (1) The ten kinds of formless things: 1. Dharma, 2. its divisions, 3. its indivisible parts; 4. Adharma, 5. its divisions, 6. its indivisible parts; 7. space, 8. its divisions, 9. its indivisible parts, and 10. time. (5, 6) Dharma and Adharma are co-extensive with the World (Lōka); space fills the World and the Non-world (Alōka); time exists in what is called the place of time. (7) Dharma, Adharma, and Space are ever without beginning and end. (8) | Non Living things : Ajiva |
| 36.50, 52-53 | Living beings are of 2 kinds: 1. those still belonging to the Samsāra, and 2. the perfected souls (siddhas). The latter are of many kinds; hear me explain them. (49) (1) The perfected souls are those of women, men, hermaphrodites, of orthodox, heterodox, and householders. (50) Perfection is reached by people of the greatest, smallest, and middle size, on high places, underground, on the surface of the earth, in the ocean, and in water (of rivers, etc.). (51) Ten hermaphrodites reach, at the same time, perfection, twenty women, one hundred and eight men; four householders, ten heterodox, and one hundred and eight orthodox monks. (52, 53) | Living things, Jiva : Perfected Souls Perfection possible for all living beings |
| 36.260, 261, 266 | The miserable men who do not know the creed of the Jinās, will many times commit unholy suicide and die against their will. (260) Those who use weapons, eat poison, throw themselves into fire or water, and use things not prescribed by the rules of good conduct, are liable to be born and to die again and again. (Such persons realise the Mōha-Bhāvanā.) (266) | Suicide – Lack of knowledge of Jina |

*-President, Samyaggyan Pracharak Mandal
(Technical Member, West Bengal Taxation Tribunal)*

आगामी पर्व तिथि

| | | |
|--------------------------------|------------|---|
| भाद्रपद कृष्णा 11, शनिवार | 15.08.2020 | पर्युषण पर्व प्रारम्भ, स्वतन्त्रता दिवस |
| भाद्रपद कृष्णा 14, मंगलवार | 18.08.2020 | चतुर्दशी, पक्खी |
| भाद्रपद शुक्ला 4, शनिवार | 22.08.2020 | संवत्सरी महापर्व |
| भाद्रपद शुक्ला 8, बुधवार | 26.08.2020 | अष्टमी |
| भाद्रपद शुक्ला 14, मंगलवार | 01.09.2020 | चतुर्दशी, पक्खी |
| प्रथम आश्विन कृष्णा 8, गुरुवार | 10.09.2020 | अष्टमी |

प्रतिक्रमण : एक प्रमाण-पत्र

श्री अरूण मेहता

युग प्रधान आचार्य श्री हस्ती का दीक्षा शताब्दी वर्ष चल रहा है जो हमें प्रतिक्रमण सीखने-सिखाने की प्रेरणा कर रहा है एवं प्रतिक्रमण के बारे में नई-नई सोच जगाने का अवसर प्रदान कर रहा है।
प्रतिक्रमण-शारीरिक स्वस्थता का प्रमाण-पत्र

जब हम उभयकाल (नित्य प्रति सुबह-शाम) पूर्ण विधि सहित प्रतिक्रमण करते हैं, विधि अनुसार उठक-बैठक कर वन्दना करते हैं, दायँ-बायाँ घुटना खड़ा करके बैठते हैं; खमासमणो से वन्दना भी विधि अनुरूप आसन से करते हैं और हमें कोई शारीरिक कष्ट महसूस नहीं होता है, शरीर में स्फूर्ति आती है, किसी प्रकार का कोई दर्द या अकड़न महसूस नहीं होती है तो यह हमारी शारीरिक स्वस्थता का प्रमाण-पत्र है। इसे विधि अनुसार करने से हमारे लगभग पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है, शरीर की नसों से फँसे हुए विकार भी दूर हो जाते हैं। पूर्ण स्वस्थता आ जाती है।

अगर किसी को पूर्ण विधि सहित आसनों से प्रतिक्रमण करने में कष्ट होता है, दर्द होता है तो उन्हें यथा सम्भव आसन और विधि से करने का प्रयास बढ़ाते रहना चाहिए, जिससे शरीर धीरे-धीरे स्वस्थ होने लग जायेगा एवं कुछ समय तक प्रयास करते रहने से हम पूर्ण विधि-आसनों से करने में आराम महसूस करने लग जायेंगे, पूर्ण स्वस्थ हो जायेंगे।

प्रतिक्रमण आत्मा की स्वस्थता-निर्मलता का प्रमाण-पत्र

द्रव्य प्रतिक्रमण करते-करते भाव प्रतिक्रमण प्राप्त करना प्रत्येक साधक का लक्ष्य होता है।

नित्यप्रति उभयकाल प्रतिक्रमण करते-करते हमारी आत्मा निर्मल से निर्मलतर होती जाती है। भावों की उत्तरोत्तर विशुद्धि से आत्मा सरल एवं शुद्ध बनती जाती है। ऐसी साधक आत्मा कर्मों से हल्की होती जाती है और कर्मों का कम होना, कम होते जाना ही आत्मा की स्वस्थता है, निर्मलता है। अतः नित्यप्रति उभयकाल प्रतिक्रमण करना साधक आत्मा की स्वस्थता (निर्मलता) का प्रमाण-पत्र है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि द्रव्य प्रतिक्रमण शारीरिक स्वस्थता का तथा भाव प्रतिक्रमण आत्मा की स्वस्थता, निर्मलता, शुद्धता का प्रमाण-पत्र है। ये दोनों ही साधक को मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ाने वाले हैं। शुद्ध प्रतिक्रमण विधि सहित करते-करते ही कर्मों के अम्बार का नाश करके सभी साधक अपनी साधना को उच्चतर बनाएँ।

इस दीक्षा शताब्दी वर्ष की प्रेरणा से प्रत्येक साधक (श्रावक-श्राविका) प्रतिक्रमण की आराधना में आगे से आगे बढ़ें, अपनी आत्म-विशुद्धि करें, घर के प्रत्येक छोटे-बड़े सदस्य प्रतिक्रमण की पूँजी के अधिपति बनें, प्रत्येक सदस्य प्रतिक्रमण की साधना की उपादेयता जानकर-समझकर इस ओर अपने-अपने कदम बढ़ाएँ और दीक्षा शताब्दी वर्ष को सफल बनायें। यही शुभेच्छा।

**प्रतिक्रमण की पूँजी और
समाई (सामायिक) की कमाई
सब जीवन में अपनाएँ,
मेरे बहना और मेरे भाई.....॥**

-पूर्व महामन्त्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
467-ए, 7 वीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा,
जोधपुर-342003 (राज.)

उत्तराध्ययनसूत्र में निहित दार्शनिक सिद्धान्त[#]

डॉ. धर्मचन्द जैन

दर्शन के तीन आयाम होते हैं—तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा एवं आचारमीमांसा। उत्तराध्ययन सूत्र में हमें इन तीनों का विवेचन प्राप्त होता है। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि उत्तराध्ययन सूत्र में जैनदर्शन ओतप्रोत है। आगमिक दृष्टि से देखा जाए तो उत्तराध्ययन सूत्र धर्मकथानुयोग, द्रव्यानुयोग एवं चरणानुयोग का ग्रन्थ है। इनमें द्रव्यानुयोग में तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा का समावेश होता है तथा चरणानुयोग और धर्मकथानुयोग में आचारमीमांसा का। इस प्रकार दर्शन का व्यापक क्षेत्र है, किन्तु प्रस्तुत अध्ययन में जैनदर्शन के तत्त्वमीमांसीय, ज्ञानमीमांसीय एवं आचारमीमांसीय विशिष्ट सिद्धान्तों की ही चर्चा की जाएगी।

दुःख का कारण

भारतीय परम्परा में अध्यात्मविद्या एवं दर्शन का प्रारम्भ दुःख को देखकर उसका निवारण करने के लिए हुआ है। सांख्यदर्शन की सांख्यकारिका आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक इन दुःखत्रय की चर्चा से प्रारम्भ होती है। बौद्धदर्शन में चार आर्य सत्यों के अन्तर्गत दुःख प्रथम आर्यसत्य है। संसार में दुःख है, इसकी चर्चा जैन आगम उत्तराध्ययन सूत्र में भी हुई है। प्रतिकूलता का वेदन ही दुःख है। जैसा हम चाहते हैं, वैसा नहीं होता तो हमें प्रतिकूलता का अनुभव होता है। यही दुःख है। यह दुःख शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक स्तर पर अनुभव होता है। मनुष्य दुःख के कारणों को बाहर खोजता है एवं उन्हें मिटाकर सुख का अनुभव करना चाहता है, किन्तु उत्तराध्ययन सूत्र यह प्रस्तुत करता है कि दुःख का कारण

बाहर नहीं भीतर में है। भीतर में दुःख का कारण निरूपित करते हुए कहा गया—

जावंतऽविज्जा पुरिसा सव्वे ते दुक्खसंभवा।
लुप्पंति बहुसो मूढा संसारम्मि अणंतए॥

—उत्तराध्ययनसूत्र 6/1

इस अनन्त संसार में जितने अविद्यावान् या अज्ञानी जीव हैं वे दुःखी हैं। उनके दुःख उत्पन्न होता है। इस प्रकार अज्ञान दुःख का मूल कारण है। सम्यग्ज्ञान होने पर यह समझ में आ जाता है कि दुःख का कारण स्वयं का अज्ञान है। जीवन में बहुत-सी समस्याएँ अज्ञान, अन्धविश्वास एवं भ्रान्त धारणाओं के कारण उत्पन्न होती हैं। उन सबका समापन सम्यग्ज्ञान होते ही हो जाता है। अज्ञान रूपी मूल कारण के दूर होने पर दुःख के अन्य कारणों का भी निवारण सम्भव है। दुःख का एक अन्य कारण निरूपित करते हुए कहा गया है—

जे केइ सरिरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो।
मणसा कायवक्केणं, सव्वे ते दुक्खसंभवा॥

—उत्तराध्ययन सूत्र 6/12

जो कोई शरीर में आसक्त हैं, वर्ण और रूप में आसक्त हैं, मन, वचन एवं काया से सर्वथा आसक्त हैं वे सब दुःख को उत्पन्न करते हैं। इस गाथा से स्पष्ट होता है कि आसक्ति भी दुःख का कारण है। अविद्या या अज्ञान के समाप्त हो जाने या सम्यग्ज्ञान हो जाने पर भी दुःख तो रहता है। उस दुःख का एक कारण शरीर आदि पर आसक्ति है। शरीर पर आसक्ति होगी तो शरीर को सुखप्रद अन्य पदार्थों पर भी आसक्ति होगी। शरीर को तथा मन को अनुकूलता प्रदान करने वाले, उसमें निमित्त

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के सन् 2019 के जवाहरनगर, जयपुर चातुर्मास में प्रस्तुत आलेख।

बनने वाले व्यक्तियों पर भी आसक्ति होगी। आसक्ति का परिणाम दुःख है। अज्ञानी तो आसक्त होता ही है, किन्तु सम्यग्ज्ञान होने पर भी आसक्ति छूटने में समय लगता है। मन, वचन, काया तीनों की प्रवृत्ति आसक्ति के अनुरूप होती है तथा तीनों की प्रवृत्ति से आसक्ति सघन होती जाती है। जिन शरीर, पदार्थ एवं व्यक्तियों पर आसक्ति होती है उनके अस्वस्थ, विनाश या वियोग होने पर दुःख का अनुभव होता है, इसलिए आसक्ति दुःख का कारण है। यही नहीं राग के बिना आसक्ति नहीं होती और राग भी दुःख का कारण है। अनुकूल व्यक्ति एवं पदार्थों के प्रति राग उत्पन्न होता है तथा प्रतिकूल व्यक्ति एवं पदार्थों के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है। ये राग एवं द्वेष दोनों कर्मबन्धन के बीज अर्थात् मूल कारण हैं। ये भी दुःख को जन्म देते हैं। शरीर के प्रति आसक्त अज्ञानी व्यक्ति कामभोगों के लिए लालायित रहता है तथा उन भोगों में सुख समझता है। उत्तराध्ययनसूत्र में मृगापुत्र अपने माता-पिता से कहता है-

अम्म ताय! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा।

पच्छा कडुए-विवागा, अणुबंध-दुहावहा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र 19/12

हे माता-पिता! मैंने विष के समान फल देने वाले काम-भोग भोगे हैं, इनका फल बाद में कड़वा होता है तथा इनसे दुःख की परम्परा चलती रहती है। बत्तीसवें अध्ययन में भी कहा गया है-

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं,

सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।

-उत्तराध्ययन सूत्र 32/19

देवगति सहित समस्त लोक में काम-भोगों के प्रति आसक्ति से दुःख उत्पन्न होता है। सुखभोग के प्रति आसक्ति चाहे देवलोक में हो या मनुष्य लोक में, सर्वत्र दुःखकारी है। मनुष्य अपनी इन्द्रियों के विषयों का सेवन करते समय उनके मनोज्ञ लगने पर राग करता है तथा अमनोज्ञ लगने पर द्वेष करता है। जो जीव रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि विषयों में तीव्र राग करता है वह अकाल में विनाश को प्राप्त होता है तथा जो अमनोज्ञ के

प्रति तीव्र द्वेष करता है वह उसी समय दुःख को प्राप्त करता है।

विषयों से तृप्ति नहीं होती। अतः रूपादि विषयों में जो अतृप्त रहता है, असन्तुष्ट रहता है तो वह दुःखी होता है तथा दुःख दूर करने हेतु अदत्तादान, हिंसा, झूठ, परिग्रह आदि पापों के वर्धन में लग जाता है। इस प्रकार वह दुःख की परम्परा को बढ़ाता है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति तृष्णा से अभिभूत होता है त्यों-त्यों वह अनेक दोषों से युक्त हो जाता है। वह क्रोधादि से प्रदुष्टचित्त होकर कर्मों का संचय करता है एवं परिणाम में दुःख पाता है। (उत्तराध्ययनसूत्र 32/46) उत्तराध्ययनसूत्र में स्थूल रूप से दुःख का स्वरूप बताते हुए कहा गया कि जन्म भी दुःख है, जरा भी दुःख है, रोग भी दुःख है, मरण भी दुःख है। इस तरह संसार ही दुःख रूप है, जहाँ प्राणी क्लेश पाते हैं।

मुक्ति का उपाय-जब तक ज्ञानावरण आदि आठ कर्मों का संग है, वे सत्ता में एवं उदय में हैं तब तक जीव दुःखी रहता है, जैसा कि अधोलिखित गाथा में व्यक्त हुआ है-

कम्मसंगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहुवेयणा।

-उत्तराध्ययन सूत्र 3/6

कर्मों के संग से जीव मूढ़ बने रहते हैं, मोहयुक्त होते हैं फलस्वरूप दुःखी एवं बहुत वेदना वाले होते हैं। यहाँ स्पष्ट होता है कि जब तक ज्ञानावरणादि कर्मों से छुटकारा नहीं होता तब तक जीव मूढ़ बना रहता है। मूढ़ शब्द अज्ञान एवं मोह दोनों का सूचक है। अतः इन दोनों के रहते दुःख रहता ही है एवं जीव अमानुष योनियों में भटकता रहता है। आठवें अध्ययन में जिज्ञासा रखी गई-
अधुवे असासयम्मि संसारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाहं दुग्गइं न गच्छेज्जा।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 8/1

इस अधुव, अशाश्वत एवं दुःख प्रचुर संसार में क्या कार्य किया जाए कि जिससे दुर्गति में न जाना पड़े? इसका उत्तर देते हुए कहा गया-

विजहित्तु पुव्वसंजोगं,

न सिणेहं कहिंचि कुव्विज्जा।

असिणेह-सिणेह-करेहिं,

दोस पओसेहिं मुच्चए भिक्खू।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 8/2

दुर्गति में जाने अथवा संसार के दुःखों से मुक्त होने के इस गाथा में उपाय बताये गए-1. पूर्वसंयोग का त्याग 2. स्नेह या आसक्ति का सर्वत्र परिहार। 3. आसक्ति रखने वालों के प्रति भी अनासक्ति। इस प्रकार की साधना करने वाला साधक दोष-प्रद्वेष से मुक्त हो जाता है। राग-द्वेष रूपी दोषों से मुक्त होने पर वह दुर्गति में नहीं जाता है तथा मोक्षरूपी सद्गति की ओर उन्मुख होता है। पूर्व संयोगों का त्याग एवं नूतन आसक्ति का त्याग करने वाला साधक समस्त ग्रन्थियों एवं कलह का त्याग कर समस्त काम समूह का द्रष्टा बन जाता है तथा उनमें लिप्त नहीं होता। इस प्रकार द्रष्टाभाव भी दुःखमुक्ति एवं सद्गति का साधन है। दुःख से मुक्ति के अन्य उपायों की चर्चा भी उत्तराध्ययन सूत्र में प्राप्त होती है। 28वें अध्ययन में ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप को दुःख मुक्ति का मार्ग निरूपित किया गया है-

गाणं च दंसणं चैव, चरित्तं च तवो तथा।

एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 28/3

तत्त्वार्थ सूत्र में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र को मोक्ष का मार्ग निरूपित किया गया है। विशेषावश्यक भाष्य में ज्ञान एवं क्रिया को मोक्षोपाय बताया गया है, किन्तु उत्तराध्ययनसूत्र में ज्ञान, दर्शन, चारित्र के साथ तप को भी विशिष्ट स्थान दिया गया है। कथन की विभिन्न अपेक्षाओं या नयदृष्टि से विभिन्न उपाय कहे गये हैं।

ज्ञान, दर्शन आदि यद्यपि सभी जीवों में विद्यमान हैं, वे जीव के लक्षण भी हैं, किन्तु वे जब सम्यक् होते हैं, तभी दुःखमुक्ति के उपाय बनते हैं। क्योंकि सम्यग्दृष्टि होने पर ज्ञान सम्यक् होता है, ज्ञान सम्यक् होने पर चारित्र एवं तप सम्यक् होते हैं। इन सबके सम्यक् होने पर दुःख-मुक्ति स्वरूप मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। दृष्टि

सम्यक् होते ही कामभोगों में रुचि पर विराम लग जाता है, उनमें दोष दिखाई देने लगते हैं, अपने दुःख का कारण किसी अन्य को समझने का दृष्टिकोण समाप्त हो जाता है एवं व्यक्ति दुःख का कारण अपने भीतर खोजने लगता है। दुःख आत्मकृत होता है, परकृत नहीं, इसलिए उससे मुक्त होने का उपाय भी अपने ही भीतर है। बत्तीसवें अध्ययन में कहा गया है-

नाणस्स सब्वस्स पगासणाए,

अण्णाणमोहस्स विवज्जणाए।

रागस्स दोसस्स य संखएणं,

एणंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 32/2

फिर समस्त ज्ञान के प्रकाश से, अज्ञान तथा मोह का विवर्जन कर राग एवं द्वेष का पूर्णतः क्षय कर यह जीव एकान्त सुख रूप मोक्ष को प्राप्त करता है। मोक्ष में दुःख नहीं है। वहाँ जन्म, जरा, रोग एवं मरण का दुःख भी नहीं है, आसक्तिजन्य, राग-द्वेष जन्य कामभोग जन्य दुःख भी नहीं है। ज्ञान का पूर्ण प्रकाश होने पर अज्ञान एवं मोह समाप्त हो जाते हैं, राग-द्वेष आदि दोष समाप्त हो जाते हैं। भिन्न अपेक्षा से संयम एवं तप को भी मोक्ष का उपाय कहा गया है। तृतीय अध्ययन में कथन है-

चउरंगं दुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया।

तवसा धुयकम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 3/20

मनुष्य जन्म, धर्मश्रवण, धर्मश्रद्धा एवं संयम में पराक्रम स्वरूप चार अंगों को दुर्लभ जानकर जो संयम को स्वीकार करता है तथा तप से कर्मांशों को धुन डालता है वह शाश्वत सिद्ध हो जाता है। पच्चीसवें अध्ययन में भी यही बात कही गई है-

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।

जयघोस विजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 25/45

जयघोष एवं विजयघोष ने संयम एवं तप से पूर्व कर्मों का क्षय करके श्रेष्ठ सिद्धि को प्राप्त किया।

उत्तराध्ययनसूत्र (28/36) में भी सब दुःखों से मुक्ति हेतु संयम एवं तप से पूर्व कर्मों का क्षय करने की बात कही गई है। संयम के अन्तर्गत दर्शन, ज्ञान एवं चारित्र तीनों का ग्रहण हो जाता है तथा तप का पृथक् से कथन कर संयम एवं तप को भी मोक्षमार्ग के रूप में निरूपित किया गया है। पाँच समिति एवं तीन गुप्ति अर्थात् अष्ट प्रवचनमाता के सम्यक् पालन से भी मुनि शीघ्र ही संसार से मुक्त हो जाता है, ऐसा कथन चौबीसवें अध्ययन में इस प्रकार हुआ है-

एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी।

सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 24/27

अष्ट प्रवचनमाता का सम्यक् आचरण संयम एवं तप रूप है। अतः इससे भी संसार से मुक्ति सम्भव है।

दुःख मुक्ति का एक संक्षिप्त उपाय भी उत्तराध्ययन सूत्र में निर्दिष्ट है-छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं। (उत्तराध्ययन सूत्र 4/8) अर्थात् इच्छा का निरोध करने से भी जीव मोक्ष को प्राप्त करता है। इच्छा के निरोध में संयम एवं तप दोनों का समावेश हो जाता है। इन्द्रिय, मन आदि से भोगों की इच्छा का निरोध संयम है तथा अनशन आदि द्वादशविध तप में भी इच्छा का निरोध होता है-इच्छानिरोधस्तपः। यहाँ निरोध का अर्थ इच्छाओं का बलात् दमन नहीं है, अपितु ज्ञानपूर्वक इच्छा का शमन या उन्मूलन है। दमन में वे इच्छाएँ पुनः सिर उठा सकती हैं, किन्तु शमन में उनका उन्मूलन हो जाता है।

अठारहवें अध्ययन में सर्वसंगों से विनिर्मुक्त होने को मुक्ति का साधन बताया गया है-

सव्वसंगविणिमुक्के, सिद्धे हवइ णीरे।

-उत्तराध्ययनसूत्र 18/53

आत्मवाद

दुःख का अनुभव आत्मा को होता है, अतः जैनदर्शन आत्मा को भी स्वीकार करता है। ऐसी आत्मा को जो ज्ञान एवं दर्शन के लक्षण से युक्त है एवं संख्या में अनन्त हैं। यह चेतनाशील है एवं इसे जीव भी कहा गया

है। उत्तराध्ययन सूत्र में आत्मा एवं जीव शब्द एकार्थक हैं। तत्त्वार्थसूत्र में जीव के दो प्रकार निरूपित हैं-संसारी और मुक्त। मुक्त आत्मा को भी वहाँ जीव ही कहा गया है। जीव एक तत्त्व भी है एवं द्रव्य भी। बन्धन एवं मोक्ष की प्रक्रिया को समझने की दृष्टि से उसे तत्त्व कहा गया है तथा लोक के स्वरूप का प्रतिपादन करते समय उसे द्रव्य कहा गया है। उत्तराध्ययन सूत्र में जीव के अर्थ में पुरुष एवं नर शब्द का भी प्रयोग किया गया है। चार्वाक दर्शन आत्मा का पृथक् अस्तित्व स्वीकार नहीं करता। उसका कथन है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश इन पाँच भूतों के मिलने से शरीर में चेतना का आविर्भाव हो जाता है एवं शरीर के नाश के साथ ही चेतना का नाश हो जाता है। उपनिषदों में आत्मा को शाश्वत माना गया है। बौद्धदर्शन आत्मा को शाश्वत नहीं मानता तथा उसका पूर्णतः निषेध भी नहीं करता। उसमें ज्ञान सन्तति को ही चेतना के रूप में स्वीकार किया गया है। बौद्धदर्शन अनात्मवादी कहलाता है, किन्तु उसका कारण रूप, विज्ञान, वेदना, संज्ञा एवं संस्कार को आत्मस्वरूप नहीं मानना है। जैनदर्शन अनेकान्तवादी है। इसमें द्रव्य की दृष्टि से जीव को स्यात् शाश्वत एवं नारक आदि पर्यायों की दृष्टि से स्यात् अशाश्वत कहा गया है। उत्तराध्ययन सूत्र के 36वें अध्ययन में 'जीवाजीव विभक्ति' में जीव का विस्तृत निरूपण हुआ है। वहाँ सिद्धों के शुद्ध जीव का स्वरूप निरूपित करते हुए कहा गया है-

अरूविणो जीवघणा णाणदंसणसण्णिया।

अउलं सुहं संपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 36/66

सिद्ध जीव ज्ञान-दर्शन से सम्पन्न होते हैं, अरूपी होते हैं तथा अतुल सुख को प्राप्त होते हैं, जिसकी कोई उपमा नहीं दी जा सकती। संसारस्थ जीव ज्ञान-दर्शन गुण से युक्त होते हैं, उन्हें त्रस एवं स्थावर के भेद से दो प्रकार का बताया गया है। इसमें स्थावर के तीन प्रकार कहे गए हैं-पृथ्वीकाय, अप्काय एवं वनस्पतिकाय। तेजस्काय एवं वायुकाय के साथ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय एवं

पञ्चेन्द्रिय जीवों को त्रस कहा गया है। तत्त्वार्थसूत्र में 'तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः' सूत्र के निर्माण में उत्तराध्ययनसूत्र आधार रहा हो, ऐसा प्रतीत होता है, अन्यथा प्रायः तेजस्काय एवं वायुकाय सहित सभी एकेन्द्रिय जीवों को स्थावर माना जाता है।

उत्तराध्ययनसूत्र में एकेन्द्रिय जीवों के सूक्ष्म एवं बादर भेद करते हुए उनके पर्याप्त एवं अपर्याप्त स्वरूप का भी सोदाहरण वर्णन किया गया है। द्वीन्द्रियादि जीवों के भी पर्याप्त-अपर्याप्त भेदों का वर्णन हुआ है। इन सभी जीवों के जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थितिकाल का भी निर्देश प्राप्त है। नारक, मनुष्य एवं देवों का भेदोपभेदों के साथ कथन करते हुए उनकी आयु का भी उल्लेख किया गया है। आत्मा तो जैनदर्शन का मूलाधार है। उसको स्वीकार करने पर ही कर्मसिद्धान्त की एवं लोक की चर्चा की जा सकती है।

लोकवाद

आचारांग सूत्र में कहा गया है—जे आयावादी लोयावादी कम्मावादी किरियावादी। जो आत्मवादी है अर्थात् आत्मा को मानता है वह लोकवादी भी है, कर्मवादी भी है एवं क्रियावादी भी है। जैनदर्शन में ये चारों विशेषताएँ सम्प्राप्त हैं। आत्मा है तो वह अपने कृत कर्मों का फल लोक में प्राप्त करती है, इसलिए लोक को भी स्वीकार किया गया है। जैनदर्शन में लोक को धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय एवं काल इन षड्द्रव्यों का समूह माना गया है। उत्तराध्ययनसूत्र में कहा भी है—

धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गल जंतवो।

एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं॥

—उत्तराध्ययनसूत्र 28/7

धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव इनको जिनेन्द्रों द्वारा लोक कहा गया है। कहीं काल को छोड़कर लोक को पंचास्तिकायात्मक कहा गया है। एक भिन्न नय से 36वें अध्ययन में जीव एवं अजीव को लोक कहा है। लोक जीवाजीवात्मक है, इसमें जीव भी है अजीव

भी हैं। जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए। उत्तराध्ययनसूत्र 36/2 एवं धर्मास्तिकाय आदि पाँच द्रव्य अजीव हैं एवं जीवास्तिकाय जीव है। धर्मास्तिकाय ऐसा द्रव्य है जो जीव और पुद्गल की गति में सहायक होता है तथा सम्पूर्ण लोक में व्याप्त है और वर्ण, गन्ध, रस एवं स्पर्श से रहित है। अधर्मास्तिकाय अन्य द्रव्यों की स्थिति में सहायक निमित्त होता है। यह भी वर्णादि से रहित है तथा समस्त लोक में व्याप्त है। आकाश समस्त द्रव्यों को अवगाहन देता है, सब द्रव्य आकाश में रहते हैं। यह भी वर्णादि से रहित है। यह लोक के अतिरिक्त अलोक में भी व्याप्त है। धर्म, अधर्म एवं आकाश द्रव्य से एक-एक हैं। काल को वर्तना लक्षण वाला तथा जीव को उपयोग लक्षण वाला कहा गया है। पुद्गल द्रव्य स्पर्श, रस, गन्ध एवं रूप से युक्त होता है। इसके अतिरिक्त शब्द, अन्धकार, उद्द्योत, प्रभा, छाया, आतप आदि को भी पुद्गल की श्रेणी में रखा गया है, यथा—

सद्धंयार—उज्जोओ, पभा छायाऽऽतवो इ वा।
वण्ण—रस—गंध—फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं॥

—उत्तराध्ययनसूत्र 28/12

जीव का इसमें कुछ विस्तृत लक्षण भी प्राप्त होता है, जिसके अनुसार ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य एवं उपयोग को जीव का लक्षण निरूपित किया गया है। (उत्तराध्ययनसूत्र 28/11)

द्रव्य, गुण एवं पर्याय

द्रव्य, गुण एवं पर्याय के लक्षण यदि किसी आगम में प्राप्त होते हैं तो वह उत्तराध्ययनसूत्र है। इन्हें परिभाषित करने वाली गाथा है—

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा।

लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे॥

—उत्तराध्ययनसूत्र 28/6

गुणों का आश्रय द्रव्य है, अनेक गुण एक द्रव्य के आश्रित रहते हैं तथा पर्याय द्रव्य एवं गुण दोनों के आश्रित होती है। तत्त्वार्थ सूत्र में गुण एवं पर्यायवान् को द्रव्य कहा है। गुणों को द्रव्य के आश्रित बताते हुए यह भी

कहा गया है कि गुणों में अन्य गुण नहीं रहते हैं। गुण द्रव्य के सहभावी होते हैं तथा पर्याय क्रमभावी होती है। पर्याय के स्वरूप का निरूपण करने वाली उत्तराध्ययन सूत्र में एक अलग गाथा भी है-

एगत्तं च पुहत्तं च, संख्या संठाणमेव य।
संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 28/13

एकत्व, पृथक्त्व, संख्या, संस्थान, संयोग एवं विभाग को भी पर्याय का लक्षण प्रतिपादित किया गया है, क्योंकि ये द्रव्य में रहकर पर्याय का ही ख्यापन करते हैं। एक द्रव्य में एकत्व पर्याय होती है, संख्या का बोध भी पर्याय का बोध है, आकार विशेष भी पर्याय है। दो द्रव्यों या वस्तुओं के संयोग एवं विभाग को भी जैनदर्शन में पर्याय माना गया है। वैशेषिक दर्शन में पृथक्त्व, संख्या, संयोग एवं विभाग को गुण स्वीकार किया गया है।

नवतत्त्व

षडद्रव्य तो लोक-व्यवस्था का प्रतिपादन करते हैं, किन्तु जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, बन्ध, निर्जरा एवं मोक्ष इन तत्त्वों का बन्धन एवं मुक्ति की प्रक्रिया को समझने की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। उत्तराध्ययन सूत्र में इन नवतत्त्वों का कथन इस प्रकार हुआ है-

जीवाजीवा य बंधो य, पुण्णं पावाऽऽसवो तथा।
संवरो निज्जरा मोक्खो, संतेए तहिया नव।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 28/14

इन तत्त्वों का एक साथ विवेचन तो उत्तराध्ययन सूत्र में नहीं हुआ है, किन्तु विभिन्न अध्ययनों में अलग-अलग स्थानों पर इन तत्त्वों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है।

कर्मसिद्धान्त एवं पुनर्जन्म

कर्मसिद्धान्त जैनदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है। उत्तराध्ययन सूत्र के 33वें कम्मपयडी (कर्मप्रकृति) अध्ययन में आठ कर्मों, उनकी उत्तर प्रकृतियों, कर्मों के स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध, प्रदेशबन्ध आदि का विवेचन

हुआ है। इस अध्ययन के अतिरिक्त भी विभिन्न अध्ययनों में कर्मसिद्धान्त पुष्ट हुआ है। उत्तराध्ययन सूत्र में यत्र-तत्र वर्णित कर्मसिद्धान्त के कतिपय बिन्दु हैं-

1. कृत कर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है-चित्तसम्भूतीय नामक 13वें अध्ययन में इस तथ्य को पुष्ट किया गया है कि जो जैसा कर्म करता है, उसका वैसा फल स्वयं को भोगना होता है, ज्ञातिजन, मित्रवर्ग, पुत्र और बान्धव उसका दुःख नहीं बँटा सकते। वह जीव अकेला स्वयं दुःख का अनुभव करता है, क्योंकि यह ध्रुव नियम है कि कर्म कर्ता का अनुगमन करता है-कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं। (उत्तराध्ययनसूत्र 13/23)

मनुष्य भले ही परिवारजनों के निमित्त पापकर्म करता हो, किन्तु जब उनका वेदनकाल आता है तो बान्धवजन उसका हिस्सा नहीं बँटाते हैं। पाप का दुष्परिणाम स्वयं को भोगना होता है यह बात चतुर्थ अध्ययन की निम्नांकित गाथा से पुष्ट होती है-

संसारमावन्न परस्स अट्ठा,
साहारणं जं च करेइ कम्मं।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले,
न बंधवा बंधवयं उर्वेत्ति।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 4/4

सुख-दुःख दोनों का कर्ता एवं विकर्ता जीव स्वयं है। वह ही सन्मार्ग में प्रस्थित होने पर अपना मित्र होता है तथा उन्मार्ग में प्रस्थित होने पर अपना शत्रु बनता है।

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्टियसुपट्टिओ।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 20/37

मनुष्य जब तक अपने दुःख का कर्ता दूसरों को मानता रहेगा तब तक वह दुःख मुक्त नहीं हो सकता।

2. कृत कर्मों का फल अवश्य भोगना होता है-शुभ-अशुभ कर्मों का फल भोगे बिना मुक्ति नहीं है। चतुर्थ अध्ययन में कहा गया है कि जिस प्रकार सेंध लगाते हुए पकड़ा गया पापी चोर अपने कर्म के कारण दण्डित होता है उसी प्रकार इस लोक एवं परलोक में

प्राणी कृत कर्मों से दण्डित होता है, क्योंकि किए हुए कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं है—कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि। (उत्तराध्ययनसूत्र 4/3) 'कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि' पंक्ति का प्रयोग उत्तराध्ययन सूत्र में दो स्थानों पर हुआ है—चतुर्थ अध्ययन में एवं तेरहवें अध्ययन की अधोलिखित गाथा में—

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं,

कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।

अत्थेहिं 'कामेहिं' य उत्तमेहिं,

आया ममं पुण्णफलोववेए।।

—उत्तराध्ययनसूत्र 13/10

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती कहते हैं—हे चित्त! मैंने पूर्व जन्म में सत्य और शौचमय शुभ कर्म किए थे। आज मैं उनका फल भोग रहा हूँ। क्या तू भी वैसा ही भोग रहा है? तब चित्तमुनि ने कहा था—मनुष्यों के समस्त आचरित सत्कर्म सफल हैं। कृत कर्मों का मोक्ष नहीं है, अर्थात् उनका फल प्राप्त होता ही है। उत्तम अर्थों एवं कामों से मेरी आत्मा पुण्य फलों से उपेत है।

3. कर्म के कारण जीव नाना योनियों में भटकता है—शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार मनुष्य परभव में जाता है—

तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं।

कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छइ उ परं भवं।।

—उत्तराध्ययनसूत्र 18/17

उत्तराध्ययन सूत्र के तृतीय अध्ययन में कहा है—

एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया।

एगया आसुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ।।

कम्मसंगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहुवेयणा।

अमाणुसासु जोणिसु, विणिहम्मंति पाणिणो।।

—उत्तराध्ययनसूत्र 3/3 एवं 6

कृत कर्मों के अनुसार जीव कभी देवलोक में, कभी नरकों में, कभी आसुरकाय में जन्म लेता है। कर्मों के संग से मूढ़ बने प्राणी दुःखी होते हैं एवं बहुत वेदना

का अनुभव करते हैं। वे मनुष्य से भिन्न योनियों में भटकते रहते हैं।

आठवें अध्ययन में भी निगदित है—मंदा निरयं गच्छंति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं (उत्तराध्ययनसूत्र 8/7) पाप दृष्टि के कारण मन्द प्राणी प्राणवध करते हुए नरक में जाते हैं।

4. कर्मलेप की अधिकता के कारण बोधि सुलभ नहीं—कर्मों का बोझ जितना अधिक होगा उतना ही बोधि होना दुर्लभ है। सम्यग्दर्शन पूर्वक ज्ञान का होना ही बोधि है। बोधि होने पर ही कोई दुःख-मुक्ति के मार्ग को समझता है एवं उस पर चल पाता है। अतः सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र को भी बोधि कहा गया है। स्थानांग सूत्र में बोधि के यही तीन प्रकार हैं—1. ज्ञानबोधि 2. दर्शनबोधि 3. चारित्रबोधि। उत्तराध्ययन सूत्र प्रतिपादित करता है कि जो कर्मों के अधिक लेप से लिप्त जीव हैं उनके सम्यक्बोधि होना दुर्लभ है—बहुकम्मलेवलित्ताणं बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं। (उत्तराध्ययनसूत्र 8/15)

5. क्रोधादि कषायों एवं कामलोलुपता के कारण अधम गति—उत्तराध्ययनसूत्र के नवम अध्ययन में कहा है—कामभोग शल्य हैं, विष हैं, ये आशीविष सर्प के सदृश हैं, इनको चाहने वाले बिना इच्छा के दुर्गति में जाते हैं। मनुष्य क्रोध से अधोगति में जाता है, मान से अधम गति में जाता है, माया से सुगति का प्रतिघात होता है तथा लोभ से दोनों प्रकार का ऐहिक और पारलौकिक भय होता है। (उत्तराध्ययनसूत्र 9/53-54)

कर्मसिद्धान्त के साथ पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी जुड़ा हुआ है। जब तक जीव अष्टकर्मों से मुक्त नहीं होता तब तक अपने द्वारा बाँधे गए शेष कर्मों का फल भोगने के लिए वह भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेता है। चतुर्दश अध्ययन में स्पष्ट कथन है—सकम्म-सेसेण पुराकएणं, कुलेसु दग्गेषु य ते पसूया। (उत्तराध्ययनसूत्र 14/2) पुरोहित पुत्रों ने पूर्वकृत अपने शेष कर्मों का फल भोगने के लिए उदग्र (उन्नत) कुलों में

जन्म लिया। उत्तराध्ययन सूत्र में पूर्वजन्म के स्मरण एवं पूर्वोपार्जित कर्मफल के रूप में पुनर्जन्म के पोषक कथन अनेकत्र उपलब्ध हैं।

पूर्वजन्म का स्मरण—भृगु पुरोहित के पुत्रों ने पूर्व जन्म का एवं वहाँ आचरित तप-संयम का स्मरण किया—सरित्तु पोरणिगं तत्थ जाइं, तहा सुचिण्णं तव संजमं च। (उत्तराध्ययनसूत्र 14/5) पूर्वजन्म का स्वयं को स्मरण मोह के उपशान्त होने पर होता है। नमिराजर्षि के सम्बन्ध में यही कहा गया है—उवसंतमोहणिज्जो, सरइ पोरणिगं कम्मं (उत्तराध्ययनसूत्र 9/1)। वे देवलोक से च्यव कर मनुष्यलोक में उत्पन्न हुए तब मोह के उपशान्त होने पर उन्हें पूर्वजन्म का स्मरण हुआ एवं पुत्र को राज्य सौंपकर अभिनिष्क्रमण कर गए। बीसवें अध्ययन में मृगापुत्र को भी एक मुनि को देखकर जातिस्मरण (पूर्वजन्म का स्मरण) हो गया था एवं वे भी प्रव्रज्या पथ पर चल दिये थे।

आचाराङ्गसूत्र में निगदित है कि जीव या तो स्वयं

पूर्वजन्म का स्मरण कर लेता है, या केवलियों से अथवा श्रुतज्ञानियों से सुनकर अपने पूर्वजन्म को जान सकता है।

पूर्वोपार्जित कर्मफल का भोग—जिन उपार्जित कर्मों का फल भोगना शेष है, उनका फल भोगने के लिए जीव को किसी योनि में पुनः जन्म ग्रहण करना होता है। इसकी पुष्टि उत्तराध्ययनसूत्र में अनेकत्र हुई है। तृतीय अध्ययन की गाथा-6, षष्ठ अध्ययन की गाथा-1, अठारहवें अध्ययन की गाथा-25 आदि अनेक सन्दर्भ इसकी पुष्टि करते हैं। एक गाथा उद्धृत है—

पडंति णरए घोरे, जे णरा पावकारिणो।

दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारियं।।

—उत्तराध्ययनसूत्र 18/25

जो मनुष्य पाप करते हैं वे घोर नरक में गिरते हैं, अर्थात् पाप का फल भोगने के लिए नरक में जन्म ग्रहण करते हैं तथा धर्म का आचरण करके वे दिव्य गति (देवगति या सिद्धगति) को जाते हैं।

(शेषांश आगामी अङ्क में क्रमशः)

लोक भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत्स

काल अनादि से भ्रमता आया लोकवासी
भटक रहा कब से तू लाख चौरासी
षड्द्रव्यों का सूमह लोक है कहलाता
प्रतीति इसमें मिथ्या सुखों की कर स्व को बहलाता।
गति में सहायक निमित्त बनता पहला द्रव्य 'धर्मास्ति'
लोक के लिए स्थिरता का गुण दूजा 'अधर्मास्ति'
लोक-अलोक का आश्रय, 'आकाशास्ति' है आधार
'काल द्रव्य' करता रहता वर्तन का प्रहार।
'पौद्गलिक' लीलाएँ सारी खान-पान विचार और भाषा
ज्ञान दर्शन चेतनामय, 'जीव' की परिभाषा
जीव पुद्गल संग नाचते, सब कर्मों की है उपाधि
कोई ना कर्ता, हर्ता लोक का यह अनन्त अनादि।
अपने पुण्य-पाप से जीव सुख-दुःख को है पाता

अपने कृत कर्मों के कारण ही कार्मिक फल है आता।
ऊपर से नीचे तक लोक चौदह रज्जु परिमाण
बिन्दु मात्र भी हस्ती नहीं तेरी, क्यों करता अभिमान।
अष्ट कर्म के नाश से मिटती भव की बाधा है
स्व स्थित होने से जीव अग्रलोक स्थिति को पाता है।
जो तुझ में है लोकाग्र अवस्थिति की अभिलाषा
जानकर लोक स्वरूप को समझ लोक की परिभाषा।
षड्द्रव्यात्मक लोक में भ्रम रोग रहा भटकाता
दुःखदाई लोक में निज को भटकने से है बचाना
निजलोक में रमण कर, स्व गुण है प्रकटाना
'शिवराज ऋषि' ने अप्रमत्त हो 'लोक भावना' है भायी
अनुप्रेक्षा से आचरित कर त्वरित मुक्ति है पायी।
'लोक भावना' की अनुप्रेक्षा कर ले रे भवी प्राणी!
दिखला रही मुक्तिपथ हमको 'मुदित' जिनवाणी।।

-1101, बुड साइड, जी साउथ गोखले रोड,

प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र) 9892417640

जीवन का स्वप्न

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी

किसी भी मकान का कागज पर या जमीन पर अवतरण होने से पूर्व जैसे मानस कल्पना में उसका अवतरण होता है वैसे ही जीवन को यदि हम सुन्दर आकार देना चाहते हैं तो हमें जीवन का एक सम्यक् लक्ष्य निश्चित करना चाहिए। जीवन में कुछ अच्छा करने के हमारे सपने होने चाहिए।

गाड़ी आकर्षक चाहिए।

बंगला बड़ा चाहिए।

पत्नी रूपवती चाहिए।

धन अकूत चाहिए।

प्रभाव ज़ोरदार चाहिए।

फर्नीचर चित्ताकर्षक चाहिए।

मोबाइल ब्रॉण्डेड चाहिए।

शरीर स्वस्थ चाहिए।

वाणी प्रभावशाली चाहिए।

संक्षेप में,

सब कुछ अच्छा ही मिलना चाहिए।

कुछ लोगों के यही मनोरथ होते हैं।

किसी के आँसू पौछने चाहिए। किसी को समाधि देनी चाहिए। मेरी शक्ति का सदुपयोग होना चाहिए।

जीवन में सत्कर्मों की हारमाला रचनी चाहिए। भवान्तर उज्ज्वल होकर रहे, ऐसे पुण्यकार्य जीवन में होते रहने चाहिए। प्रभु के दर्शन-वन्दन और गुरुदेव की उपासना होती रहनी चाहिए।

संक्षेप में,

जीवन में अच्छा करते रहना चाहिए।

कुछ लोगों के ये ही सपने होते हैं।

हमारा अन्तःकरण निर्दोष रहना चाहिए। कृतज्ञता और उदारता-ये दोनों गुण हमें आत्मसात् होने चाहिए।

पवित्रता हमारे जीवन का सौभाग्य बन जानी चाहिए। प्रेम हमारा स्वभाव बन जाना चाहिए।

संक्षेप में,

जीवन में अच्छा बनकर ही रहना चाहिए।

कुछ लोगों के ये ही मनोरथ होते हैं।

प्रथम प्रकार है सपनों के केन्द्र में पुण्य नहीं, अपितु पदार्थ है।

दूसरे प्रकार के मनोरथों के केन्द्र में पदार्थ नहीं, अपितु पुण्य है।

जबकि, तीसरे प्रकार के अरमानों के केन्द्र में पदार्थ भी नहीं है, पुण्य भी नहीं है, मात्र प्रेम है और हैं मात्र परमात्मा।

अलबत्ता,

प्रत्येक व्यक्ति के अपने-अपने सपने और अरमान पूरे होते ही हैं ऐसा नहीं है, परन्तु इन सपनों के आधार पर मन की व्यग्रता, मन की स्वस्थता और मन की प्रसन्नता निश्चित होती रहती है, निर्णीत होती रहती है।

एक महत्त्वपूर्ण बात,

समझदार व्यक्ति नहीं चाहता कि दुर्जन के जीवन में जो भी दुष्कार्य होते हैं वे मेरे जीवन में भी हों।

व्यभिचार और दुराचार, खून और आवारागर्दी, मारपीट और दगाबाजी इन तमाम प्रकार के अकार्यों से समझदार और सज्जन अपने आपको दूर ही रखना चाहता है।

हाँ,

झोंपड़पट्टी में और गन्दी बसावटों में रहने वाले गरीबों के घरों में जो सस्ती और गन्दी सामग्रियाँ होती हैं ऐसी सामग्रियाँ अमीर इंसान कभी अपने घर में नहीं आने देता।

चुभने वाला प्रश्न यह है कि आवारा और कठोर, नीच और नालायक लोगों के मन में जैसे गन्दे विचार और कनिष्ठ मनोरथ, विकृत सपने और तुच्छ विचारधारा चलती है वैसे मलिन विचार आदि हमारे मन में नहीं चलते, यह हम विश्वास के साथ कह सकने की स्थिति में हैं भला ?

याद रखना,

हम 'पाने' में स्वतन्त्र नहीं हैं। पुण्य और पुरुषार्थ दोनों का संयोग होता है तभी हमें इच्छित को पाने में सफलता मिलती है।

तो साथ ही, हम 'करने' में भी स्वतन्त्र नहीं हैं। सानुकूल संयोग, अपेक्षित सामग्री और आवश्यक साहस हो तभी हम इच्छित कर सकते हैं।

परन्तु,

'सोचने' के मामले में हम सम्पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं।

कल्पना में चढ़ जाना हो तो भी हम स्वतन्त्र हैं तो भावनाओं के आसमान में उड़ना हो तो भी हम स्वतन्त्र हैं। गटर जैसे कलुषित अरमानों में मन को व्यस्त रखना हो तो भी हम स्वतन्त्र हैं तो गंगाजल जैसे उत्तम मनोरथों में मन को रत रखना हो तो भी हम स्वतन्त्र हैं।

संक्षेप में,

सरोवर-मत्स्य के सम्बन्धों की तरह शुभ अरमानों के साथ आत्मा को जोड़कर रखना चाहते हों तो दुनिया की कोई ताकत ऐसा करने से हमें नहीं रोक सकती और मच्छीमार-मछली के सम्बन्ध की तरह मलिन विचारों में ही मन को व्यस्त रखना हो तो स्वयं परमात्मा भी हमें बचा नहीं सकते।

विष-अमृत के बीच यदि हम अमृत का ही चयन करते हैं तो अशुभ कल्पना और शुभ भावना के बीच हमें शुभ भावना को ही चुनना है।

-लाइफ कन्सट्रक्शन पुस्तक से साभार

पाकर दर्शन आज गुरु के

(तर्ज :: थाली भरकर लायी रे खीचड़ो...)

श्री गजेन्द्र कुमार जैन

पाकर दर्शन आज गुरु के, हुआ धन्य मैं आज जी।

चौथे पद के धारक गुरुवर,

जिनशासन के ताज जी।।टेर।।

मारवाड़ के जोधाणा में, हुआ जन्म जब एक विशेष

धूम मची थी घर के मांही, खुश थे अचलचन्दजी सेठ
माँ छोटा भी पुलकित हो गयी,

पुत्र रत्न को पाय जी।।1।

वैशाख शुक्ल तेरस का दिन था, मान गुरु ने दीक्षा ली

रत्नसंघ की शान बढ़ाकर, सन्तवृन्द की वृद्धि की

वैशाख शुक्ल प्रथमा के दिन जब,

पायी पदवी खास जी।।2।

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत आदि,

सब भाषा को सीख लिया

आगम ज्ञान में रुचि रखकर, तत्त्वज्ञान परिपुष्ट किया
राजस्थान से हरियाणा तक,

विचरे मुनिवर मान जी।।3।

क्षमा, दया की प्रतिमूर्ति है, मान गुरुवर मुनि महान्

शान्त, सौम्यता, तेज के कारण,

ऊँची है जिनशासन शान

उपाध्याय के नाम को सुमरो,

कर लो स्व-कल्याण जी।।4।

गुरु हमारे हम हैं गुरु के, भाव हमेशा नित्य रहे

कैसी भी हो विपदा-संकट, अपने पद पर अड़िग रहे

जीवन्त रहेंगे दिल में मेरे, करता हूँ गुणगान जी।।5।।

संघ-सेवा की एक भावना, यही हमेशा रहती है

'गजेन्द्र' के सिर हस्त रहे प्रभु, मम जिह्वा यह कहती है

जो कुछ भी हूँ जैसा भी हूँ, चरणों की हूँ धूल जी।।6।।

-आध्यात्मिक शिक्षा समिति, जयपुर, ए 9,

महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015

पर्यावरण-चेतना एवं संरक्षण

डॉ. एन. के. खींचा (सेवानिवृत्त आर.ए.एस.)

आज समग्र विश्व को पर्यावरण असन्तुलन की चिन्ता सता रही है। पृथ्वी तापमान (ग्लोबल-वार्मिंग) के कारण समस्त जीव-जगत् एवं मानवता संतप्त है। इन सब के मूल में है तृष्णा एवं असंयम। पर्यावरण प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है-अमर्यादित भोगोपभोग। सीमित प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन हो रहा है। प्राकृतिक सम्पदा का दोहन एक प्रकार से शोषण है, भावी पीढ़ी के लिए अभिशाप है। कृत्रिम उर्वरकों, कीटनाशकों एवं रसायनों से भूमि बञ्जर एवं दूषित होती जा रही है। वन भूमियों का प्रतिशत निरन्तर घटता जा रहा है। अत्यधिक भोग-लिप्सा के लिए अनगिनत मूक-मासूम प्राणियों की बेतहाशा हिंसा बढ़ रही है। जिसके कारण जैन संस्कृति का बहुमूल्य सूत्र परस्परोपग्रहो जीवानाम्¹ खण्डित हो रहा है। जैन संस्कृति के 24वें तीर्थङ्कर भगवान महावीर स्वामी ने लोभ-विजय,² भगवान बुद्ध ने तृष्णा क्षय³ तथा महात्मा कबीर ने सन्तोष धन⁴ की देशना देकर पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का महत्त्व बतलाया। वस्तुतः जैन संस्कृति की प्रत्येक विधा, पर्यावरण का मित्र है। पर्यावरण प्राकृतिक जीवन का ही दूसरा नाम है।

भाव शुद्धि

जैन संस्कृति में भावों की विशुद्धि पर बल दिया गया है। कहा भी गया है कि प्रमाद भाव⁵ आलस्य, त्याग कर भाव शुद्धि करें। भाव शुद्धि से सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव,⁶ समभाव, सहोदर, सहचर भाव पुष्ट होता है। सभी प्राणिमात्र के प्रति वात्सल्य, करुणा, मुदिता पुलकित होती है। ठाणांगसूत्र-1 में कहा गया है कि- 'एगे आया' सभी प्राणियों में आत्मा एक है अर्थात् स्वरूप से समान है।

अहिंसा

जैन संस्कृति का मूल मन्त्र है-अहिंसा⁷। अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। अहिंसा परमो धर्म⁸ बतलाया गया है। जैन दर्शन अहिंसा मूलक है। अहिंसा एक क्रिया है, आचार है। इसीलिए आचारः प्रथमो धर्म⁹ कहा गया है। जीवों का पारस्परिक उपकार, सहकार भाव एवं मैत्री भाव ही पर्यावरण सन्तुलन है। जैन संस्कृति का मूल आधार पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है। जहाँ अहिंसा परम धर्म है तथा हिंसा महा पाप है। जीव दया का जैन संस्कृति में माहात्म्य है।

जैन संस्कृति के आगमों में यह देशना रही है कि किसी भी जीव की हिंसा न करें।¹⁰ हिंसा ही दुःख और महा अन्धकार है। सभी प्राणी जीना चाहते हैं।¹¹ कोई भी जीव मरना नहीं चाहता है।¹² अतः किसी भी त्रस और स्थावर जीव का हनन न करें। जैसे हमें दुःख प्रिय नहीं है वैसे ही किसी भी जीव को दुःख प्रिय नहीं है।¹³ अतः सभी प्राणियों का हित अहिंसा में है। जीव वध का सोच मात्र भी हिंसा ही है। जीव-हिंसा का परित्याग करें। राग और द्वेष की अनुत्पत्ति अहिंसा है। हिंसक चिन्तन से कर्मबन्ध होता है। भाव मलिन होने से चित्त अशुद्ध होता है, जिसके कारण पर्यावरण प्रदूषित होता है। जो अप्रमत्त है¹⁴ वह अहिंसक है जो प्रमत्त है, वह हिंसक है। अतः अहिंसा परम धर्म है। हिंसा का कारण कषाय भावना है। कषाय¹⁵ यानी कि राग-द्वेष, मोह, मान, माया, लोभ को उत्पन्न न होने देना ही अहिंसा है। अहिंसा में सबका कल्याण निहित होता है। 24वें तीर्थङ्कर महावीर की देशना रही है कि हिंसा से बचें।¹⁶ जिसके लिए प्रमाद न करें। प्रमाद अर्थात् अपने स्वभाव में न रहना। आत्म

स्वरूप बनाये रखना ही आत्महित है। आत्महित ही पर्यावरण शुद्धि है।

तीर्थङ्कर महावीर ने देशना दी कि बाहरी विजय के बजाय आन्तरिक विजय, आत्मविजय, कषाय विजय इन्द्रिय विजय प्राप्त करें। बाह्य युद्ध से क्या मिलेगा?¹⁷ अतः अन्तर्मुखी बनकर पर्यावरण संरक्षण करें।

कर्मादान

जीवन की तीन अनिवार्यताएँ रोटी, कपड़ा और मकान आवश्यक हैं, किन्तु 'मूर्च्छा भाव' से (मूर्च्छा परिग्रहो वुत्तो) से परिग्रह नहीं बढ़ावें। आचरण की दृष्टि से हेय, ज्ञेय एवं उपादेय सामग्री का पर्यावरण दृष्टि से परिष्कार करें। पर्यावरण एवं जीवन शुद्धि के लिए जैन संस्कृति में पन्द्रह कर्मादानों¹⁸ से बचने पर बल दिया गया, इससे अशुद्ध आजीविका से भी बचा जा सकता है। निषिद्ध पन्द्रह कर्मादान निम्नलिखित है-

1. अंगार कर्म अग्नि से ईंट, कोयला, चूना, अस्त्र आदि बनाना।
2. वन कर्म वृक्ष आदि को काटकर व्यवसाय करना।
3. साडी कर्म शकट कर्म।
4. भाटी कर्म लकड़ी सम्बन्धी व्यवसाय।
5. फोडी कर्म विस्फोटकों से खनन आदि।
6. दन्त वाणिज्य हाथी दाँत, गाय कड़काल, उल्लू के नाखून आदि का व्यवसाय करना।
7. लाख वाणिज्य लाख, चपड़ी, छाल का व्यवसाय।
8. रस वाणिज्य मदिरा आदि रसों का व्यवसाय।
9. विष वाणिज्य जहरीले पदार्थ, प्राणघातक वस्तुओं का व्यवसाय।
10. केश वाणिज्य दास, दासी, पशु का क्रय-विक्रय आदि।
11. जन्त पीलण कर्म घाणी, कोल्हू आदि यन्त्रों से पीलन आदि।

12. निल्लंछण कर्म बैल आदि को नपुंसक बनाने का कर्म।

13. दवग्निदावणया जंगलों में आग लगाना।

14. सरदहतलाय जलाशयों को सुखाना आदि।

सोसणया

15. असइजण वेश्यावृत्ति, व्यभिचार, आदि का पोषणया व्यवसाय करना या सहयोग करना।

इच्छा परिमाण व्रत परिग्रह परिमाण व्रत

जैन संस्कृति में शुद्धि के मार्ग की बाधाएँ-इच्छा¹⁹ तृष्णा, कामना एवं चाह आदि को बतलाया गया है। प्रायः व्यक्ति के जीवन में इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त होती हैं। इच्छा/कामना से मुक्ति के लिए अपरिग्रह²⁰ का मार्ग बतलाया गया है। अपरिग्रहव्रत अति भोगाचार का नियामक है। पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण के लिए जैन संस्कृति में अपरिग्रह मूल मन्त्र है। तीर्थङ्कर महावीर ने इच्छा-निरोध त्याग²¹ एवं परिग्रह-परिमाण व्रत²² की देशना दी, जिससे व्यक्ति प्रवृत्ति से निवृत्ति, ज्ञान से अज्ञान की ओर, साधना से साध्य की ओर, अहम् से वयम की ओर तथा बहिर्मुखता से अन्तर्मुखता की ओर बढ़ेगा, जिससे पर्यावरण पावन बनेगा। व्यक्ति के अन्तर्मुखी होने से जीवन में शान्ति, सन्तोष तथा समता विकसित हो सकेगी। आत्मा के विभाव का मूल कारण है-क्रोध, मान, माया और लोभ। इनके कारण ही पर्यावरण असन्तुलित होता है। जैन संस्कृति के प्रभाव से क्रोध को क्षमा में, मान को मार्दव में, माया को आर्जव में तथा लोभ को सन्तोष में रूपान्तरित (Transformation) किया जा सकता है, जो कि श्रावकाचार²³ से सम्भव है।

श्रावकाचार एवं आगम सूत्र

श्रावकाचार (जैन जीवन शैली) अपने आप में पर्यावरण संरक्षण का प्रतिबिम्ब है। आगम आचाराङ्गसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, प्रश्न व्याकरणसूत्र, समवायाङ्गसूत्र, तत्त्वार्थसूत्र, उपासक-

दशाङ्गसूत्र, भगवती आराधना, प्रवचनसार, समयसार, सर्वार्थसिद्धी, पुरुषार्थसिद्धियुपाय आदि में पर्यावरण संरक्षण के सूत्र बहुतायत में उपलब्ध हैं।

दशवैकालिक आगम के चतुर्थ अध्ययन की गाथा 8 में निरूपित किया गया है-

जयं चरे, जयं चिद्रे, जयमासे, जयं सए।

जयं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधइ।।

अर्थात् यतना से चलो, यतना से रहो, यतना से बैठो, यतना से शयन करो, यतना से भोजन एवं भाषण करो।²⁴ यत्नाचार ही पर्यावरण-संरक्षण की कुञ्जी है। त्वरा मूर्च्छा से जाग जाना ही प्रदूषण से मुक्ति है। श्रावक के बारह व्रतों का पालन ही जैन जीवन शैली (Jain life style) है। जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है।

पर्यावरण और नैतिकता का सह-सम्बन्ध पर्यावरण-संरक्षण है। जैनदर्शन और संस्कृति प्राणिमात्र में सह-अस्तित्व, समभाव, सहोदर भावना, सर्वोदय, स्वच्छ पर्यावरण के रूपान्तरण हैं।

महाव्रत, अणुव्रत एवं पर्यावरण

जैन संस्कृति में श्रमणों के लिए आजीवन पञ्चमहाव्रत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह तथा श्रावक-श्राविका के लिए पाँच अणुव्रतों का विधान है।

1. स्थूल प्राणातिपात-स्थूल प्राणी हिंसा से बचना।
2. मृषावाद-स्थूल, असत्य भाषण (वाणी) से बचना।
3. अदत्तादान-स्थूल चोरी से बचना।
4. स्वदार सन्तोष व्रत-स्वदार सन्तोष।
5. इच्छा परिमाणव्रत-इच्छा, परिग्रह का परिमाण करना।

इन अणुव्रतों को अपनाना पर्यावरण-संरक्षण में सहायक है। उपर्युक्त पाँच व्रत, चार शिक्षाव्रत तथा तीन गुणव्रतों की मूल आचार-संहिता समाज के पर्यावरण संरक्षण के आधार हैं। जैन संस्कृति की सन्तुलित जीवन

शैली ही पर्यावरण संरक्षण है। जैन संस्कृति, सामाजिक, अहिंसक शाकाहार पर्यावरण संरक्षण पद्धति, अनेकान्त एवं स्यादवाद पर्यावरण संरक्षण के माध्यम से सत्त्वेषु मैत्रिम्²⁹, परस्परप्रेमों जीवानाम्, जीओ और जीने दो, सब एक के लिए एक सबके लिए हैं।

जीवन मूल्य पर्यावरण केन्द्रित (Ecocentric) पर्यावरण संवेदी (Eco sensitive) होकर अहिंसा, संयम और तप के धम्मो मंगल मुक्किट्ट अहिंसा संजमोतवो³⁰ मार्ग पर प्रशस्त होकर जैन संस्कृति के माध्यम से पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण हो सकेगा।

सन्दर्भ

1. तत्त्वार्थसूत्र 5.21, जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण प्रो. प्रेम सुमन जैन।
2. दशवैकालिक सूत्र 8/36, 8/37, आ. 1/215
3. विनयपिटक, त्रिपिटक, धम्मपद।
4. कबीर भाग 1 सरयू (हिन्दी साहित्य)
5. आचाराङ्ग 1/5/2
6. उपासकाध्ययन 334/उत्तरा 6/2
7. नन्दी चूर्णि 5/38, प्रश्न व्याकरण 1/5
8. परम पुरुषार्थ अहिंसा जैन विद्या संस्थान, महावीरजी, अहिंसा की सूक्ष्म व्याख्या साध्वी गवेषणाश्री।
9. जैन आगम साहित्य- श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री।
10. उत्तराध्ययन सूत्र 2/27, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राज.)
11. दशवैकालिक सूत्र 6/11 सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर।
12. आचाराङ्ग सूत्र 1/3/3
13. आचाराङ्गसूत्र 1/2/3
14. आचाराङ्गसूत्र 1/3/4
15. कार्तिकेयानुप्रेथा 91, 92, दशवैकालिक 8/38
16. विशेषावश्यक भाष्य 1766
17. आचाराङ्गसूत्र 1/5/3
18. उपासकदशाङ्गसूत्र टीका-आचार्य अभयदेव पृष्ठ 40-41
19. उत्तराध्ययनसूत्र 9/48, 9/49
20. आचाराङ्गसूत्र 1/2/5
21. श्रावक प्रज्ञसिटीका 283
22. उवासगदसाओ 1/23 24 से (1/23 से 1/42)

23. श्रावक धर्म प्रदीप, जैनधर्म एवं संस्कृति, डॉ. पी. सी. जैन/
उपासकदशाङ्ग
24. दशवैकालिक सूत्र, चतुर्थ अध्ययन गाथा 8-तत्त्वाधान
आचार्य श्रीहस्तीमलजी महाराज।
25. आचाराङ्गसूत्र, जैनधर्म दर्शन : एक अनुशीलन, डॉ. धर्मचन्द्र
जैन।
26. श्रावक के बारह व्रत-मुनि दर्शन उपासकदशाङ्ग और उसका
श्रावकाचार।
27. स्थानाङ्ग 2/3/1
28. परम पुरुषार्थ अहिंसा, पण्डित जगमोहन लाल जैन
29. भावना द्वात्रिंशतिका-आचार्य अमितगति।
30. दशवैकालिक सूत्र 1/1
-सेवानिवृत्त आर.ए.एस., जयपुर (राज.)
544, सिद्धार्थ नगर, ए ब्लॉक, जवाहर सर्किल,
जयपुर-302010 (राज.) 9785400050.

विकारों पर विजय

डॉ. रमेश 'मयंक'

यदि हम
अधिक मात्रा में
दूध-दही, घी-तेल,
वसा-शर्करा को
काम में लाएँगे,
तो-
विकृतियों के शिकार हो जाएँगे,
शरीर-मन को
रोग-काम-वासना का
अभ्यस्त बनाएँगे।
यथोचित आहार
शरीर में पोषकता लाता है
सामर्थ्य-शक्ति बढ़ाता है
मन-मस्तिष्क को सन्तुलित कर
व्यवहार में विकृतियों से बचाता है;
लेकिन
मूक प्राणियों,
पञ्चेन्द्रिय जीवों का वध
चित्त की दया के भाव को
काम-प्रमाद-क्रूरता में बदल कर
विकारों का जनक बन जाता है।

मद से मादकता
सही-गलत का विवेक भी
शून्य हो जाता है।
उत्तम आहार का चयन
शरीर को विकारों से बचाता है।
यदि जीवन को
साधना के पथ में बाधक नहीं बनता है
तो समझना होगा-
अत्यधिक मात्रा में सेवन कर्ता को
दुग्ध से अपच-अतिसार का,
दही-घी-तेल-वसा से अतिभार का
शर्करा से मधुमेह के शिकार का
सूखे मेवे से बाधित रक्त-संचार का
हृदय जनित आघात का
शिकार बनना पड़ेगा,
यदि-कष्टों से छुटकारा पाना है
तो रस परित्यागी बनकर
लालसा-आसक्ति वाले विकारों पर
विजयी कहलाना है।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001
(राज.) 9461189254

सच्चे सुख के सात कदम

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

जैनधर्म भारत का एक अत्यन्त प्राचीन धर्म है जिसे श्रमण परम्परा के नाम से जाना जाता है। जैनधर्म के अन्तिम तीर्थङ्कर भगवान् महावीर ने संसार के सभी मनुष्यों को जीवन जीने की कला सिखलाई। उन्होंने सिखाया कि संसार में किस तरह रहना चाहिए ताकि मानव ही नहीं बल्कि जीव मात्र का कल्याण हो सके। प्रत्येक मनुष्य के कल्याण के लिए उन्होंने जो मार्ग बतलाया उसे हम सात कदमों के माध्यम से नए तरीके से समझ सकते हैं—

प्रथम कदम : सप्त व्यसनों से दूरी

सबसे पहले भगवान महावीर ने शोध (रिसर्च) की कि मनुष्यों की कौन-सी ऐसी कमियाँ हैं जो उसके विकास को रोक रहीं हैं तथा उसका जीवन बर्बाद कर रहीं हैं। अपनी इस शोध में उन्होंने सात आदतें ऐसी पायीं जिनके कारण उसका जीवन बर्बाद हो रहा है और आगे नहीं बढ़ पा रहा है। इसलिए अच्छा, स्वस्थ और सुन्दर जीवन जीने के लिए उन्होंने इन सात व्यसनों को सबसे पहले छोड़ने को कहा—

1. जुआ खेलना 2. मांस खाना 3. मदिरापान (किसी भी किस्म के नशे का सेवन) 4. वेश्या सेवन 5. शिकार खेलना 6. चोरी करना 7. परस्त्री रमण।

यदि ये व्यसन बने रहेंगे तो आध्यात्मिक तो छोड़िये, किसी भी तरह का लौकिक कल्याण भी आप नहीं कर सकते। अपने साथ साथ परिवार, समाज, राष्ट्र और पूरे विश्व को हानि पहुँचाने का कार्य ये सात व्यसन करते हैं। अतः सबसे पहले प्रत्येक मनुष्य को ये व्यसन जितना जल्दी हो सके छोड़ देना चाहिए।

द्वितीय कदम : रत्नत्रय का सिद्धान्त

भगवान महावीर ने फिर एक शोध की। उन्होंने विचार किया कि सात प्रकार के व्यसनों से दूर होने के

बाद अब मनुष्य आत्मकल्याण के लायक हो गया है अतः इसके दुखों को दूर करने का कुछ ऐसा रास्ता खोजना चाहिए ताकि मनुष्य दुःख दूर करने के नकली उपायों से बचे और वास्तव में इसके दुःख दूर हो सके। उन्होंने बारह वर्ष तक कठोर साधना की, यह उनका आत्मानुसन्धान का काल था। उन्होंने इस दौरान कोई भी उपदेश नहीं दिया, वे मौन रहे। जब उनका आत्मानुसन्धान पूरा हो गया और उन्हें दिव्य अतीन्द्रिय ज्ञान की प्राप्ति हो गयी तब उन्होंने जो रास्ता पाया वह सभी मनुष्यों को बतलाया।

उन्होंने कहा सुखी होने और सच्चा जीवन जीने की कला है—सम्यग्दर्शन—ज्ञान—चारित्र। उन्होंने इस कला को मोक्ष का मार्ग कहा। उन्होंने कहा कि दुःख भी एक रोग है और उसके लिए भी दवाई की जरूरत है, हमारे संसार सम्बन्धी सभी रोगों के नाश के लिए उन्होंने यह त्रिरत्न रूपी त्रिफला चूर्ण खोज निकाला। उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें सच्चा विश्वास या सच्ची श्रद्धा करना सीखना चाहिए, लेकिन सिर्फ श्रद्धा से काम नहीं चलेगा उसके साथ साथ सच्चा ज्ञान भी प्राप्त करना चाहिए और सिर्फ श्रद्धा या ज्ञान से भी बात नहीं बनेगी ...इन दोनों के साथ-साथ हमें सच्चा आचरण (चारित्र) भी धारण करना चाहिए। महावीर बहुत वैज्ञानिक हैं उन्होंने समझाया कि अगर सच्चे डॉक्टर पर सच्चा विश्वास न हो तो दवाई काम नहीं करती, इसलिए पहले डॉक्टर पर सच्चा विश्वास करोलेकिन सिर्फ भरोसा कर लो तो भी रोग दूर नहीं होगाइसलिए वह जो उपचार और दवाई बताये उसका सही ज्ञान प्राप्त करोदवाई का सही ज्ञान नहीं होगा कि कौन-सी कब खानी है तो भी रोग दूर नहीं हो

पायेगा। इसके बाद वे कहते हैं कि आपने सिर्फ विश्वास और ज्ञान तो कर लिया, लेकिन वह दवाई समय पर नहीं खाई तो भी रोग दूर नहीं होगा अतः विश्वास भी जरूरी है, ज्ञान भी जरूरी है तथा उसके अनुसार आचरण भी जरूरी है—तभी दुःखों से मुक्ति सम्भव है।

तृतीय कदम : सम्यग्दर्शन—सच्चा विश्वास और भेद विज्ञान

भगवान महावीर ने देखा कि लोग विश्वास और श्रद्धा तो करते हैं, लेकिन कभी—कभी अज्ञानता में गलत श्रद्धान कर लेते हैं, अतः धर्म का वास्तविक स्वरूप समझ कर फिर श्रद्धान करना चाहिए। कोई समझा देता है कि पहाड़ से नीचे कूद जाओ या नदी में डूब जाओ तो मोक्ष हो जायेगा, कोई कहता है कि पशुओं की बलि चढ़ाओ तो पुण्य होता है, कोई नशा करने से परमात्मा का दर्शन करवाने की बात कहता है तो हम जल्दी भरोसा कर लेते हैं और यह मानने लगते हैं कि यही धर्म है ..और अपनी श्रद्धा और विश्वास को गलत दिशा दे देते हैं, इसलिए सबसे पहले जरूरी है मनुष्य सच्चे धर्म की पहचान करके विश्वास करे। अन्यथा हमेशा की तरह लुटता ही रहेगा।

सम्यग्दर्शन की गहरी व्याख्या करते समय वे भेद विज्ञान की कला समझाते हैं और कहते हैं कि इस कला से मनुष्य संसार के दुःखों में भी कीचड़ में कमल की तरह उससे भिन्न रह सकता है। अनासक्त भाव और साम्य दृष्टि ...यह भेद विज्ञान पूर्वक जीवन जीने की अनुरूप कला है। महावीर कहते हैं—सृष्टि नहीं दृष्टि बदलो।

इधर कहाँ आ फँसे बटोही तुम भी ऐसे गाँव में जहाँ धूल भी धोखा देती काँटा चुभे हर पाँव में कौन कहे छोड़ो महल अटारी पत्नी बच्चे छोड़ दे जो जहाँ है वहीं रहने दे केवल दृष्टि मोड़ ले

चतुर्थ कदम : सम्यग्ज्ञान—बहु आयामी दृष्टिकोण

सम्यग्ज्ञान के माध्यम से किसी भी घटना, परिस्थिति या परिणाम की सही जानकारी होती है। जो वस्तु जैसी है उसका जो स्वरूप है, उसको वैसा ही

जानना यह सम्यग्ज्ञान है। प्रायः सही ज्ञान के अभाव में मनुष्य व्यर्थ ही तनावग्रस्त रहता है। सही ज्ञान ही समस्या का समाधान कर सकता है। महावीर ने 'अनेकान्त का सिद्धान्त' की खोज वस्तु, घटना, परिस्थिति या परिणाम की सर्वांग जानकारी के लिए की। सत्य को कभी भी एक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता, क्योंकि वह बहु आयामी है। इसलिए हमें भी अपना दृष्टिकोण बहु आयामी रखना चाहिए। यह चिन्तन की कला है। हमारे सोचने का तरीका ठीक होगा और सकारात्मक होगा तो हमारे आधे दुःख वहीं कम हो जायेंगे। हर घर में, परिवार में, समाज में झगड़े का एक ही कारण है कि हम सिर्फ अपने नज़रिये से देखते हैं ..जिस दिन हम दूसरे के नज़रिये से भी देखने लगेंगे उस दिन जीवन का रंग ही बदल जायेगा। जीवन बहुरंगी हो जायेगा।

पाँचवाँ कदम : सम्यक् चारित्र

सम्यक् चारित्र मनुष्य को सदाचरण सिखाता है। हमारे तनाव—अवसाद का मुख्य कारण हमारा गलत आचरण भी है। क्रोध, मान, माया, लोभ—ये चार ऐसे भाव हैं जो शान्त चित्त आत्मा को कष्ट देते हैं अर्थात् दुःखी करते हैं, इसलिए इनका नाम जैनदर्शन में 'कषाय' रखा गया है। आत्मा के चारित्रिक गुणों का घात इन्हीं चार कषायों के कारण होता है, और इन्हीं कषायों की प्रबलता मनुष्य को तनावग्रस्त भी करती है। शुद्ध चारित्र की प्राप्ति के लिए इन चार कषायों की समाप्ति बहुत आवश्यक है। ये कषायें जैसे—जैसे मन्द होती हैं वैसे—वैसे तनाव घटता जाता है। अन्य कई प्रकार की मानसिक बीमारियों का कारण भी इन कषायों की प्रबलता है। अतः सम्यक् चारित्र के अभ्यास से इन पर विजय प्राप्त करके मनुष्य अवसाद आदि का शिकार नहीं होता। अपने भीतर से क्रोध, मान, माया, लोभ को कम करना यह हमारा आन्तरिक चारित्र है और बाहर से भोगों के प्रति उदासीन भाव और अपनी आत्मा के प्रति उत्साह यह बाह्य चारित्र है। महावीर कहते हैं कि व्रत,

उपवास, तपस्या भी यथा शक्ति करने से शरीर के प्रति ममत्व घटता है, मनुष्य शारीरिक रोगों से भी मुक्त होता है और कर्मों से भी।

छठा कदम : अहिंसा और अपरिग्रह

भगवान् महावीर ने सम्पूर्ण जीवन को अहिंसा पूर्वक जीने को कहा। हम ऐसा जीवन जीयें जिससे किसी दूसरे प्राणी को कष्ट न हो और और किसी के प्राणों का हरण न हो। जैसे हमें दुःख पसन्द नहीं वैसे ही दूसरों को भी पसन्द नहीं है, अतः शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए अहिंसा का आचरण जरूरी है। आज कोरोना वायरस पूरे विश्व के लिए भस्मासुर बन गया है। उसकी मूल वजह हिंसक आहार है, जिसमें मांसाहार सबसे बड़ा कारण है। भगवान् महावीर की अहिंसक जीवन-शैली को आज सभी को स्वीकारना पड़ रहा है।

इसी प्रकार अत्यधिक परिग्रह और आसक्ति बहुत बड़ा दुःख है। मकान, जमीन, रुपया-पैसा, सोना-चाँदी आदि के प्रति अत्यधिक मोह आपको चिन्ता ग्रस्त बनाता है अतः भगवान् कहते हैं कि अपने पास उतना ही रखो जितनी जरूरत है, व्यर्थ का सामान मत जोड़ो।

आगाह अपनी मौत से कोई वशर नहीं
सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं

सातवाँ कदम : संलेखना या संधारा

भगवान् महावीर ने मनुष्यों को जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन जीने की कला सिखलाई। उन्होंने कहा कि जो जन्म लेता है वह मरता भी है, यह जीवन की एक बहुत बड़ी सच्चाई है-इसे हमें स्वीकार कर लेना चाहिए। मरना तो एक क्षण का है, किन्तु उसके पूर्व अन्त समय तक जीवन है अतः हमें अपना अन्त समय धर्मध्यान, व्रत-उपवास पूर्वक व्यतीत करना चाहिए, जो छूट जाने वाला है उसे तुम पहले ही छोड़ दो तो सुख पूर्वक अंत तक जी लोगे। इसलिए जब ऐसा लगने लग जाये कि अब आयु कम रह गयी है तब घबराना नहीं चाहिए, बल्कि अपने सुन्दर जीवन रूपी निबन्ध का अच्छा उपसंहार या समापन करना चाहिए। अन्त समय तक भगवान् का भजन करना चाहिए, अपनी भूलों के लिए सबसे क्षमा याचना करना चाहिए और संयम पूर्वक रहना चाहिए।

इस प्रकार भगवान् महावीर ने मनुष्यों को जीवन सत्य, शिव और सुन्दर बनाने की प्रेरणा दी उसके उपाय भी बतलाये। यदि उनके बतलाये मार्ग पर हम सभी चलें तो अवश्य सुखी हो सकते हैं।

-प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, जैनदर्शन विभाग, दर्शन संकाय, श्री लाल बहादुर शास्त्रीराष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-

जीवन बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म. सा.

मुक्ति का सफर

रखनी है परिणामों पर कड़ी नज़र,
अवश्य पूरा होगा मुक्ति-सफर॥

सुधार

हे जीव! तू खड़ा है चार गति के मझधार,
यहाँ नहीं है कोई भी तेरा आधार,
अतः साधना का मार्ग धार,

चेतन को सुधार॥

सम्यक्त्व गुण

पुद्गल में रागादि, ये तो किये काल अनादि,
अब तो कर सम्यक्त्व गुण की आदि॥

इन्द्रिय-निग्रह

साधक ने छोड़ दिया बाह्य परिग्रह,
परन्तु नहीं किया इन्द्रियों का निग्रह,
तो कर रहा है वह,
चिकने कर्मों का संग्रह॥

धर्म और विज्ञान

श्री प्रमोद महनोत

इस युग में लोग धर्म को विज्ञान की कसौटी पर परखना चाहते हैं। विज्ञान निर्भर करता है सिर्फ परीक्षण पर, वह प्रत्यक्ष प्रमाण पर विश्वास करता है। प्रयोगशाला में वैज्ञानिक आत्मा का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं पाता, आकाश में दूरबीन से ढूँढ़ता है तथा बड़ी सूक्ष्मता से जाँच पड़ताल करता है, पर उसे इसका कहीं अता-पता नहीं मिलता। इस कारण वह आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व की सिद्धि नहीं कर पाता है। हाँ, उसके पास आत्मा के निषेध का ठोस आधार भी नहीं है। विज्ञान की धारणा ने बहुतों का विश्वास धर्म पर से डगमगा दिया है या वे लोग इस धारणा की आड़ लेकर धर्म को जीवन में उतारने और संयमी जीवन जीने से बचते हैं। अनेक लोग धर्म के प्रति कोई रुचि न रखते हुए विज्ञान के प्रति अटूट आस्था रखते हैं। उनका मानना रहता है कि जब हमारे वर्तमान जीवन की समस्याएँ ही हल न हो पाएँ तो परवर्ती जीवन के सुख-शान्ति की चर्चा ही क्यों करें? विज्ञान हमारी नित्य की कठिनाइयों को दूर करने में बड़ी मदद करता है, अतः मानव उसी के अवलम्बन से जीवन गुजारना चाहता है। शायद उसे विज्ञान से मनोवाञ्छित सम्पदा, सुविधाओं के संसाधन उपलब्ध हो जायें, क्या फिर वह शान्त हो जायेगा, उसे शान्ति उपलब्ध हो जायेगी? नहीं, वह फिर भी भाग-दौड़ करता रहेगा, छटपटाता रहेगा और आन्तरिक शान्ति से दूरी बनी रहेगी।

विज्ञान और धर्म के सम्बन्ध में चर्चाएँ बहुत होती रहती हैं। कुछ लोग इनको परस्पर विरोधी मानते हैं, पर ऐसा नहीं है। दोनों की तुलना हम तभी कर सकते हैं, जब वे दोनों एक ही वर्ग के हों। जहाँ

दोनों विषय सर्वथा भिन्न श्रेणी के हों तो तुलना कैसे हो सकती है?

धर्म मनुष्य की अन्तःप्रकृति के नियमों को उद्घाटित करता है जबकि विज्ञान का सम्बन्ध बाह्य प्रकृति के कार्य-कलापों से है। विज्ञान के आविष्कार प्रयोगों पर आधारित होते हैं जिन्हें मानव शीघ्र अपना लेता है, पर धर्म के प्रयोग स्वयं के भीतर घटित होते हैं।

आध्यात्मिक सत्य भीतर से प्रकट होते हैं तथा मानव के सम्पूर्ण जीवन को परिवर्तित कर देते हैं जबकि वैज्ञानिक तथ्य प्रयोगशाला जनित होते हैं। जहाँ वैज्ञानिक नियम नये तथ्यों की प्राप्ति से नष्ट होते पाये गये हैं वहाँ कोई भी आध्यात्मिक सत्य काल की कसौटी पर अनुत्तीर्ण नहीं हुआ है। अनादि काल से हजारों व्यक्तियों ने इस सत्य को जाना है, सिद्ध किया है, क्योंकि उन्होंने परोक्ष रूप से इस सत्य की अनुभूति की है। अक्सर लोग महापुरुषों, गुणीजनों के उपदेशों को बुद्धि की तराजू पर तौलना चाहते हैं, पर बिना ज्ञान के वे तराजू पकड़ेंगे कैसे? इस क्षेत्र में बुद्धि लाभकारी नहीं है, श्रद्धा सहायक है, क्योंकि बुद्धि से तो हम अनावश्यक तथ्यों की उधेड़बुन में ही लगे रहेंगे।

वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए विशिष्ट उपकरण आवश्यक होते हैं। हम माइक्रोस्कोप से चाँद-तारे नहीं देख सकते उसी तरह हम आध्यात्मिक सत्यों की परीक्षा बुद्धि से नहीं कर सकते, चाहे वह कितनी ही तीक्ष्ण क्यों न हो, उसके लिए आवश्यक है सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र अर्थात् आन्तरिक संयम।

अतः जैसे एक पौधा बिना प्रकाश और हवा

के नहीं जी सकता उसी प्रकार हम मानव धर्म के बिना सन्तुलित, व्यवस्थित जीवन नहीं जी सकते। क्योंकि धर्म प्रत्येक व्यक्ति की चरम मुक्ति की दिशा में स्वाभाविक एवं स्वयंस्फूर्त प्रेरणा है।

यह सोच कि विज्ञान धर्म के आड़े आता है व्यर्थ है, क्योंकि यथार्थ विज्ञान कभी धर्म का विरोध नहीं करेगा।

क्या आज कोई एक भी ऐसा सन्त हुआ है जिसने पहले किसी भी वैज्ञानिक से प्रमाण-पत्र प्राप्त किया हो, फिर धर्म की ओर अग्रसर हुआ हो। उसने तो अपनी अन्तःप्रेरणा द्वारा ही इस ओर कदम रखा। आगम वाणी के तथ्यों की परख के लिए विज्ञान की ओर ताकना एक गलत परिपाटी है, क्योंकि विज्ञान अभी भी अनन्तत्व की तुलना में शैशवावस्था में है। हालाँकि विज्ञान ने कई विचारधाराओं को सम्बल प्रदान किया है, पर वैज्ञानिक उसे आविष्कार का नाम देते हैं। जैसे जीव-अजीव का सत्य, पानी की

एक बूँद में 36 हजार जीवों का होना, माइक्रोस्कोप बनाने के बाद हुआ। एक से अधिक सूर्य मण्डल के अस्तित्व को अभी कुछ वर्षों पहले ही स्वीकारा गया है।

यह कहना गलत होगा कि वैज्ञानिक लोग धर्म में विश्वास नहीं रखते। कई वैज्ञानिक चाहे भारतीय हों या विदेशी, अपने धर्म की कठोरता से पालना करते हैं। शताब्दी के सबसे बड़े वैज्ञानिक आइन्सटिन जैनधर्म से पूरे प्रभावित थे और जब उनसे पूछा गया कि अगले जन्म में वे किस धर्म को अपनाना चाहेंगे तो उन्होंने जैनधर्म अपनाने की बात कही थी।

अणु और परमाणु की शक्ति से विज्ञान 100 साल पहले ही अवगत हुआ है, ये वे शास्त्रीय सत्य हैं जो कड़े परीक्षण की कसौटी पर खरे उतरे हैं। आगमों में परमाणु की चर्चा पहले से ही प्राप्त है।

-सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

गुरुवर ने सुनाया

श्रीमती अंशु संजयजी सुराणा

(तर्ज :: किसने देखा, किसने जाना...)

गुरुवर ने सुनाया, हमको समझाया, जिनवाणी का सार।

धर्म ही सच्चा शरणा,

कर देता बेड़ा पार...॥

कुंभी में उल्टा लटकाया, छेदन-भेदन खूब कराया।

भूख लगी तो मांस खिलाया,

प्यास लगी तो रुधिर पिलाया।

नरक गति में सहे जीव ने, परमाधामी के वार॥1॥

सर्दी गर्मी भूख प्यास को पड़े विवशता से सहना।

तिर्यञ्च के दुःख चक्षु से दिखते,

कैदी बन पिंजरे में रहना

जिंदा पकते बोझ उठाते, चाबुक की खाते मार॥2॥

देवलोक के वैभव में भी, शाश्वत सुख का वास नहीं।

तृष्णा, परिग्रह में ही भटकते,
शान्ति का आभास नहीं,
पर-धन पर-नारी को चुराया, वज्र के सहे प्रहार॥3॥

स्व आत्मा से हो वास्ता,

जिनवाणी पर दृढ़ आस्था।

मानव भव में ही पा सकते,

मुक्तिपुरी का रास्ता,

जाग रे चेतन! मन को समझा ले, व्यर्थ जन्म न हार॥4॥

लख चौरासी योनि भटके,

जन्म-मरण का दुःख उठाया।

अतिशय पुण्योदय से जिनवाणी

और मनुज भव पाया,

एक ही लक्ष्य को रखना है सामने, तिरना है संसार॥5॥

-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड़, जयपुर
(राज.) 7976091951

मेरे जीवन के महावीर

श्री मनीष मेहता

एक व्यक्ति को सामायिक की साधना करनी थी। उसने अपना आसन लिया, मुखवस्त्रिका ली, पूँजनी ली, अन्य उपकरण लिए, स्थान के लिए उपाश्रय चला गया। वहाँ परिपूर्ण वेश में व्यवस्थित होकर बैठ गया, परन्तु अपने साथियों की बातों में उलझ गया। सारा समय लगा दिया, सामायिक पूर्ण की और नित्य दैनिक चर्या में लग गया। क्या हमें उस गम्भीर समर्पित साधक की तारीफ करनी चाहिए? जरा सोचें। आप कहेंगे वह कैसा साधक है जो साधना ही नहीं कर पाया। वह कैसा भक्त जिसका भगवान ही खो गया हो। आप सही हैं, परन्तु हम सभी ऐसी ही साधना कर रहे हैं। हमारा महावीर का साधक कहलाना, जिन उपासक कहलाना आप ही सोचें कितना सही है जबकि इतने वर्षों में मैंने कभी उस प्रभु वीर को ही नहीं पढ़ा, न ही जानने का प्रयास किया।

आज लोग सन्त-सतियों के पास दूर-दूर से जाकर उनकी सन्निधि में रहकर, प्रदर्शन के माध्यम अपनाकर, जल्दी से जल्दी सूचनाओं के मैसेज डालकर, बातें इधर की उधर पहुँचाकर, अपने को समर्पित मानने का भ्रम पाले बैठे हैं। पर क्या यह सही है? क्या वास्तव में यही सेवा है? सन्त-भगवन्तों के पास जाकर दिनोंदिन उनकी नज़रों में बने रहकर हम कृपा पात्र बनना चाहते हैं, पर अपने स्थान पर पहुँचते ही हम अपनी गन्दी और ओछी राजनैतिक महत्वाकांक्षा में डूब जाते हैं। इससे हमारी गहराई का पता चलता है। हमारे भोले और उदार सन्त-सतियाँजी तो सिर्फ सकारात्मकता ही देखते हैं, इसलिए हमारे छल को पकड़ नहीं पाते और हमें समर्पित समझ बैठते हैं। हमें अपनी साधना को

परखना होगा। हमें यह सोचना होगा कि मेरी साधना का भगवान कहाँ है। मैंने बचपन में आदरणीय श्री पूनमचन्दजी बडे़र, श्री उगरसिंहजी बोथरा, श्री गुमानमलजी चोरड़िया एवं श्री चुन्नीलालजी ललवाणी जैसे दृढ़, समर्पित एवं सच्चे साधक देखे हैं। साधना बोलती है। आज भी सन्तों के समक्ष ये नाम उनकी स्मृतिपटल पर आते ही छा जाते हैं। चाहे श्री सोहनमलजी कोठारी रहे हो जिन्होंने विनयचन्द ज्ञान भण्डार का काम किया हो, ललवाणीजी की प्राणी मात्र की सेवा, बडे़र साहब की सन्त-सेवा अनुपम उदाहरण हैं। हमारे परम पूज्य परम उपकारी गुरुदेव हस्तीमलजी म.सा. की सेवा के अनेक अवसरों का सौभाग्य मुझे मिला। वे कद के छोटे थे, पर उनकी साधना गगनस्पर्शी थी। वे चारित्र की मिसाल थे, करुणासागर थे, निर्लिप्त थे। जहाँ लोग, सन्त एवं आचार्य उन विषयों पर लिख रहे थे जो कि पहले से उपलब्ध थे, वहाँ उन्होंने प्रभु महावीर का एवं जैनधर्म का इतिहास हमें उपलब्ध कराया। उन्होंने तो अपने प्रभु, गुरु को श्रद्धाञ्जलि अपने सुकर्मों द्वारा दी और हम पर उपकार करके हमें सिखाया कि सेवा ऐसे की जाती है, पर हम अभी समझ नहीं पा रहे हैं। हमारे इस द्वन्द्व को, दुविधा को हमारे वर्तमान आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने महती कृपा करके दूर किया और सभी को शुद्ध सामायिक, प्रतिक्रमण के अपने गुरु की डोर से जोड़ने का संकेत किया। पुत्र की पीड़ा पिता और शिष्य की पीड़ा गुरु से अधिक कोई समझ नहीं सकता, पर आचरण के कदम हमें बढ़ाने हैं।

आचार्यप्रवर हस्ती गुरुवर की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर हम सभी को यह सुअवसर मिला है कि अपने समस्त पाठों को याद करें, शुद्ध करें,

उनका अर्थ सीखें ताकि हमारी क्रिया भावपूर्ण हो। सभी पदाधिकारी, सदस्य, उनके परिवारजन इसमें रजिस्ट्रेशन करें। अपने अन्य जैन साथियों को भी इससे जोड़ें। ये समस्त जैन सम्प्रदाय के लिए है, इसमें पन्थ, सम्प्रदाय का भेद नहीं है क्योंकि ये प्रभु महावीर का धर्म है। सभी रजिस्ट्रेशन, पाटियाँ, उनके उच्चारण, अर्थ, भावार्थ आदि रत्नसंघ एप्प पर उपलब्ध हैं। जिनकी साधना वर्षों से रुक गयी है,

हिचक या झिझक है, आगे की पाटियाँ याद नहीं हो रही हैं। हमें जो पाटियाँ याद हैं वे कितनी शुद्ध हैं नवकार मन्त्र, वन्दना सूत्र आदि में उच्चारण के दोष जानने का प्रयास कभी नहीं किया तो सभी को अवसर है साधना को प्रभावशाली बनाने का। सभी जुड़ें, सभी लाभ लें, अपने जीवन में महावीर की साधना का सच्चा रसपान करें, महावीर बनें। इन्हीं शुभ भावों के साथ।

-अध्यक्ष-उ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

सिद्धियों से बढ़कर आत्मज्ञान

श्री रणवीरमल भण्डारी

एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। बड़े को यौवन में ही वैराग्य उत्पन्न हो गया था और वह घर-द्वार छोड़ संन्यास लेकर अन्यत्र चला गया। जो छोटा था, उसने विद्याध्ययन किया और विवाह कर सद्गृहस्थ के रूप में संसार-धर्म निभाने लगा। संन्यास-परम्परा के अनुसार बारह वर्ष के उपरान्त वह संन्यासी बड़ा भाई अपने सांसारिक घर आया। छोटा भाई, इतने वर्ष बाद बड़े भाई को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। घर के भीतर ले जाकर उसकी बड़ी आवभगत की। भोजन करने के पश्चात् दोनों भाइयों में नाना प्रकार की चर्चाएँ होने लगीं। वार्तालाप के दौरान छोटे भाई ने अग्रज से पूछा-“दादा! संसार के सुख-भोग को त्यागकर इतने वर्ष संन्यासी बनकर आप विचरते रहे हैं, कृपया बताइये आपने क्या प्राप्त किया है?” सुनते ही संन्यासी ने कहा-“यदि तू देखना चाहता है तो मेरे साथ चल।” इतना कहकर वह छोटे भाई को साथ लेकर घर के समीप बहने वाली नदी के किनारे आया और यह देख कहकर वह पानी के ऊपर चलता हुआ दूसरे किनारे पर जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने फिर कहा देखा। तत्काल छोटे भाई ने घाट पर मौजूद मल्लाह को एक धेला देकर नाव से नदी पार कर ली और बड़े भाई के पास पहुँच कर कहा-“किस बात के लिए आपने देखा कहा था?” बड़े भाई ने कहा-“क्यों? पानी के ऊपर से मेरा पैदल नदी पार करना नहीं

देखा?” छोटे भाई ने हँसते हुए कहा-“दादा! आपने भी तो देखा कि एक धेला देकर मैंने भी नदी को पार कर लिया। बारह वर्ष तक इतना कष्ट उठाकर आपने बस इतना ही प्राप्त किया। एक धेले से मैं जितना कार्य अनायास ही कर लेता हूँ, आपने बारह वर्ष तक घोर कष्ट उठाकर, कष्टसाध्य साधना कर आपने बस इतना ही प्राप्त किया। क्या इस शक्ति के द्वारा आप जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो चुके हैं? जरा-व्याधि से क्या आपको छुटकारा मिल गया है? अथवा आत्मस्वरूप के आपको दर्शन हुए हैं? वस्तुतः आपकी इस सामर्थ्य का मूल्य तो केवल एक धैला है।” अनुज की इस सारगर्भित बात को सुनकर अग्रज संन्यासी के अन्तर्चक्षु खुल गये और उसकी चेतना को नई दिशा प्राप्त हो गई। वह अन्य सभी क्रियाओं से मन हटा कर आत्म साक्षात्कार की ओर उन्मुख हो गया। धर्म-साधना में संलग्न होने से यदाकदा सिद्धियाँ स्वतः उपस्थित हो जाती हैं। किन्तु आत्म ज्ञान करने से पूर्व ऐसी सिद्धियों को प्राप्त करते ही मानव मन अहंकृत हो उठता है और अहंकार की वृद्धि से ही मानव सांसारिकता के जाल में फँसकर उच्च लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं हो पाता और अन्त में वही उसके पतन का कारण बन जाता है। परमहंस स्वामी श्रीरामकृष्ण के शब्दों में सिद्धियाँ विष्ठा की तरह हेय हैं। उनकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। जो उधर ध्यान देते हैं, वे वहीं रह जाते हैं, भगवान की ओर अग्रसर नहीं हो पाते।

-जोधपुर (रज.)

क्षमा : जीवन का अमृत

श्री पदमचन्द्र गाँधी

क्षमा का अभिप्राय

क्षमा धर्म का प्राण है। क्षमा जीवन मैत्री का प्रथम सोपान है, आत्म शुद्धि का द्वार है और जैनत्व की पहचान है। सांवत्सरिक पर्व को क्षमा पर्व के रूप में मनाया जाता है। जीवन में क्षमा को अपनाकर कटुता, वैमनस्य एवं राग-द्वेष मिटाकर आत्मा को शुद्ध, पवित्र, निर्मल एवं ज्योतिर्मय बनाया जा सकता है। आगमकारों ने संवर तत्त्व के अन्तर्गत क्रोधादि आस्रवों के निरोध हेतु दस प्रकार के यति धर्म का निरूपण किया है उनमें प्रथम स्थान 'क्षमा' को दिया गया है। मनुस्मृति 6.33 में धर्म के दस लक्षण बताये हैं उनमें भी क्षमा का महत्त्वपूर्ण स्थान (दूसरा) है। शास्त्रकार कहते हैं कि कषाय आत्मा के लिए सर्वाधिक घातक हैं और कर्मास्रव का प्रमुख कारण हैं। इनको रोकने के लिए क्षमा आदि संवर धर्म को अपनाना आवश्यक है, क्योंकि क्षमा कषायमुक्ति की परम औषधि है। क्रोध को क्षमा के द्वारा शान्त किया जा सकता है।

क्षमा का अर्थ है-सहनशील होना और क्रोध पैदा न होने देना तथा उत्पन्न क्रोध को विवेक और नम्रता से निष्फल कर डालना। अपकार करने वाले के अपकार का बदला लेने की शक्ति होते हुए भी जो क्षमा करता है वही क्षमाशील है। अपनी कमजोरी के कारण प्रतिकार न करना क्षमा नहीं कायरता है। ऐसे कायर पुरुष के मन में बदले की भावना होती है। वह ऊपर से क्षमा का कृत्रिम आवरण ओढ़े रहता है। अपकारकर्ता के प्रति किञ्चित् भी दुर्भाव न रखते हुए जो निर्मलता रखी जाती है वही सच्ची क्षमा है।

क्षमा जीवन का अमृत है। क्षमा से बढ़कर इस संसार से मुक्त करने वाला कोई तप नहीं है। क्षमा से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है। 'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण है, जो शक्तिशाली होकर सहनशीलता रखता है वास्तव में वही शूरवीर है। क्षमा ही क्रोध रूपी भयङ्कर शत्रु का संहार करने के लिए अमोघ शस्त्र है। क्षमा अन्तः शत्रुओं को जीतने का खड्ग है। असह्य दुःख में सम परिणामों से क्षमा रखने वाला मनुष्य भव सागर तिर जाता है। क्षमाभावना में वह शक्ति निहित है जिससे मनुष्य को परम पावन जीवन जीने की सुखद राह प्राप्त होती है। क्षमा ही वह अलौकिक तत्त्व है, जिससे जीवन में मृदुता आती है, सद्भावना का संचार होता है, पारस्परिक कटुता मिटती है एवं मैत्री भावना का विकास होता है।

क्षमाशीलता के अङ्ग

क्षमा माँगना एवं क्षमा करना क्षमा के अङ्ग हैं। इनका भावनात्मक परिणाम-कषाय मुक्त बनना है। क्षमा कोई कार्य नहीं, एक विधि है, एक प्रक्रिया है। क्षमाशील बनने के लिए साहस, विश्वास, सहनशीलता के साथ ही ध्यान, स्वाध्याय, दर्शन-विशुद्धि आदि सोलह कारण भावना तथा अनित्य, अशरण आदि बारह भावना तथा मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ इन सभी प्रकार की भावनाओं एवं प्रार्थनाओं का नियमित अभ्यास करना एवं कराना आवश्यक है। ऐसा करने से भीतर में क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों की परतें उखड़कर दूर होती दिखायी देती हैं। क्षमा गुण से संयम एवं तप में निखार आता है, संवर-निर्जरा की विशिष्ट करणी होती है। वैर को नष्ट करने की भावपूर्ण क्रिया क्षमापना है।

पर्वाधिराज कहते हैं कि यदि सम्यग्दृष्टि बने रहना है, श्रावक बने रहना है, तो कषाय को समय पर शान्त करो। क्षमापना बिना सम्यक्ता नहीं आती है। आध्यात्मिक पर्व (संवत्सरी) के प्रसङ्ग पर भी यदि पूर्वकृत दुष्कृत्य के लिए क्षमा-याचना एवं क्षमा-प्रदान

नहीं करते हैं तो हम अपने सम्यक्त्व गुण का भी नाश कर बैठते हैं। जब सम्यक्त्व का नाश हो जायेगा तो श्रावकपना भी खत्म हो जायेगा। इस प्रकार क्षमा माँगना एवं क्षमा करना श्रावक के लिए आवश्यक है। यदि हमने किसी को क्षमा कर भी दिया है, उसके बाद भी हमारे मन में उसके प्रति थोड़ी-सी कड़वाहट, शंका, सन्देह रहता है (जो नहीं रहना चाहिए) तो स्पष्ट है, हमने उसे सच्चे अर्थों में क्षमा नहीं किया। भगवान महावीर ने क्षमा के बारे में एक अति गम्भीर सूत्र दिया है-

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।

मिन्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई।।

अर्थात् मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ, सभी जीव मुझे क्षमा करें। विश्व के सभी प्राणी मेरे मित्र हैं, मेरा किसी से वैर नहीं है। इस गाथा में चार बातें सिद्ध होती हैं। सबसे पहले क्षमा का दान स्वयं अन्तर्हृदय से दें। इसके साथ कोई शर्त न हो। क्षमा स्वेच्छा से एवं अन्तर्मन से हो। दूसरी बात है, सभी जीव मुझे क्षमा करें। दूसरों के द्वारा क्षमा करना उनके भावों पर आधारित है। हम केवल उनसे याचना कर सकते हैं, उनके द्वारा हमको क्षमा करना शर्त नहीं हो सकती। यदि ऐसी शर्त रहती है तो अन्तर्मन से क्षमा नहीं होकर मात्र औपचारिकता रह जाती है। तीसरी बात है जगत् के सभी प्राणी मेरे मित्र हैं। यह बात जीवन में बिना किसी दबाव के एवं स्वार्थ के धारण करनी है। जब सभी को क्षमा कर दिया, सभी को मित्र मान लिया तो चौथी बात स्वतः फलीभूत हो जायेगी, क्योंकि कोई शत्रु रहेगा ही नहीं।

इसी प्रकार की क्रियाओं के द्वारा ही हम सच्ची क्षमा देने एवं लेने के पात्र बन सकते हैं। लेकिन इसकी साधना के उपाय जानना आवश्यक है।

क्षमा-साधना के उपाय

क्षमा करने की पात्रता को पाने के लिए साधना की आवश्यकता होती है। क्षमा से अन्तर्मन की अग्नि को शान्त किया जा सकता है। क्षमा की साधना निम्न प्रकार से कर सकते हैं।

1. **क्रोध के निमित्त का चिन्तन**-यदि कोई क्रोध करता है तो उसके कारणों को अपने में ढूँढ़ना। क्रोध करने वाला जो कुछ बोलता है, जो दोष बतलाता है, यदि वे अपने में हैं, तो ऐसा विचार करना कि उसकी बात सत्य है, दोष मेरा ही है, भूल मेरी ही है। यदि अपने में वे दोष न भी हों तो यह सोचना कि क्रोधी मेरा हित चाहता है।
2. **क्रोध के दोषों का विचार**-क्रोध एक अपूर्व अग्नि है, जो अन्तरंग को जलाती है। क्रोधाविष्ट व्यक्ति अपनी बाह्य एवं आन्तरिक दोनों दृष्टियों को खो बैठता है, अतएव क्रोध भयंकर अन्धकार है, जो जन्म-जन्मान्तर का अनिष्ट करने वाला है। इस प्रकार क्रोध के दुष्परिणामों का चिन्तन करने से क्रोध का निग्रह करने में सहायता प्राप्त होती है।
3. **बाल-स्वभाव का चिन्तन**-यदि कोई अपकारी पीठ पीछे बुराई करे तो उसको बाल-स्वभाव मानकर नज़र अन्दाज़ करना चाहिए, सामने आकर गालियाँ दे, तो सोचे यह तो उसका स्वभाव है, यह मारता तो नहीं है। यदि मारने लगे तो सोचो कि वह प्राण तो नहीं ले रहा है। यदि प्राणमुक्त करे तो धर्म भ्रष्ट न करने का लाभ मान कर प्रसन्न होना। इस प्रकार उसका बाल-स्वभाव मानने से क्षमा के गुणों की पुष्टि होती है।
4. **पूर्वकृत कर्मों का चिन्तन**-जब कोई अपने प्रति क्रोध करे तो समझो कि इसमें इसका दोष नहीं मेरे पूर्वकर्मों का परिणाम है, वह तो केवल निमित्त मात्र है। इस प्रकार असली दुःख देने वाला तो मेरा अपना पूर्वकृत कर्म है सामने वाला व्यक्ति तो केवल निमित्त-मात्र है। इस प्रकार के चिन्तन से क्रोध का शमन होता है।
5. **क्षमा के गुणों का चिन्तन करना**-क्रोध का निमित्त उपस्थित होने पर क्षमा के गुणों का चिन्तन करने से क्रोध का निग्रह हो जाता है। कोई क्रोध करे तो सोचे, क्षमा धारण करने से चित्त स्वस्थ रहता है,

अतएव तू क्षमा धारण कर, क्षमा अमृत की धारा है, जो क्रोध के विष को मार देती है। क्षमा रूपी शस्त्र जिसके हाथ में है, दुर्जन उसका क्या बिगाड़ सकता है। क्षमा की शीतल धारा अन्तःकरण को शान्ति से आप्लावित करती है। क्षमा अन्तःकरण के ताप को शान्त करती है। इस प्रकार क्षमा के गुणों का चिन्तन करने से हृदय शान्त एवं आह्लादित होता है और क्रोध की उत्पत्ति नहीं हो पाती।

इन पाँचों विधियों से क्षमा धर्म की आराधना होती है और क्रोध के आस्रव का निरोध होता है।

क्षमा मानवीय गुण है

क्षमा मानवीय गुण है, इसलिए विश्व के सभी धर्मों में इस गुण की सर्वाधिक प्रतिष्ठा है। क्षमा आत्म-स्वतन्त्रता की रणभेरी है। इससे जीवन का कोई भी संघर्ष जीता जा सकता है। इससे निजी शक्ति एवं साहस का ज्ञान होता है। एक छोटा सा शब्द 'सॉरी' बोलने से सामने वाले का 50 प्रतिशत गुस्सा शान्त हो जाता है और यदि मुस्कुरा कर प्रेम से, विनम्रता से बोलो तो गुस्सा पूरा शान्त हो जाता है। सॉरी या क्षमा का शब्द मनुष्य को सुखी जीवन का सूत्र देते हुए बर्टेण्डरसेल ने कहा है- "वह मनुष्य सुखी है जो अन्य पुरुषों के साथ अपने सम्बन्धों को न तो अचानक तोड़ देता है और न उनमें विषैलापन उत्पन्न होने देता है, इस प्रकार क्षमा जीवन का अमृत है।" अंग्रेजी के कवि अलेक्जेंडर पोप ने कहा- "गलती करना मानवीय कार्य है और क्षमा करना ईश्वरीय। मानव की महत्ता क्षमा करने में है।"

सन्त तुकाराम ने कहा- "जिस व्यक्ति के हाथ में क्षमा रूपी शस्त्र है उसका दुष्ट भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। यदि दावानि में तूण न पड़े तो वह स्वयं ही बुझ जायेगी।" सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह ने तो यहाँ तक कहा है- "कोई कमजोर तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो, यही तुम्हारी वीरता है।" कुरानशरीफ 3/114 में हज़रत मुहम्मद पैगम्बर ने स्पष्ट किया कि- "क्षमा-याचना का मूल उद्देश्य भाव शुद्धि है। जो गुस्सा

पीकर लोगों को माफ कर देते हैं अल्लाह ऐसी नेकी करने वालों को प्यार करते हैं।" महात्मा गाँधी ने कहा- "दण्ड देने की शक्ति होने पर भी दण्ड नहीं देना, सच्ची क्षमा है।" ईसाई धर्म में ईसामसीह को क्रॉस पर लटकाते समय क्षमा का सन्देश दिया- "हे भगवन्! इन्हें क्षमा करना। ये अज्ञानी नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।"

जैनदर्शन में कहा है-जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा अर्थात् जो कर्म में शूर है वह धर्म में शूर है। मात्र छह माह में कर्म बन्ध करने वाले पराक्रमी पुरुष अर्जुनमाली ने शान्ति एवं क्षमा से कर्म शृङ्खला को तोड़कर शिवत्व प्राप्त किया। गजसुकुमाल के मस्तिष्क पर जाज्वल्यमान अंगारे रख दिए गए, फिर भी कोप नहीं किया। अन्तर्ध्यान में लीन क्षपक-श्रेणी पर आरूढ़ और शुक्ल-ध्यान की अन्तिम मञ्जिल पर चढ़कर महामुनि गजसुकुमाल ने केवलज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार मेलार्थमुनि, राजा चण्डप्रद्योत एवं उदयन के क्षमा के उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि वास्तव में अन्तर्मन से क्षमा मोक्ष तक पहुँचा देती है।

आज के परिप्रेक्ष्य में क्षमा

क्षमा का मनोवैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टिकोण है-जिसने आपको तकलीफ पहुँचायी है, उसके प्रति दुर्भावना से बाहर निकलना। यह आन्तरिक प्रक्रिया है जो बिना किसी शर्त के की जाती है। क्षमा करने वाले को इससे आत्म-सन्तोष होता है। वह उसके लिए एक बहुमूल्य उपहार होता है।

देखने में आता है कि क्षमा जिससे माँगनी चाहिए उससे नहीं माँगते, जिन्हें जानते नहीं, कभी सालों से देखा नहीं, फिर भी क्षमा माँगते हैं, लेकिन जिनमें विवाद है, मनमुटाव है उनसे क्षमा नहीं माँगते। यदि क्षमा की याचना की भी तो औपचारिक रूप से। फेसबुक, व्हाट्सएप्प पर सैकड़ों सन्देश आ जाते हैं क्या यह औपचारिकता नहीं है? क्या इनसे अन्तःकरण से क्षमा ली जाती है और दी जाती है, विचारणीय है।

मनोवैज्ञानिक यहाँ तक कहते हैं कि क्षमा न करने से व्यक्ति तनावग्रस्त हो जाता है। उसके अति

आवश्यक हार्मोन उत्पादन की प्रक्रिया नष्ट हो जाती है। छोटी-छोटी बीमारियों से लड़ने वाली कोशिकाओं को बाधा पहुँचती है। जिन लोगों के रिश्ते अच्छे नहीं रहते उनमें कार्टिसोनस हार्मोन का स्तर ज़्यादा पाया जाता है। इससे तनाव बढ़ता है ऐसे में उनकी सोच नकारात्मक बन जाती है। इससे मानसिक विकार तो पैदा होते ही हैं, ईर्ष्या और मनमुटाव की स्थिति व्यक्ति को धीरे-धीरे अवसाद और निराशा के घेरे में घेर लेती है।

क्षमापना पर्व सम्बत्सरी से जुड़ा पर्व है जो प्रति वर्ष आता है। यदि हम इसे केवल परिपाटी के रूप में

निभाते हैं तो इससे कुछ लाभ होने वाला नहीं है। क्षमा यदि करनी है या माँगनी है तो उनसे माँगें जिनसे आपका वैर-विरोध है, मनमुटाव है। केवल 'खमाऊँसा खमाऊँसा' से कोई लाभ नहीं होगा। क्षमा तो मैत्री भाव रखकर माँगी जाती है, ताकि की गयी गलतियाँ पुनः नहीं हों तथा वैर सदा-सदा के लिए मिट जाये। जिनसे वैर विरोध है उनसे अवश्य क्षमा माँगे, क्षमा दें-ताकि सम्यक्त्व की सुरक्षा हो सके। सम्यक्त्व मोक्ष का माध्यम और साधन है।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

मैं 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की नियमित पाठिका हूँ। इसमें सभी लेख ज्ञानवर्धक, रुचिकर तथा अनुकरणीय होते हैं। जिनवाणी का जुलाई, 2020 का अडक बहुत अच्छा लगा। 'परिस्थिति के निर्माण की कारणता' शीर्षक से सम्पादकीय लेख समसामयिक एवं ज्ञानवर्धक है तथा कर्मसिद्धान्त के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्तियों का समाधान प्रस्तुत करता है। श्रद्धेय आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. का प्रवचन 'जीवन-निर्माण की कला : स्वाध्याय' हृदय पर गहरा प्रभाव अंकित करता है और आज भी प्रासंगिक एवं अनुकरणीय है तथा जीवन की अनगिनत समस्याओं का समाधान करने वाला है। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का प्रवचन 'चातुर्मास का महत्त्व' भी आचरणीय एवं ध्यान देने योग्य है। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. का प्रवचन 'प्रदर्शन नहीं आत्मदर्शन करें' सभी के लिए प्रेरणादायी है। श्री पी. शिखरमलजी सुराणा का लेख 'नैतिकता, प्रामाणिकता और निपुणता के कुछ जीवन्त प्रसङ्ग' बहुत ही रोचक एवं प्रेरणादायी है। श्री अरूणजी मेहता का लेख 'यतना धर्म महान्' सभी

परिवारजनों के लिए उपयोगी है। हमें प्रत्येक कार्य विवेकपूर्ण तरीके से करने की प्रेरणा देता है। श्री टाट बाबा द्वारा लिखित 'शरीर से जुड़ा व्यक्ति परिस्थिति से जुड़ जाता है' लेख आध्यात्मिक है जो शरीर और आत्मा को भिन्न दर्शाता है एवं ध्यान के माध्यम से समझने योग्य है। अन्य सभी लेख 'कर्मों का बन्धन एवं निर्जरा', 'चिन्तन करो ना' एवं 'कोरोना महामारी : मानवीय दुष्कृत्यों का परिणाम' आदि भी समयानुकूल एवं जानकारी से परिपूर्ण हैं। श्री धर्मचन्द्रजी जैन के लेख से हमेशा ही तत्त्व-चर्चा से सम्बन्धित ज्ञान वर्धन होता है। श्री मनीषजी मेहता का लेख 'विवशता एवं पराधीनता पर विजय हेतु धर्मसाधना' भी युवकों के लिए प्रेरणादायी है। सभी चातुर्मासों की जानकारी एवं धार्मिक गतिविधियों की जानकारी भी इससे प्राप्त हो जाती है। बच्चों के लिए प्रेरणादायी कहानी भी इसमें हर माह होती है।

इस तरह से मुझे यह जिनवाणी का जुलाई, 2020 का अडक विशेष रुचिकर एवं प्रेरणादायी लगा। जिनवाणी के आगामी विशेषाडक 'जैन जीवन शैली' की प्रतीक्षा रहेगी।

-श्रीमती विमला जैन, 70, जयणा विश्वकर्मा नगर
द्वितीय, महाराजी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)

पड़ोसिन

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराना

सुहानी-सुरेन्द्र को अचानक श्वास लेने में तकलीफ होने लगी तो अस्पताल जाने का निर्णय लिया। रावी और रम्य को पड़ोसिन मीरां के यहाँ छोड़ दिया। घर की चाबी भी उन्हें सम्भलवा दी और कहा, “चाबी अपने पास में रखना। हम जल्दी जाँच करवा कर आ रहे हैं।” लॉकडाउन के कारण शहर की सभी सड़कें सुनसान पड़ी थीं। दुकानें, स्कूल, कॉलेज, मॉल सब बन्द पड़े थे। स्थान-स्थान पर पुलिस का कड़ा पहरा था। मास्क के बिना चलने वालों पर 200/- का चालान लगाया गया था। सुहानी-सुरेन्द्र की पूछताछ होने पर उन्होंने बताया हमारी तबीयत ठीक नहीं है। हम अस्पताल जा रहे हैं। दोनों ने मास्क लगा रखा था और सोशल डिस्टेन्स से चल रहे थे। घर से अस्पताल बहुत पास में था। पुलिस ने उन्हें नहीं रोका।

डॉक्टर जाँच से पता चला कि दोनों कोरोना महामारी से संक्रमित हैं, उन्हें आइसोलेशन वार्ड में भर्ती कर लिया गया था।

सुरेन्द्र ने कहा-“डॉक्टर साहब! इस शहर में मेरे कोई परिजन नहीं रहते हैं, कुछ समय के लिए मुझे छोड़ दीजिये। मेरे दो छोटे बच्चे हैं, उनसे मिलकर दोनों को पड़ोसिन को सौंपकर आ जाऊँगा।”

डॉक्टर साहब ने कहा-“अब आप यहाँ से नहीं जा सकते हैं, आप फोन से बात कर लीजिए।”

सुरेन्द्र ने मीरां पड़ोसिन को फोन लगाया।

सुरेन्द्र-सुहानी-“मीराँ जी! हम कोरोना वायरस से संक्रमित हैं, हम घर पर नहीं आ सकते हैं। रावी-रम्य को आपके पास ही रखना। हम आपको कष्ट दे रहे हैं। रावी-रम्य से बात करवा दीजिए।” कुछ सामान चाहिए तो घर से ले लेना। रावी-रम्य ने अपने मम्मी-पापा से बात की।

रावी-रम्य- “पापा-मम्मी! आप जल्दी आना।” बड़ी माँ हमें बहुत प्यार से रखती हैं।

सुहानी- “हम जल्दी आएँगे, तुम खुश रहना।”

सुरेन्द्र-सुहानी बिहार के रहने वाले थे। उनका अन्तर्जातीय प्रेम विवाह था, मातृपक्ष और पितृ पक्ष दोनों उनसे रूठ थे। दोनों पक्ष उनसे सम्बन्ध तोड़े हुए थे। सुरेन्द्र अपने पिता को पत्र लिखता रहता था और जयपुर आने के लिए विनति करता था। रावी जन्मी तब पिता को सूचना दी कि आप अपनी पौत्री को आशीर्वाद देने आइये। सूचना में उत्तर मिला कि तुम्हारे-हमारे बीच में कोई रिश्ता नहीं है। मुझे कलमुँही का मुँह नहीं देखना है। बार-बार फोन कर के हमारा जी क्यों दुःखाते हो?

सुरेन्द्र-सुहानी अपनी प्यारी बिटिया के लिए कलमुँही शब्द सुनकर उदास हो गए। वे तो उसे निहारते-निहारते भी नहीं थकते थे। दोनों नौकरी करते थे। घर की चाबी मीरां को देकर जाते थे ताकि बच्चे स्कूल से आकर ताला खोल लें। अधिकतर बच्चे मीरां के घर रहते थे। बच्चे मीरां को ‘बड़ी माँ’ से सम्बोधित करते थे। मीरां यह अपना नाम सुनकर फूले न समाती थी। मीरां के बच्चा नहीं था।

सुरेन्द्र-सुहानी को कोरोना लक्षण का पता नहीं लगा और कोरोना वायरस तृतीय स्तर पर चला गया। पति-पत्नी में असीम प्रेम था। दोनों की कमाई अच्छी थी। घर का मकान था। सभी प्रकार की सामग्री से भरा हुआ था।

अस्पताल से मीरां के लिए फोन आया कि सुहानी का निधन हो गया और दाह संस्कार भी कर दिया गया है। मीरा अशुभ समाचार सुनकर फूट-फूटकर रोने लगी। बच्चों ने पूछा-“बड़ी माँ क्यों रो रही हो?”

बड़ी माँ ने कहा-“मेरे पेट में पीड़ा हो रही है।”

रावी-रम्य कहने लगे-“आप सो जाओ। हम काम कर लेंगे।”

सुरेन्द्र को कोरोना तृतीय स्तर पर तो था और सुहानी की मृत्यु, वह सहन न कर सका और उसका भी देहावसान हो गया। तीसरे दिन पुनः फोन आया कि हम सुरेन्द्र को बचा न सके। उनका अन्तिम संस्कार कर दिया गया है।

मीरां के आँसुओं का बाँध टूट गया। बच्चे ऑन-लाइन पढ़ रहे थे। मीरां का चिन्तन चला। बच्चे माता-पिता विहीन हो गए हैं। इतने छोटे हैं, कब बड़े होंगे। इनको यह दुःखद समाचार कैसे बताऊँ? मैं स्वयं ही सम्भाल नहीं पा रही हूँ, उन्हें कैसे सम्भालूँगी। मुझे सुरेन्द्र के पिता को सूचना देनी होगी।

मीरां ने सुरेन्द्र के पिता को फोन लगाया।

“श्रीमान् जी! आपको सूचित करने का साहस मेरे में नहीं रहा है, लेकिन पड़ोसिन के नाते बताना तो होगा। सुरेन्द्र और सुहानी कोरोना से संक्रमित हो गए थे। वे अस्पताल में भर्ती हो गए थे। कोरोना तृतीय स्तर पर पहुँच गया था। डॉ. साहब का मोबाइल आया कि अथक प्रयास के पश्चात् भी हम सुरेन्द्र और सुहानी को बचा न पाए। पहले सुहानी का देहान्त हुआ और तीसरे दिन सुरेन्द्र का भी हो गया। अन्तिम संस्कार भी अस्पताल द्वारा ही हुआ। दोनों बच्चों की फोटो भी आपके मोबाइल में डाल दी है। बच्चे मेरे पास हैं। आप चिन्ता न करें। उन्हें दुःखद घटना नहीं बताई गई है।”

अशुभ समाचार सुनकर अत्यन्त दुःखी हुए। अश्रुधारा बहने लगी, रुकने का आधार नहीं रहा। अब उनके पास आँसू, स्मृतियाँ और पछतावा ही शेष बचे थे।

सुरेन्द्र के पिता ने मीरां पड़ोसिन को मोबाइल लगाया। “मैं आपका आभारी हूँ। आप मेरे बच्चों को रख रही हैं। आवागमन की सेवाएँ प्रारम्भ होते ही बच्चों को लेने आऊँगा। क्रोध में अन्धा हो गया था। सच्चे सुख को ठुकरा कर पछतावे का दुःख पाल लिया है। इन भोले बच्चों की फोटो देखकर मेरा हृदय परिवर्तित हो

गया है। सुखभरा समय बीत गया। उसे पाने के लिए घोड़े भी नहीं पहुँच सकते हैं।”

जब मीरां ने सुरेन्द्र के पिता से बात की तब रावी ने यह पंक्ति सुन ली कि सुहानी-सुरेन्द्र संसार में नहीं रहे। ये शब्द सुनकर रावी बिलख-बिलखकर रोने लगी और रम्य भी रोने लगा। दोनों बड़ी माँ से चिपक गए। रावी-“बड़ी माँ, मम्मी-पापा कहकर गए थे कि हम जल्दी आएँगे। वे झूठ नहीं बोलते हैं। हम उनके बिना नहीं रह सकते हैं। बड़ी माँ उनके पास चलो। चलो माँ चलो।”

मीरां मौन हो गई। इन नादान एवं दया के पात्रों को कैसे समझाऊँ? मैं क्या उत्तर दूँ? मैं स्वयं अत्यधिक दुःखी हूँ। इनके सामने रो भी नहीं सकती हूँ, अन्दर ही अन्दर घुट रही हूँ। इनको कैसे चुप रखूँ? सुरेन्द्र-सुहानी को मैंने जन्म नहीं दिया, लेकिन मेरे लिए जन्म वालों से कम नहीं थे। उनको मेरे पर कितना विश्वास था। उनको कैसे भुला पाऊँगी? लॉक-डाउन खुलते ही बच्चों को इनके दादा ले जाएँगे तो मेरा जीवन दूभर हो जाएगा। बच्चे यहाँ रहते तो इनके सहारे जीवन अच्छा कट जाता।

मीरां ने बच्चों को गोद में सुलाया, सहलाया, समझाया और चुप किया। उनके लिए उनके पसन्द का खाना बनाया, पास में बिठाया और मुँह में ग्रास दिया, लेकिन वे खा नहीं पा रहे थे। उनको जबरदस्ती खाना खिलाया। उन्हें नीन्द दिला दी।

18 मई से 31 मई तक के लॉक-डाउन में विशेष ट्रेनों का चलना प्रारम्भ हुआ। रावी के दादा-दादी उनको लेने मीरां के घर आ गए। मीरां ने उनका स्वागत किया। पानी पिलाया पश्चात् चाय-नाश्ता लेकर आई। बच्चों के लिए दादा-दादी खिलौने, टॉफियाँ लाए थे। दादा-दादी ने बच्चों को गोद में बिठाया तो उन्हें स्वर्ग जैसा सुख का आभास हुआ और तुरन्त विचार आया कि इन बच्चों को देखकर मुझे प्रतिदिन मरना पड़ेगा। हे भगवन्! दिवंगत आत्माओं को सान्त्वना प्रदान करें। रम्य के दादा-दादी उन्हें याद करके रोते रहे।

मीरां-“भाई साहब शान्त रहिए। भगवान के

आगे किसी का जोर नहीं चलता है। मैंने बच्चों को बड़ी कठिनाई से चुप रखा है। इन्होंने खाना-पीना बहुत कम कर दिया है, उदास बैठे रहते हैं। इनकी बचपन की मस्तिष्क लुट गई। ये होनहार बच्चे हैं।

मीरां ने खाने की थाली लाकर रखी और पास में बैठकर उन्हें खिलाया। वे रो रहे थे, उन्हें ढाँढ़स बँधवाया और आगे की सुध लेने के लिए कहा। सुरेन्द्र के पिता ने कहा-“आप इन्हें मेरे साथ भेज दीजिए। मैं इन्हें बहुत प्यार से रखूँगा।”

मीरां-“मैं इन बच्चों को बहुत प्यार करती हूँ। इन्हें छोड़ना नहीं चाहती हूँ, लेकिन इन पर पहला अधिकार आपका है। आप चार-पाँच दिन इनके साथ रहिए, तब चलने के लिए इनका मानस बनेगा।”

बिहार जाने की घड़ी आ गई। मीरां ने चाबी लेकर सुरेन्द्र का घर खोला और पूरा घर सुरेन्द्र के माता-पिता को दिखाया। कमरे में सुरेन्द्र के परिवार की बड़ी सुन्दर फोटो लगी हुई थी। रम्य की दादी फोटो देखते ही मूर्च्छित हो गई। 8-10 मिनट से चेतना आई। बच्चों के पहनने के कपड़े, पाठ्य सामग्री और खिलौने पैक किये। मीरां ने खाना बनाकर साथ डाला, पानी से भरकर बोतलें तैयार कीं। ट्रेन आने का समय हो गया। टैक्सी मँगवाई गई। टैक्सी में सामान रखा और पाँचों-जन उसमें बैठ गए। स्टेशन आ गया, सब टैक्सी से नीचे उतर गए। रावी ने कपड़ों का बैग उठाया और रम्य ने खाने का सामान उठाया। सारा सामान लेकर गाड़ी में बैठ गए। रम्य ने बड़ी माँ से कहा-“आप गाड़ी में बैठो ना, पापा के घर चलेंगे।” मीरां ने कहा-“मैं बाद में आऊँगी।”

मीरां ने सुरेन्द्र के पापा को चाबी सम्भलवा दी। बच्चे दादा-दादी के पास बैठ गए, किसी भी प्रकार की हलचल नहीं, मूर्तिवत् हो गए। गाड़ी छुक-छुककर चलने लगी तो बड़ी माँ को प्रणाम किया और हाथ हिलाते रहे। बच्चे, बेचारे, बेचारे हो गए। कोरोना वायरस ने हँसती खेलती जिन्दगी छीन ली।

“रम्य दादा से बार-बार कहता, अब पापा का घर आएगा। पापा-मम्मी मिलेंगे।”

पटना शहर आ गया। गाड़ी रुकी। उन्होंने टैक्सी की, और घर पहुँच गए। घर की घण्टी बजाई और चाचा-चाची सामने आए। बच्चों को देखते ही उनका जी बैठ गया। पापाजी हमारे लिए आफत की पुड़िया क्यों लाए?

दादी ने बच्चों को नहलाया-धुलाया। उन्हें खाना खिलाया। रात को अपने पास सुलाया।

रम्य-“मम्मी-पापा कहाँ हैं? मुझे मिलना है।” दादी कुछ नहीं बोली। उसने कहानी कहना आरम्भ कर दिया।

दिन बीतते गए, लेकिन रावी-रम्य रोते रहते थे। उन्हें यहाँ सब पराए-पराए लगते थे। चाची के एक लड़की और एक लड़का था। वह अपने बच्चों को उनके साथ खेलने नहीं देती थी, आपस में बात करना भी मना था। वह कहती थी कि इनसे बोलने से, छूने से कोरोना संक्रमित हो जाओगे।

एक दिन रम्य खिलौने से खेल रहा था, तभी सर्वेश (चचेरा भाई) आया और खिलौना छीनकर ले गया। रम्य बहुत रुष्ट हुआ और दादा को बताया कि सर्वेश मेरा खिलौना ले गया है।

दादा ने आवाज लगाई-“सर्वेश, भैया को खिलौना दे दे। मैं दूसरा खिलौना लाकर दूँगा।”

चाची-“बाबा! सर्वेश खिलौने से खेल रहा है। मैं उससे लूँगी तो वह रोएगा। मैं उसे रुला नहीं सकती। क्यों रे रम्य! रोटी मेरी खाता है और दादा के पास जाकर चुगली करता है।”

रम्य-“चाची यह खिलौना मुझे बहुत अच्छा लगता है। आप दूसरा ले लीजिए।”

चाची-“निगोड़ा जबान करता है जीभ काट दूँगी।”

दादा यह बातें सुन रहे थे। अन्दर पीड़ा चुभन हो रही थी। प्रतिदिन दोनों बच्चे कहते, घर चलो। घर में मम्मी-पापा की फोटो लगी हुई है हम उनसे बातें करेंगे।

दादा-दादी विवश थे। चाची पैसे वालों की बेटी है। घर में उसका राज्य था।

एक दिन बर्तन साफ करने वाली बाई अवकाश पर थी। घर के सारे झूठे बर्तन रावी को माँजने को दिए। दादा-दादी को बड़ा तरस आया। दूध जैसे गोरे कोमल हाथ, इतने ढेर सारे बर्तन कब तक साफ करती रहेगी?

दादी-“रावी तू दूर हो जा, मैं साफ कर लूँगी।”

बहू-“माँ जी, मैंने आपसे कभी बर्तन साफ नहीं करवाए। रावी आठ साल की है, छोटी नहीं है। अब आपको पौत्री पर इतनी दया आ रही है। इतने वर्ष क्या हुआ था, जब भाई साहब हमेशा फोन करते थे कि आप जयपुर आओ, साथ रहेंगे। आप तो मेरी छाती पर मूँग दलते रहे।

रावी बर्तन साफ कर रही थी, एक काँच की प्लेट हाथ से फिसल कर टूट गई। फूटने की आवाज सुनते ही चाची दौड़कर आई उसके गाल पर ऐसी चिकोटी भरी कि खून बहने लगा, क्योंकि उसके नाखून चुभ गए। चिकोटी की पीड़ा इतनी हुई कि वह सहन नहीं कर सकी, चिल्लाई मम्मी, मम्मी! वह थोड़ी-सी गलती पर चिकोटियाँ भरती रहती थी। वह कभी कुछ नहीं बोली। दादी ने खून पोंछा और डिटॉल लगाया।

चाची पड़ोस में गई हुई थी। सर्वेश रम्य के पास और दोनों भागा-भागी करने लगे। खेल में सर्वेश दीवार से टकराया, ललाट सूज गया। चाची के घर आते ही सर्वेश ने कहा-“मम्मी रम्य ने धक्का मारा इसलिए चोट आ गई।”

चाची सर्वेश और रम्य को पकड़ कर दादा-दादी के पास ले गई। उन्हें बताया कि आपका लाड़ला पौत्र सर्वेश को ऐसा धक्का मारा कि ललाट सूज गया और खून भी जम गया है। उनके सामने रम्य को ऐसा पीटा कि श्वास रुक गई। रावी थरथराने लग गई, रोती-रोती भाई को गले लगा कर दोनों संकुचित होकर बैठ गए।

रम्य-“दादा! मैंने धक्का नहीं मारा। वह दीवार से टकरा गया था। दादी! मम्मी के घर चलो। बड़ी माँ से मिलना है। हमें वहाँ कोई नहीं मारता है।

दादा-दादी से यह भयंकर दृश्य देखा नहीं गया।

उनके जीवन में नई बहार आई थी, वह उनके भाग्य में लिखी हुई नहीं थी। दूसरे ही दिन दादा बच्चों को लेकर जयपुर पहुँच गए। दादा घर खोल रहे थे उसी समय बच्चों ने जोर से आवाज लगाई बड़ी माँ हम आ गए। बड़ी माँ आवाज सुनते ही जल्दी से बाहर आ गई। बच्चों ने उनको हाथों में ऐसा कसा कि उन्हें अलग करना कठिन हो गया। बड़ी माँ चाची हमें बहुत मारती है। हम उनके घर नहीं जाएँगे।

दादाजी निपट कर बड़ी माँ के घर आ गए। सबने खाना खा लिया तत्पश्चात् मीरांजी के साथ बातें होने लगीं। दादाजी ने कहा-“मीरां जी! आपके सामने घर की बातें बताने में लज्जा आ रही है, मैं विवश हूँ। बेटा-बहू इनको साथ में रखने के पक्ष में नहीं हैं।”

बेटा-बहू ने कहा-“दोनों बच्चों का पालन-पोषण करो। इन्हें पढ़ाओ-लिखाओ पश्चात् शादी करो, ऐसा पंगा मैं नहीं लेता हूँ। रम्य को घर का हिस्सा दो। आपकी सेवा तो हम करते हैं। इनके ननिहाल वालों का भी पत्र नहीं आया, वे भी इन्हें रखने के पक्ष में नहीं हैं। आप इन्हें अनाथ-आश्रम में डाल दीजिए। ये शब्द सुनकर मेरा जी दहल गया। मैं चेतना शून्य हो गया। बड़ी आकांक्षा से साथ रहने के लिए ले गया था। ऐसे सभ्य, सुन्दर और सुशील बच्चे कहाँ मिलेंगे? मैं इनका सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं हूँ। सौभाग्यशालिनी हैं आप, कुछ न होते हुए भी सब कुछ हो।”

मीरां-“प्रेम का सम्बन्ध अटूट होता है, उसमें लेन-देन एवं ऊँच-नीच भाव नहीं रहता है।”

दादाजी-“मीरांजी! इन बच्चों को कहाँ रखना है, इसका निर्णय आप और मुझे ही लेना है। इनको हॉस्टल में डालना चाहता हूँ। सुरेन्द्र का घर किराए पर दे देंगे तो किराया आ जाएगा, कुछ व्यय मैं वहन कर लूँगा। संरक्षक आपको रखेंगे ताकि आप समय-समय पर इनकी देख-रेख कर लेंगी।”

मीरां-“भाई साहब मेरे पर भरोसा हो तो मेरे भरोसे छोड़ दीजिए। मेरे इन बच्चों के अतिरिक्त कोई

नहीं है। सुरेन्द्र का घर रम्य के नाम करवा दीजिए। मैं अपना घर रावी को दूँगी। इनका जीवन सुखमय हो जाय, यही मेरी शुभकामना है। सुरेन्द्र का घर आपका घर है, आप भाभीजी को यहाँ ले आएँ। मैं सब व्यवस्था कर लूँगी। यही मेरी कर्मभूमि है।”

कोरोना महामारी में डॉक्टर, नर्स-स्टॉफ, पुलिस, सफाई कर्मचारी एवं अन्य संस्थाएँ तन, मन और धन से सेवाएँ दे रहे हैं। कुछ लोग खाने के पैकेट बनाकर भूखों की भूख मिटाते हैं। प्यासों को पानी की बोतलें देकर प्यास बुझाते हैं। महिलाएँ मास्क बना कर निःशुल्क बाँटती हैं। आप उचित समझें तो इन बच्चों को मुझे दे

दीजिए। मैं इन्हें पालकर बहती गंगा में हाथ धो लूँ। मैं जानती हूँ ये अन्य के पास खुश नहीं रह सकेंगे।

दादाजी-“मैं भी यही चाहता हूँ कि आप इन बच्चों को रखिए। यदि आप में खोट होती तो घर की चाबी मुझे नहीं देती और दोनों के देहावसान की सूचना नहीं करती। यह कितनी बड़ी बात है। दादाजी बच्चों को बुलाकर बड़ी माँ की गोद में बिठा देते हैं।

मैं आपका आभारी हूँ। किन शब्दों से आपके गुणगान करूँ।”

मीराँ-“भाई साहब मैं आपकी कृतज्ञ हूँ। आपने मेरा जीवन लौटा दिया।”

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

जीवन का आनन्द लें हर दिन

श्रीमती सुशीला जैन

हमें जो मिल रहा है वह हमारी किस्मत है और जो नहीं मिलता है वह हमारी बदकिस्मती है, पर जो मिला है उसका आनन्द उठा लो तो मस्ती ही मस्ती है। मस्ती में मस्त रहना स्वस्थ जीवन का राज है। जो मिला है उसे प्रसाद समझो और आगे बढ़ने के प्रयास करते रहो। खुशी पैसों में या बाहर नहीं मिलती, खुशी अपने भीतर ही छुपी हुई है। महसूस करने की जरूरत है।

एक बाई जी एक करोड़ों की मालकिन के यहाँ काम करती थी। लेकिन उसकी मालकिन हमेशा मुँह लटकाकर बैठी रहती थी। सोचती रहती थी ‘मेरा जीवन कोरा कागज कोरा ही रह गया।’ बिल्कुल इसके विपरीत जो काम करने वाली बाई आती वह हमेशा खुशमिज़ाज और गुनगुनाती हुई घर में आती और मस्ती में गाना गाती ‘सावन का महीना, पवन करे शोर, जियरा झूमे ऐसे जैसे वन में नाचे मोर’ और कोई टेंशन नहीं मस्ती में मस्त। उसे वहाँ से दो हजार रूपये और बचा हुआ खाना मिलता था। जिसे बच्चों के साथ खाकर जीवन बिताती थी। फिर भी बहुत खुश

रहती थी। एक दिन मालकिन को गुस्सा आया कि मैं तुम्हें दो हजार रुपये महीना और खाना देती हूँ फिर भी तुम खुशमिज़ाज रहती हो, तुम्हें किस बात का घमण्ड है। जबाब दो। बाई ने मुस्कराकर कहा-“मालकिन आपके पास सब कुछ है फिर भी आप सन्तुष्ट नहीं हो एवं उदास रहती हो। मेरी ओर देखो जितना मिलता है उसमें खुश रहती हूँ। जो पास में है उसका आनन्द नहीं उठाकर जो पास में नहीं है उसके लिए उदास रहती हो। कुछ लोग दिखावे के लिए ही दुःखी होते हैं।

एक आदमी अपने गार्डन में पानी देता था। उसे देखकर पड़ौसी ने पूछा कि प्लास्टिक के फूलों में रोज पानी क्यों देते हो? उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि पड़ौसी को दिखाने के लिए ताकि उन्हें वास्तविक पौधे समझें, इसलिए रोज पाइप से पानी देता हूँ।

दिखावे के लिए हमें तकलीफें उठानी पड़ती हैं और बेवजह अपने दुःखी बना लेते हैं। मनुष्य अपने सोच को सही बना ले तो थोड़े में भी खुश रह सकता है। दिखावे की कोई आवश्यकता नहीं है। सन्तोष है तो आनन्द ही आनन्द है। सोच-सोच का फर्क है।

-यत्नी श्री प्रेमचन्द जैन (उजियारा वाले), हाल निवासी-703, मानसरोवर हार्ट, शिप्रापथ, जयपुर

आओ मिलकर कर्मों को समझें (6)

श्री धर्मचन्द्र जैन

जिज्ञासा— ज्ञानावरणीय कर्म-बन्ध के कौन-कौन से कारण बतलाये हैं?

समाधान—आत्मा के ज्ञान गुण को ढकने, आवरित करने वाले कर्म को ज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं। इस कर्म बन्ध के 6 कारण बतलाये हैं—1. ज्ञान प्रत्यनीकता, 2. ज्ञान निह्ववता, 3. ज्ञान में अन्तराय, 4. ज्ञान में प्रद्वेष, 5. ज्ञान की आशातना और 6. ज्ञान विसंवादनता।

जिज्ञासा— ज्ञान प्रत्यनीकता किसे कहते हैं?

समाधान—प्रत्यनीकता का अर्थ है-विरोध करना अर्थात् ज्ञान तथा ज्ञानदाता के प्रति विरोध का भाव रखना, ज्ञान प्रत्यनीकता है। कुछ बिन्दुओं से इसे समझने का प्रयास करते हैं—

1. ज्ञान को बेकार समझना, ज्ञान सीखने वालों को किताबी कीड़ा आदि कहकर उनका विरोध करना।
2. ज्ञान पढ़ने-सीखने से हमारा पेट नहीं भरता है, अतः ज्ञान सीखने में क्यों समय खराब करना, इससे तो अच्छा है काम-धन्धा करके पैसे कमाने में लग जाना चाहिए।
3. ज्ञान देने वाले गुरुओं के विरुद्ध आचरण करना, एक दूसरे को गलत साबित करने का प्रयास करना।
4. अपने से कम उम्र का व्यक्ति यदि कोई हित की बात कह रहा है तो भी उसमें अपना अपमान समझकर उस बात का विरोध करना।
5. ज्ञानी के प्रतिकूल आचरण को देखकर अपने मन में ज्ञान व ज्ञान के प्रति विरोध की भावना जमा लेना कि ज्ञान सीखने में कोई फायदा नहीं है।
6. आगम में प्ररूपित सिद्धान्तों, नियमों का विरोध करना, क्योंकि उनका हम पालन नहीं करते आदि।

जिज्ञासा— ज्ञान निह्ववता किसे कहते हैं?

समाधान— ज्ञान को तथा ज्ञान देने वाले गुरुजनों आदि

के नाम को छुपाना ज्ञान-निह्ववता कहलाती है। ज्ञान निह्ववता से भी ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध होता है जैसे—

1. जानते हुए भी अपने साथियों से इसलिए ज्ञान छुपाना ताकि मैं हमेशा उनसे आगे रह सकूँ। वे मुझसे आगे नहीं निकलें।
2. अपने शिष्यों को जानबूझकर ज्ञान की गहराइयाँ नहीं समझाना ताकि वे उस हेतु मेरे पास ही रहें, मेरे से अधिक उनका सम्मान नहीं हो।
3. अपनी विशिष्टता बनाये रखने के लिए अपने से कम पढ़े-लिखे गुरु का नाम नहीं बताना।
4. अनेक लोगों ने मिलकर ज्ञान का कोई बड़ा कर्म किया, किन्तु फिर भी प्रसिद्धि पाने हेतु केवल अपना ही नाम बतलाना, अन्य के सहयोग को प्रकट नहीं करना।
5. अपने गुरु को, अपने ज्ञान को इसलिए छिपाना ताकि उस पर अपना ही एकाधिकार बना रहे।
6. अन्य किसी के लेख, ग्रन्थ, भजन आदि को उनकी अनुमति के बिना अपने नाम से अथवा अन्य किसी दूसरे नाम से प्रस्तुत करना भी ज्ञान निह्ववता है।
7. आत्मा में केवलज्ञान की, अनन्तज्ञान की सत्ता मौजूद है, आगम वचनों से, गुरुजनों से जानते हुए भी उसे स्वीकार नहीं करना।
8. ज्ञान तथा ज्ञानी को अनावश्यक मानकर उनका गोपन करना आदि।

जिज्ञासा— ज्ञान में अन्तराय देने से ज्ञानावरणीय कर्म कैसे बन्धता है?

समाधान—ज्ञान में अन्तराय देने से सामने वाला व्यक्ति ज्ञान-प्राप्ति से वञ्चित हो जाता है, संसार के अन्य कार्यों में लग जाता है, ज्ञान की वह बाधकता हमारे भीतर में ज्ञान गुण को प्रभावित करने लग जाती है। हमारे भीतर

में ज्ञान के प्रति प्रेम नहीं, द्वेष भाव आने लग जाता है, जिसके कारण से ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध हो जाता है।

जिज्ञासा— ज्ञान में अन्तराय देने से क्या तात्पर्य है?

समाधान—1. ज्ञान में आगे बढ़ने के उत्साह को मन्द कर देना, पढ़ाई को छुड़ाकर धन्धे में, घर के कार्यों में जोड़ देना ताकि ज्ञान सीखने का कार्य निरन्तर नहीं चल सके तो यह ज्ञान का अन्तराय कहलाता है।

2. ज्ञान सिखाने वाले गुरुजनों की सेवा में जाने का मन बने तो उस व्यक्ति को घर-परिवार का दूसरा कार्य बताकर ज्ञान सीखने से रोक देना।
3. कोई स्वाध्याय-ध्यान-चिन्तन करने लगे तो उसे उस कार्य से हटाकर इधर-उधर की फालतू बातों में लगा देना।
4. कोई एकाग्रचित्त होकर अध्ययन करने लगे तो उसके पास में टी.वी., मोबाइल, रेडियो आदि तेज आवाज में चला देना ताकि उसका मन पढ़ाई में स्थिर न रह सके।
5. स्थानक आदि में कोई स्वाध्याय कर रहे हों, चर्चा-प्रश्नोत्तर कर रहे हों, उनके पास जोर-जोर से प्रार्थना, भजन, स्तोत्र आदि गाना।
6. ज्ञान सीखते-सीखते किसी का मन धर्म में, संयम में लगने लगे, उसे ज्ञान-ध्यान से हटाकर सांसारिक कार्यों में लगाने का प्रयास करना, ये सब ज्ञान में बाधा उत्पन्न करने वाले होने से अन्तराय स्वरूप समझे जाते हैं।

जिज्ञासा— ज्ञान के प्रति प्रद्वेष रखने से क्या आशय है?

समाधान— ज्ञान और ज्ञानी के प्रति जब भीतर से बहुमान नहीं होता तब उनके प्रति द्वेष भाव आ जाता है, इस द्वेष भाव के कारण से भी ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध हो जाता है, प्रद्वेष भाव के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं—

1. कम समय में, कम मेहनत से ही अधिक ज्ञान सीख लेने वालों से द्वेष भाव रखना, भीतर से जलन महसूस होना।

2. ज्ञानी व्यक्ति के पास अधिक लोग बैठते हैं, सीखते हैं, उनका आदर करते हैं, मुझे तो कोई पूछता ही नहीं है, अतः ज्ञानी से ईर्ष्या-द्वेष का भाव रखना।
3. यह बहुत होशियार है, प्रतिभाशाली है, समस्याओं का समाधान तुरन्त कर देता है, इसलिए सब इसको ही चाहते हैं, मुझे तो कोई महत्त्व ही नहीं देते, इसलिए मन ही मन उसके प्रति द्वेष भाव रखना।
4. ज्ञान सीखने के लिए सम्यक् पुरुषार्थ नहीं करना, बहाने बनाना, जो ज्ञान सीखने में रत रहता है, उसकी उपेक्षा करना।
5. इतर सम्प्रदायों के ज्ञानी, ध्यानी, त्यागी सन्त-सतियों को देखकर मन में द्वेष का, ईर्ष्या का भाव आना आदि।

जिज्ञासा— ज्ञान की आशातना से क्या तात्पर्य है?

समाधान— ज्ञान और ज्ञानी का बहुमान नहीं करना, अपमान करना, हीलना-निन्दा करना, ज्ञान की आशाताना कहलाती है, जैसे—

1. ज्ञानदाता से अनुमति प्राप्त किये बिना ही पढ़ना, सीखना शुरू कर देना अथवा जिस ग्रन्थादि को पढ़ने की मना हो, फिर भी बिना आज्ञा के पढ़ना।
2. किसी के द्वारा, गुरुजनों के द्वारा हित वचनों से समझाने पर भी उन्हें मूर्ख, बेवकूफ आदि समझना।
3. ज्ञान देने वाले से मजाक करना, उनकी नकल उतारना, उन्हें नीचा दिखाने का प्रयास करना।
4. अध्यापक अथवा गुरुजनों को आदरपूर्वक जवाब न देकर कटु शब्दों में उत्तर देना।
5. गुरुजनों के पढ़ाने-सिखाने पर बीच-बीच में बोलना यह तो मैंने पहले ही पढ़ लिया, इसमें कौनसी नई बात है आदि।
6. गुरुजनों का आदर-सम्मान नहीं करना अपितु उनकी कमियाँ देखने का प्रयास करना।
7. पात्र-अपात्र का विचार किये बिना ही ज्ञान सीखने की ज़िद करना। गुरुजनों के, बड़ों के समझाने पर समझने का प्रयास नहीं करना आदि।

जिज्ञासा- ज्ञान की विसंवादनता किसे कहते हैं?

समाधान- कुतर्कों द्वारा अथवा व्यर्थ की बातों के द्वारा ज्ञान और ज्ञानी के वचनों को गलत सिद्ध करने का प्रयास करना ज्ञान की विसंवादनता कहलाती है। जैसे-

1. गुरुजनों से पढ़ते-सीखते समय बीच-बीच में कुतर्क करना, अप्रासंगिक तथा विपरीत बातें करना, अपनी बात को सही तथा गुरु की बात को गलत साबित करना।
2. स्वयं की जानकारी में कमी होते हुए भी उसे छिपाने हेतु व्यर्थ का विवाद करना।
3. सूत्र-सिद्धान्त की गहराई से अनभिज्ञ होते हुए भी गुरुजनों के आशय को, विवेचन को, श्रद्धाभाव से स्वीकार नहीं करना।
4. गूढ तत्त्व, सूक्ष्म एवं अरूपी पदार्थों के स्वरूप को यथातथ्य स्वीकार न करके कुतर्कों से उन्हें गलत ठहराने का प्रयास करना।
5. संघीय मर्यादा, समाचारी, रीति-नीति आदि को जानते हुए भी उसके विपरीत किये जाने वाले कार्यों को कुतर्कों से सही ठहराने का प्रयास करना।
6. संघनायक के आदेश, आज्ञा एवं निर्देशों की यथोचित पालना नहीं करके, कुतर्कों द्वारा गलियाँ निकालना अथवा निर्देशों को गलत साबित करने हेतु वाद-विवाद करना आदि।

जिज्ञासा- ज्ञान और ज्ञानी से क्या तात्पर्य है?

समाधान- जिसमें ज्ञान गुण है, जो ज्ञान गुण के धारक हैं वे सब ज्ञानी कहलाते हैं अर्थात् जीव मात्र में ज्ञान गुण

होता ही है। अतः छोटे से छोटे जीव का अनादर, आशातन, द्वेष, निह्ववता आदि भी ज्ञानावरणीय कर्म के बन्ध के कारण हैं। यद्यपि व्यवहार में विशेष जानकारी वालों को ज्ञानी कहा जाता है, तथापि कर्म-बन्ध के प्रसङ्ग में सभी जीव ज्ञान गुण वाले हैं, ऐसा अर्थ लेना चाहिए।

हाँ, इतना अवश्य है कि विशिष्ट ज्ञानी की आशातना में ईर्ष्या, द्वेष आदि अधिक रहने की सम्भावना है, इसलिए इनमें अधिक स्थिति तथा अधिक अनुभाग के कर्म बन्धने की सम्भावना रहती है। सामान्य ज्ञानी, अल्प ज्ञानी के प्रति विरोध, द्वेष, ईर्ष्या, आशातना आदि में अपेक्षाकृत कम स्थिति तथा कम अनुभाग के कर्म बन्धने की सम्भावना रहती है।

जिज्ञासा- ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध कहाँ तक होता है?

समाधान- जब तक कषायों का उदय रहता है, तब तक ज्ञानावरणीय कर्म बन्धता ही है अर्थात् पहले से लेकर दसवें गुणस्थान तक निरन्तर यह कर्म बन्धता ही है। इतना अवश्य है कि मिथ्यादृष्टि के उत्कृष्ट स्थिति तथा उत्कृष्ट अनुभाग बन्धता है। जैसे-जैसे ऊपर के गुणस्थानों को जीव प्राप्त करता है तो स्थिति तथा अनुभाग दोनों में कमी होती जाती है।

ज्ञानावरणीय कर्म के बन्ध के कारणों में भी मुख्यतः द्वेष, ईर्ष्या, अनादर, क्रोध, अहंभाव आदि को ही बतलाया है जो प्रकारान्तर से कषायों के ही विविध रूप कहलाते हैं।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न
आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

(शेषांश पृष्ठ 21 का)

‘अम्मापियरो’ कहलाने वाले ऐसे श्रावक अपनी सन्तान का ध्यान रखते हैं। महावीर की प्ररूपणा का ध्यान रखते हैं। महावीर ने ‘अम्मापियरो’ का पद देकर कहा है-साधु-सती का ध्यान रखना, उनके सहायक बनना। अगर सन्त आर्येंगे तो आपके यहाँ से आर्येंगे। क्योंकि सन्त आकाश से तो टपकता नहीं, न

ही गुरुदेव के खेत में निपजता है। आपके खेत में निपजता है अतः आपके अपने घर से सन्त आ गए। अतः समय-समय पर सहयोग देकर आहार-पानी का, वस्तु का तथा विहार में मकान आदि की व्यवस्था का ध्यान रखना, श्रावकों का काम है। अगर सन्त में गुण नहीं हैं तो वे पूजनीय नहीं हैं। सन्त में गुण हैं तो आराध्य हैं। ज्ञान कैसे बढ़े, किस तरह से बढ़े। यह श्रावकों को देखना है।

कोरोना से बचाव हेतु संघ द्वारा विनम्र निवेदन

श्री धनपत सेठिया

गत चार माह से पूरा विश्व कोरोना महामारी के संकट से ग्रसित है। हमारा भारत देश भी इसकी चपेट में आया हुआ है। हमारे श्रद्धेय साधु-साध्वीगण पूरे जैन जगत की अमूल्य धरोहर हैं। उनकी सुरक्षा व स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल आदि भी समाज का परम कर्तव्य है। अभी तक इस महामारी का कोई भी निश्चित उपचार नहीं आया है। केवल बचाव एवं सुरक्षा ही इसका उपाय है।

इस सम्बन्ध में संघ द्वारा समय-समय पर संघ पदाधिकारियों, संघों एवं श्रावक-श्राविकाओं को गाइड-लाइन प्रेषित की गई थी। जिनवाणी के माह जून अंक में भी ध्यान देने योग्य बातें प्रकाशित की गईं। पुनः आप सभी की सेवा में विनम्र निवेदन किया जा रहा है।

1. कोरोना के सम्बन्ध में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, चिकित्सा विभाग तथा स्थानीय प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की अवश्यमेव पालना करें एवं करवाएँ।
2. सभी जगह हमारे परिचित डाक्टरों द्वारा पूज्य सन्त-सतियों को और श्रावक-श्राविकाओं को कोरोना वायरस के बारे में और स्थानीय स्थिति के बारे में सम्पूर्ण जानकारी दें तथा सावधानी रखने के उपाय विस्तारपूर्वक सभी को समय-समय पर बतायें।
3. शहरों में अभी भी धार्मिक स्थलों पर सभी धार्मिक सभाएँ, प्रवचन, शिविर, सामूहिक कक्षाएँ आदि कार्यक्रम एवं सामूहिक आयोजन अगले सरकारी आदेशों तक पूरे भारत में निषिद्ध हैं। किसी भी तरह से इन आदेशों का उल्लंघन नहीं करावें। जब भी आगे छूट मिलेगी, तदनुसार पालन का लक्ष्य रखें।
4. सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन दूर से ही किए जाएँ। किसी भी तरह से उन्हें छुएँ नहीं।
5. सन्त-सतीवृन्द के स्वास्थ्य एवं रक्षण का ध्यान

रखा जाये। बीमार या अधिक अवस्था वाले साधु-साध्वीगण का स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष ध्यान एवं बचाव रखा जाये।

6. स्थानक में मुँहपत्ती एवं मास्क के बिना प्रवेश नहीं करें। स्थानक/चातुर्मास स्थल में प्रवेश के पूर्व हाथों को सेनेटाइज करें। थर्मल स्क्रीनिंग द्वारा शरीर का तापमान लेना भी आवश्यक है। स्वस्थ व्यक्ति को ही स्थानक परिसर में प्रवेश करने दें।
7. दर्शनार्थियों द्वारा जूते निर्धारित स्थान पर ही खोले जाएँ तथा अलग-अलग रखे जाने की व्यवस्था हो।
8. दर्शनार्थियों के प्रवेश एवं निकास द्वार अलग-अलग हो सके, ऐसी व्यवस्था करावें ताकि आवागमन आमने-सामने न हों।
9. दर्शनार्थी बैठने के लिए अपना स्वयं का आसन काम में लें। स्थानक में उपलब्ध आसन, दरी, ओघे, पूँजनी, सामायिक के सभी तरह के उपकरण, वस्त्र आदि किसी को भी नहीं दें। यह सभी आवश्यकतानुसार श्रावक-श्राविका स्वयं के लेकर आएँ।
10. वस्त्र परिवर्तन कक्ष में श्रावकों के कपड़े अलग-अलग टाँगने की व्यवस्था हो।
11. दर्शनार्थियों का प्रवेश जहाँ साधु-साध्वीगण बिराज रहें हो, वहाँ सीमित हो।
12. कौनसे श्रावक-श्राविका कहाँ से आ रहे हैं, क्या-क्या छूकर आ रहे हैं, वे कितना बीमार हैं हमें ज्ञात नहीं है। अतः कोई भी श्रावक-श्राविका पूज्य सन्त-सतीवृन्द को छुएँ नहीं तथा आपस में भी 6 फीट की दूरी बना कर रखें। दर्शन की व्यवस्था इस प्रकार हो कि परस्पर 6 फीट की दूरी का उल्लंघन न हो। अच्छा होगा कि रस्सी/डोरी बाँधकर उन्हें पूज्य सन्त-सतीवृन्द के पास आने से रोका जाये।

13. दर्शनार्थियों की संख्या सरकारी नियमानुसार सीमित एवं नियन्त्रित रहनी चाहिये तथा 6 फीट की दूरी की पालना हो। दर्शन हेतु समय इस प्रकार निर्धारित करें कि जिससे सन्त-सतीवृन्द के आत्मसाधना, मौन साधना, अध्ययन, चिन्तन में बार-बार विघ्न न हो।
14. गोचरी के अतिरिक्त बहराने योग्य कोई भी वस्तु जैसे-पुस्तक, दवाइयाँ आदि संक्रमित नहीं हो, इसका पूर्ण ध्यान रखा जाए एवं बहराते समय आवश्यक दूरी बनाए रखें एवं मुखवस्त्रिका, मास्क का भी उपयोग करें।
15. गोचरी और विहारचर्या में स्वस्थ व्यक्ति ही पूज्य साधु-साध्वीगण के साथ जाएँ। गोचरी लेने के लिए दूर-दूर तक पूज्य साधु-साध्वीगण को नहीं ले जाएँ, निकटवर्ती सुरक्षित घरों में ही ले जाएँ। घर के दरवाजे/हैण्डिल आदि को श्रावक/सेवक ही खोले। गोचरी के समय सपरिवार दर्शन लाभ स्वतः ही होते रहेंगे।
16. गोचरी को थोड़ा दूर से बहरावें। अपने हाथ से आहार देने का लाभ प्राप्त करने हेतु उनके अत्यन्त नज़दीक न जाएँ। बाहर से आने वाले व्यक्ति आहार देने का लाभ प्राप्त करने हेतु किसी श्रावक के घर जाने की अनावश्यक चेष्टा नहीं करें।
17. स्थानक और स्थानक की हर वस्तु साफ़-सुथरी रहे। बार-बार सार्वजनिक उपयोग में आने वाली लोहे, लकड़ी, प्लास्टिक, काँच आदि की वस्तुओं, दरवाजे, हैण्डिल, रेलिंग, कुर्सी आदि वाशरूम, परठने की जगह, फर्श आदि की साफ़-सफाई बार-बार करें। सूर्यास्त पूर्व तक ऐसा किया जाए।
18. करने योग्य/न करने योग्य बातों की सूचना स्थानक के बाहर अवश्य प्रदर्शित करें।
19. स्थानक में समूह में भजन गाने की मनाही अगले सरकारी आदेश तक जारी रहेगी।
20. नज़दीकी डॉक्टर, अस्पताल आदि के नाम, फोन नं. आदि की जानकारी उपलब्ध हो तथा उसे स्थानक के बाहर प्रदर्शित करें।
21. बाहर से पधारने वाले श्रावक-श्राविकाएँ स्थानीय संघ को पूर्व सूचना देकर ही दर्शनार्थ पधारें।
22. भोजनशाला में प्रत्येक व्यक्ति के बीच बैठने के लिए पर्याप्त दूरी कम से कम 6 फीट रखें। खाना बनाते एवं परोसते समय पर्याप्त दूरी आपस में रखें।
23. स्थानक परिसर में किसी भी तरह का स्टॉल इस बार नहीं लगवाएँ।
24. स्थानक कर्मचारीगण एवं संघ सहायक को भी सभी बातों का ज्ञान कराना, उनको आवश्यक सुरक्षा-साधन उपलब्ध कराना, उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी है। इन सभी के मोबाइल में आरोग्य सेतु ऐप को इंस्टाल जरूर करवाएँ।
25. स्थानक कर्मचारी, संघ सहायक अथवा सेवार्थी श्रावक-श्राविका मोबाइल फोन को तथा विशेष रूप से स्क्रीन को एकदम साफ़ रखें। किसी दूसरे को उपयोग हेतु नहीं दें। सेनेटाइज करें।
26. मोबाइल फोन को कान या मुँह के करीब कम से कम रखें। जहाँ तक सम्भव हो स्पीकर फोन पर बात करें।
27. स्थानक के बाहर, मोबाइल जमा करते वक्त, मोबाइल रखने वाला व्यक्ति, दस्ताने पहने और दस्ताने पहनकर ही मोबाइल प्राप्त करें और वापस दें।
28. काम में लेकर छोड़ दिये गये मास्क, मुँहपत्ती, दस्तानों आदि का निस्तारण सही ढंग से किया जाये।
29. अगर किसी भी दर्शनार्थी या कर्मचारी को खाँसी, बुखार, जुकाम, गले में खराश, आँखें लाल, उल्टी, दस्त, शरीर में अकड़न, तकलीफ आदि हो तो तुरन्त डॉक्टर या सरकारी अधिकारी को सूचित करें।
30. नकारात्मक सोच नहीं रखें। अफवाहों पर विश्वास नहीं करें। जागरूकता ही बचाव है।

आत्मसाधना के इस वर्ष को अपनी रुचि अनुसार धर्मचर्चा घर में रहकर ही सम्पन्न करें एवं आत्मानुशासनार्थ उपर्युक्त नियमों का पालन करें एवं करावें। चतुर्विध संघ का यह दायित्व है। कोरोना महामारी से साध्वाचार एवं सन्त-सतीवृन्द रूपी अमूल्य धरोहर की रक्षा सर्वोपरि है। चतुर्विध संघ पालन करके-कराकर के सहयोग करें।

-महामन्त्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गरीतमचन्द जैन

समणसुत्तं-सम्पादक : डॉ. कमलचन्द सोगाणी, **अनुवादक**-श्रीमती शकुन्तला जैन, **प्रकाशक**-अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, श्री महावीरजी-322220, जिला-करौली (राज.), फोन नं. 07469-224323, **पुस्तक प्राप्ति स्थल**-जैन साहित्य उपलब्ध केन्द्र, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड़, नारायणसिंह सर्किल, जयपुर-302004 (राजस्थान) दूरभाष नं. 0141-2385247, भाग-1, भाग-2, भाग-3, **प्रत्येक का मूल्य**-50 रुपये।

‘समणसुत्तं’ ग्रन्थ की रचना भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण-महोत्सव के शुभ अवसर पर और सन्त विनोबाजी की प्रेरणा से हुई है। ब्र. जिनेन्द्र वर्णीजी प्रारम्भ से अन्त तक इस संकलन के कार्य में जुटे रहे। जैनधर्म के सभी सम्प्रदायों के मुनियों तथा श्रावकों का दिल्ली में सम्मेलन आयोजित किया गया। उस समय जैनधर्म के सभी सम्प्रदायों के मुनियों तथा विद्वानों ने चार बैठकों में जो संकलन तैयार किया, वह ‘समणसुत्तं’ ग्रन्थ के रूप में मान्य किया गया।

‘समणसुत्तं’ ग्रन्थ में जैनधर्म और दर्शन की सारभूत बातों का संक्षेप में क्रमबद्ध संकलन किया गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में चार खण्ड हैं और 44 प्रकरण हैं। कुल 756 प्राकृत गाथाएँ हैं, जो गेय एवं पारायण करने के योग्य हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन महावीर-जयन्ती, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, वीर निर्वाण सम्वत् 2501 (24 अप्रैल, 1975) को हुआ। गाथाओं का संकलन प्राचीन मूल ग्रन्थों से किया गया है, अतः यह समणसुत्तं आगमवत् स्वतः प्रमाण है।

‘समणसुत्तं’ के प्रथम खण्ड ‘ज्योतिर्मुख’ के 15 प्रकरण की 191 गाथाओं में से 8 प्रकरण की 81 गाथाओं का समावेश ‘समणसुत्तं भाग-1’ पुस्तक में

किया गया है। 7 प्रकरण की 110 गाथाओं का समावेश समणसुत्तं भाग-2 पुस्तक में किया गया है। इसी तरह से समणसुत्तं के ‘द्वितीय खण्ड मोक्षमार्ग’ के 5 प्रकरण की 96 गाथाओं का समावेश समणसुत्तं भाग-3 पुस्तक में किया गया है।

पुस्तक के प्रथम भाग में पंच-परमेष्ठी, जिनशासन, संघ निरूपण, संसारचक्र, कर्म, मिथ्यात्व और राग-परिहार सम्बन्धी गाथाओं का समावेश किया है। इसी प्रकार से पुस्तक के द्वितीय भाग में धर्मसूत्र, संयमसूत्र, अपरिग्रहसूत्र, अहिंसासूत्र, अप्रमादसूत्र, शिक्षासूत्र और आत्मसूत्र का वर्णन किया गया है। पुस्तक के तृतीय भाग में मोक्ष-मार्ग, रत्नत्रय, सम्यग्दर्शन, सम्यग्दर्शन के अङ्ग, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र, व्यवहार चारित्र, निश्चय चारित्र और समन्वय विषयक गाथाओं का वर्णन किया गया है।

‘समणसुत्तं’ का हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सरल, सुबोध एवं नवीन शैली में किया गया है, जो पाठकों के लिए महान् उपयोगी सिद्ध होगा। प्रत्येक गाथा का अन्वय किया गया है। एक-एक शब्द की व्याकरण सम्बन्धी विश्लेषणात्मक व्याख्या करके हिन्दी शब्दार्थ दिया गया है। तत्पश्चात् अन्वय सहित अर्थ किया गया है। आवश्यकतानुसार व्याकरण के नियमों का भी सन्दर्भ दिया गया है। पुस्तक के प्रारम्भ में संकेत-सूची दी गई है, जो प्राकृत भाषा के विद्यार्थियों के लिए गाथाओं का अर्थ समझने में उपयोगी है। प्रत्येक भाग की पुस्तक के अन्त में मूल गाथाओं का संकलन एक साथ दिया गया है, जो कण्ठस्थ करने एवं सन्दर्भ देखने के लिए उपयोगी है। पुस्तक के अन्त में सहायक पुस्तकें एवं कोश की सूची भी संलग्न की गई है।

समणसुत्तं ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद पाठकों के लिए सरल, सहज एवं सुबोध है तथा गाथाएँ गेय, कण्ठस्थ करने योग्य एवं जीवन में उतारने योग्य हैं।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, ‘जयणार’, विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

समाचार विविधा

समस्त श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन

जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा अहिंसा नगरी कोसाणा में तथा समस्त सन्त-सतीवृन्द अपने-अपने चातुर्मास स्थल पर चातुर्मासार्थ सुख साता पूर्वक विराजित हैं।

वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण सम्पूर्ण जन-जीवन प्रभावित है। इस स्थिति में हमारी अमूल्य धरोहर हमारे सन्त-सतीवृन्द स्वस्थ रहें, ऐसी हम सभी की मंगल कामना एवं भावना है। उनके स्वास्थ्य में किसी प्रकार की समस्या नहीं हो एतदर्थ हम सभी को पूर्ण विवेक से कार्य लेना है।

चातुर्मास समय में प्रत्येक बन्धु/बहिन की दृढ़ भावना रहती है कि पूज्य सन्त-सतीवृन्द की सेवा में पधार कर दर्शन-वन्दन, प्रवचन एवं ज्ञानार्जन लाभ लेवें। परन्तु वर्तमान परिस्थिति में ऐसा सम्भव नहीं है। अतः आप सभी से करबद्ध निवेदन है कि चातुर्मास में सन्त-सतीवृन्द के दर्शन हेतु अपने क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने से पूर्व चातुर्मास-स्थल के संघ अध्यक्ष/मन्त्री से अवश्य वार्ता कर स्वीकृति प्राप्त करें। उनके द्वारा स्वीकृति दिए जाने पर ही आप वहाँ पधारें। उस क्षेत्र की वर्तमान स्थिति की आपको तथा आपके क्षेत्र की वर्तमान स्थिति की जानकारी अध्यक्ष/मन्त्री को होने से सुरक्षा बनी रहेगी। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप संघ के इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे। इसी शुभ भावना के साथ।

-धनपत खेरिया, महामन्त्री

अहिंसा नगरी कोसाणा में संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का पावन पदार्पण

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा कोसाणा में सुख-साता पूर्वक विराज रहे हैं।

राजाज्ञा एवं संघ निर्देशनियमावली के अनुरूप ही सारी व्यवस्थाएँ एवं दैनिक धर्म क्रियाओं का स्वरूप निर्धारित किया गया है। 20-25 जनों से अधिक एकत्रित न हों, इसको ध्यान में रखते हुए प्रार्थना, आगम-वाचना एवं पच्चीसबोल की कक्षा चल रही है। प्रवचन बन्द है। प्रवेश द्वार पर सेनेटाइजर, तापमान चैकिंग की व्यवस्था है तथा सोशियल डिस्टेंसिंग का पूर्ण पालन किया जा रहा है। सन्तों के ऊपर विराजने के स्थल पर प्रवेश वर्जित कर द्वार के बाहर मांगलिक प्रदान की जाती है।

देई के श्री पवन कुमारजी जैन (गोयल) ने सदार शीलव्रत स्वीकार किया। आठ, नौ, उपवास के अतिरिक्त पचोले, तेले, बेले, एकान्तर, एकाशन, आयम्बिल आदि की तपस्याएँ चल रही है। श्री हर्षितजी कोठारी ने 9 उपवास की एवं श्री पवनजी टेलर ने आठ उपवास की तपस्या पूर्ण की है। कोसाणा भक्ति प्रधान है तथा वन्य जीव रक्षण के लिए जाना जाता है। पूज्य आचार्य हस्ती ने इसे 'अहिंसा नगरी' नाम दिया था। सन् 2013 में यहाँ पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का चातुर्मास था। कोसाणा निवासी भक्ति भावना, सेवा भावना एवं उदारता से ओतप्रोत है।

-गिररज जैन

सवाई माधोपुर-प्रातः स्मरणीय आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के पट्टधर संघनायक शासन गौरव

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी परम श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ठाणा-3 का सन् 2020 का सवाईमाधोपुर में पावन वर्षावास सानन्द चल रहा है। कोरोना महामारी के चलते संघ और सरकारी गाइडलाइन की पालना करते हुए हर जन में उत्साह है उमंग है। प्रवचन एवं धार्मिक सामूहिक आयोजन न होने की टीस जरूर है, किन्तु दर्शन, वन्दन व्यक्तिशः स्वाध्याय, ज्ञानार्जन में सभी सक्रिय हैं, उत्साहित हैं। जब से पोरवाल क्षेत्र में सन्तों ने प्रवेश किया, लोग संयत रहकर दर्शन, वन्दन का लाभ ले रहे हैं।

महाराज श्री हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी से महावीर भवन शहर सवाईमाधोपुर चातुर्मासार्थ पधार गए। पधारने के साथ ही चातुर्मासिक चौदस के दिन धर्म आराधना का आह्वान करते हुए फरमाया कि नगर परिषद् क्षेत्र के अलग-अलग स्थानकों में और अनुकूलतानुसार घरों में भी 108 पौषध होने चाहिए। लोगों ने महाराज श्री की प्रेरणा को शिरोधार्य कर अलग-अलग स्थानकों में 108 से भी अधिक पौषध कर गुरु-भक्ति एवं संघ-भक्ति का परिचय दिया। इसी क्रम में तपस्या का प्रवाह भी निरन्तर बना हुआ है और अभी तक अनेक अर्द्ध मास खमण, ग्यारह, नौ, आठ की तपस्याएँ हो चुकी हैं और आगे भी निरन्तर जारी हैं। एकान्तर, एकाशन, आयम्बिल एवं तेले की लड़ी का भी क्रम बना हुआ है। साथ ही सीमित संख्या में जिज्ञासु जन आगम वाचनी एवं धर्मचर्चा में भाग लेते हैं और रात्रिकालीन संवर में भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए लाभ ले रहे हैं।

साथ ही गुरु हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष पर आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के संकेतानुसार 'प्रतिक्रमण वर्ष' के अन्तर्गत अनेक बालक-बालिकाएँ, युवा एवं प्रौढ़ वैयक्तिक प्रतिक्रमण सीख रहे हैं और ज्ञानवृद्धि में पुरुषार्थ भी कर रहे हैं।

कुल मिलाकर यह चातुर्मास आत्मजागृति का अनुपम उदाहरण बनता जा रहा है। सन्तों को पाकर पूरे नगर परिषद् क्षेत्र में उत्साह है, उमंग है, उल्लास है और भक्ति की अपूर्व लहर है।

-मुकेश जैन, मन्त्री

महावीरनगर-जयपुर-प्रातः स्मरणीय आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के पट्टधर संघनायक शासन गौरव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. ठाणा-3 एवं व्याख्यात्री महासती ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-9 सुख-साता पूर्वक महावीर नगर-जयपुर में विराज रहे हैं। चातुर्मास काल में 8.30 बजे से 10.30 बजे तक भगवती सूत्र का वाचन चल रहा है, जिसमें व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि महासती मण्डल एवं शिक्षा समिति के शिक्षक लाभ ले रहे हैं। अन्य का प्रवेश कोरोना के कारण प्रतिबन्धित है। दोपहर में 2 बजे से 4 बजे तक प्रज्ञापना सूत्र का वाचन होता है। सोशियल डिस्टेंसिंग का पूरा पालन किया जा रहा है। प्रवचन आदि बन्द हैं। साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-9 महारानी फार्म में एवं व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 मालवीय नगर में सुख-साता पूर्वक विराज रहे हैं। धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है।

पाँच्यावाला-जयपुर-व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पाँच्यावाला-जयपुर स्थित जिनवाणी भवन में हुआ। संघ कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने पाँच्यावाला संघ को बधाई दी और इस कोरोना काल में चातुर्मास में साधु-साध्वी गण को कोरोना से सुरक्षित रखने सम्बन्धी सावधानियों के बारे में विस्तार से बताया। पूर्व संघाध्यक्ष श्रीमान् सुमेरसिंहजी बोथरा, श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत ने भी स्थानीय संघ को शुभकानाएँ प्रदान की। सभा का संचालन स्थानीय संघ के मन्त्री श्री एवन्त कुमारजी जैन ने किया।

-एवन्त कुमार जैन, मन्त्री

राजाजीनगर-बेंगलूर-रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आमगज़, पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प्रखर व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा., महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा., महासती श्री आराधनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-6 का सामायिक-स्वाध्याय भवन, राजाजीनगर, बेंगलूरु में मंगल प्रवेश हुआ। स्थानीय संघ ने महासतीवृन्द के दर्शन-वन्दन हेतु पधारने वाले श्रद्धालुओं से निवेदन किया है कि स्थानक में आने से पूर्व मास्क लगाकर आयें और कम से कम बारह फीट की दूरी चारित्र आत्माओं से बनाएँ रखें। साथ ही सामायिक-स्वाध्याय भवन में अंकित नियमों का सबको पालन करना अनिवार्य है।

बेंगलोर के समस्त 'रत्नसंघीय परिवार' महासतीवृन्द की पावन सेवा में पधारने की दिनांक संघ कार्यालय में निश्चित कराकर पधारें, जिससे एक साथ भीड़ भी नहीं हो और सबको बारी-बारी सपरिवार महासतीवृन्द के शुभ सान्निध्य का लाभ मिल सके तथा धर्म-परिचय भी हो सके। यह संघ की व्यवस्था की दृष्टि से निवेदन है। वैसे कोई भी कभी-भी दर्शन आदि का लाभ 'स्वाध्याय भवन' में अंकित समय सारिणी में कर सकता है।

महासतीवृन्द की प्रेरणा है कि 'आयम्बिल' तप प्रतिदिन हो तथा कम से कम छह जने रोजना करें। बड़ी तपस्या और उपवास आदि फिलहाल कोरोना काल में स्थगित रखें।

-गौतमचन्द ओस्तवाल, मन्त्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर

श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा-शताब्दी के अवसर पर

वेबिनार व्याख्यान-माला-2 आयोजित

जयपुर-सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्मयोगी, परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा-शताब्दी के अवसर पर 5 जुलाई, 2020 को 'युगमनीषी आचार्यश्री हस्ती की इतिहासदृष्टि एवं गुणनिष्ठा' विषय पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संस्था सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर के द्वारा तृतीय व्याख्यान यूट्यूब एवं साइनोविड.इन (YouTube & synovid.in) पर आयोजित किया गया। इस व्याख्यान-माला में प्रमुख वक्ता पूर्व राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, जोधपुर ने पूज्य आचार्यप्रवर के द्वारा प्रणीत 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' (चार भाग) में निरूपित इतिहास विषयक उदाहरणों के द्वारा यह पुष्ट किया कि अपने आपको दूसरे से श्रेष्ठ समझने की प्रवृत्ति देश एवं समाज के ह्रास का कारण बनती है। उन्होंने कहा कि अरबों के आक्रमण की चर्चा करते हुए पूज्य आचार्य हस्ती ने मौलिक इतिहास में यह कथन किया है कि अपने को श्रेष्ठ समझने के कारण ही दूसरे राजाओं के साथ एकता नहीं हो सकी एवं अरब आक्रान्त सफल रहे। उन्होंने आचार्य स्थूलिभद्र, आचार्य वज्र एवं आर्य रक्षित में आयी वैराग्य भावना को आचार्य हस्ती में एक साथ प्रतिपादित किया। आचार्य हेमचन्द्र से भी आचार्य हस्ती की तुलना की तथा यह कहा कि असाधारण एवं अलौकिक प्रतिभा को लेकर जन्म लेने वाले विशिष्ट साधक समष्टि के पुण्य से ही मिलते हैं। आचार्य हस्ती में जो विशेषताएँ थीं उनसे यह पुष्ट भी होता है। अपने नाम की अभिलाषा, अपने को श्रेष्ठ समझने, दूसरे को हानि पहुँचाने तथा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति से भारत राष्ट्र का पतन हुआ। इसी प्रकार समाज का पतन भी इन्हीं आकांक्षाओं से होता है। आचार्य हस्ती ने खरबूजे की तरह संगठित होकर रहने की शिक्षा प्रदान की। यह आलेख प्राप्त होने पर जिनवाणी में प्रकाशित होगा।

डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने कहा कि आदरणीय श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने अद्भुत एवं प्रभावशाली रीति से वक्तव्य दिया है। पूज्य आचार्य श्री हस्ती के साथ अनेक विशेषणों में चारित्रचूडामणि एवं इतिहास मार्तण्ड ये दो विशिष्ट

विशेषण भी लगाये जाते रहे। चारित्रचूड़ामणि विशेषण उनकी गुणनिष्ठा का सुफल है तथा इतिहास मार्तण्ड विशेषण जैनधर्म के इतिहास को प्रामाणिक दृष्टि से प्रदर्शित करने का सूचक है। पूज्य आचार्य श्री हस्ती ने पट्टावली प्रबन्ध संग्रह, जैन आचार्य चरितावली जैसे ग्रन्थों का प्रणयन करने के साथ जैनधर्म का मौलिक इतिहास चार भागों में प्रस्तुत किया। उन्होंने इतिहास की रचना प्रामाणिकता के आधार पर की, इसलिये यह ग्रन्थ अनेक विश्वविद्यालयों में सन्दर्भ ग्रन्थों के रूप में जोड़े गये हैं। पूज्य आचार्य हस्ती में गुणग्राही दृष्टि थी। उन्होंने पूज्य श्री मन्नालालजी म.सा. से नये अनुभव, पूज्य श्री आत्मारामजी म.सा. से नियमित ध्यान की प्रेरणा ली। पूज्य श्री जवाहरलालजी म.सा. की प्रवचन कला के साथ-साथ शास्त्रज्ञ श्रावक श्री लक्ष्मीचन्दजी मन्दसौर, श्री केसरीमलजी सुराणा, रामपुरा तथा धार के पोरवाल सुश्रावक से आगम की धारणाएँ ग्रहण की। गुणग्राही दृष्टि के कारण ही आप गुण समुद्र बन गये।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने सूचित किया कि आगामी वेबिनार 9 अगस्त, 2020 को आयोजित होगी, जिसमें न्यायमूर्ति श्री जसराजजी चौपड़ा सम्बोधित करेंगे।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता ने प्रमुख वक्ता श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया तथा उनके विलक्षण वक्तव्य के लिए प्रसन्नता प्रकट की।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा ने इस कार्यक्रम का मंगलाचरण से लेकर समापन तक सुन्दर शब्दावली में संचालन किया।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 'महिला सशक्तीकरण एवं श्राविका उत्थान के प्रणेता : गुरु हस्ती' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता

जैन जगत् के आलोकमान भास्कर प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के दीक्षा शताब्दी एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के स्थापना दिवस 'श्राविका गौरव दिवस' के अवसर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध निम्नाङ्कित बिन्दुओं को आधार बनाकर लिखना है, मुख्य बिन्दु निम्नलिखित हैं-

1. संघ में श्राविकाओं की भागीदारी और कर्मठता बढ़ाने में गुरु हस्ती प्रेरक
2. सामायिक-स्वाध्याय के प्रणेता गुरु हस्ती द्वारा श्राविकाओं को महत्ता
3. गुरुदेव की प्रेरणा जो जीवन को नया मोड़ दे गई

अन्य निर्देश इस प्रकार से हैं-

1. निबन्ध स्पष्ट तथा साफ सुन्दर लिखावट में हो जो आसानी से पढ़ा जा सके
2. निबन्ध की शब्द सीमा पन्द्रह सौ शब्द हैं, उनमें से तेरह सौ शब्द आपको विषय-वस्तु पर लिखने हैं तथा 200 शब्दों में आप अपनी भावनाएँ प्रकट करें कि आप संघ उन्नति में अपना अमूल्य योगदान किस प्रकार दे सकते हैं।
3. निबन्ध के अन्त में आप अपना पूरा नाम, पता, मोबाइल नम्बर और खाताधारक का नाम, बैंक खाता संख्या, बैंक आई.एफ.एस. कोड अवश्य लिखें।
4. निबन्ध प्राप्ति की अन्तिम तारीख 5 सितम्बर, 2020 है।
5. अन्तिम निर्णय जाँच कमेटी का रहेगा।

6. प्रतियोगिता का परिणाम 24 सितम्बर, 2020 को 'श्राविका गौरव दिवस' के दिन घोषित किया जाएगा।
 7. अपना निबन्ध इस पते पर भेजें—श्रीमती सुशीला भण्डारी, 162, Amer Joyti Layout, Iner Ring Road, Domlur, Bangalore-560071 (Karnatak) मो. 9341285325 पता अंग्रेजी भाषा में लिखें।

प्रथम पुरस्कार ₹ 5100/- द्वितीय पुरस्कार ₹ 4100/- तृतीय पुरस्कार ₹ 3100/-

चतुर्थ पुरस्कार ₹ 2100/- पंचम पुरस्कार ₹ 1100/-

सान्त्वना पुरस्कार 7 प्रतियोगियों को ₹ 500/- प्रोत्साहन पुरस्कार। प्रत्येक प्रतिभागी को ₹ 200/-
 सम्पर्क सूत्र—(1) श्रीमती मंजू भण्डारी, बेंगलुरु-अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, मो. 93426-77066 (2) श्रीमती अलका दुधेड़िया, अजमेर-महासचिव, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, मो 98281-56 250
 -अलका दुधेड़िया, महासचिव

श्राविका मण्डल द्वारा प्रथम वेबिनार का आयोजन

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल-प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्मयोगी, परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर रविवार दिनांक 19 जुलाई 2020 को 'महिला सशक्तीकरण एवं श्राविका उत्थान के प्रणेता : गुरु हस्ती' विषय पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संघीय संस्था अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा प्रथम वेबिनार आयोजित की गई। वेबिनार का शुभारम्भ संघीय गीत तथा श्राविका मण्डल की सचिव श्रीमती श्वेताजी कर्नावट के मंगलाचरण से हुआ। वेबिनार में श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने वेबिनार की मुख्य वक्ता डॉ. सुषमाजी सिंघवी सहित ऑनलाइन उपस्थित संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् सहित शाखा पदाधिकारियों और सभी संघ सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया।

प्रमुख वक्ता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की प्रथम अध्यक्ष डॉ. सुषमाजी सिंघवी ने पूज्य आचार्यप्रवर गुरु हस्ती के प्रेरक जीवन के प्रभावी दुर्लभ प्रसंगों की चर्चा की। भजन के माध्यम से धाराप्रवाह प्रस्तुति में उन्होंने आचार्यप्रवर के चारित्रिक एवं संयममय जीवन की विशेषताओं को प्रसंगों के माध्यम से रेखांकित किया। आचार्यप्रवर के अप्रमत्तता, क्षमाशीलता, गुणग्राहिता, आचारनिष्ठा, करुणाशीलता आदि अनेक गुणों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि महिलाओं में वह ताकत है जो विश्व में धर्म की क्रान्ति ला सकती है। बालक-बालिकाओं में नैतिक संस्कारों के बीजारोपण हेतु धर्म की ओर अग्रसर करने के साथ सेवा के लिए प्रोत्साहित करने, साथ ही संस्कृति-रक्षण हेतु श्राविकाओं की चेतना जागृत करने पर विशेष जोर दिया। हिंसा जनित सौन्दर्य प्रसाधन आदि के त्याग के लिए प्रेरित किया तथा बालिकाओं के अध्ययन करने के साथ कहा कि-हमें श्राविकाओं को स्वच्छन्द और कमजोर नहीं बनाना है, उन्हें निर्भीक बनाना है। बच्चों को हम श्रेष्ठता की बातें सुनाएँ। युवा वर्ग व्यसन मुक्त और दिखावे से बचने के साथ जितनी सादा जीवन शैली अपनायेंगे, उतना ही हमारा जीवन निर्माण अच्छा रहेगा। श्राविकाएँ हर कदम पर अहिंसा, अपरिग्रह का पालन करें, संग्रह नहीं करें, वे षट्काय की रक्षा करें। मानव की इच्छाएँ अनन्त होती हैं, हमें इच्छा और जरूरत में इच्छा का त्याग करना चाहिये और प्रदर्शन नहीं करना है। महिलाओं में सेवा की पूरी भावना होनी चाहिये। प्रत्येक नारी को सबल बनाना है। आज पूरे भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी जैन जीवन शैली को अपनाया जा रहा है। जैन जीवन शैली से बढ़कर कोई नहीं है और विश्व में भी इसका प्रचार-प्रसार हो रहा है।

अध्यक्ष महोदया श्रीमती मन्जूजी भण्डारी ने 24 सितम्बर, 1994 से लेकर अब तक के सभी अध्यक्षों के द्वारा किये गए कार्यों की सराहना की। संघ और संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों तथा वेबिनार में जुड़े सभी सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करने के साथ शिक्षा क्षेत्र से जुड़ी प्रथम महिला अध्यक्ष डॉ. सुषमा जी सिंघवी का आभार

व्यक्त किया। पूर्व अध्यक्ष श्रीमती मधुजी सुराणा, चेन्नई ने श्राविका मण्डल के कार्यों की सराहना करते हुए पूरी टीम को धन्यवाद ज्ञापित किया।

महासचिव श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने सभी सदस्यों से निवेदन किया कि आप हमें श्राविका मण्डल के लिए अपने सुझाव एवं मार्गदर्शन अवश्य प्रदान करें।

-अरुणका दुधेड़िया, महासचिव

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा आचार्य हस्ती शताब्दी वर्ष एवं स्वाध्याय संघ के हीरक जयन्ती वर्ष पर आयोजित द्वितीय निबन्ध प्रतियोगिता 'समभाव की साधना-सामायिक आराधना' विषय पर आयोजित की गई। जिसमें जोधपुर क्षेत्र से 38, महाराष्ट्र क्षेत्र से 34, मध्यप्रदेश क्षेत्र से 4, जयपुर क्षेत्र से 6, पोरवाल क्षेत्र से 20, पल्लीवाल क्षेत्र से 13, मारवाड़ क्षेत्र से 5, मेवाड़ क्षेत्र से 1 तथा अन्य क्षेत्रों से 15 सहित कुल 136 स्वाध्यायी भाई-बहिनों, श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह से भाग लिया।

निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है-प्रथम विजेता श्री हेमन्त जी डागा (बून्दी वाले)-जयपुर, द्वितीय विजेता सुश्री निकिता जी जैन-कुशतला-सवाईमाधोपुर एवं तृतीय विजेता सौ. मधुबाला जी ओस्तवाल-नाशिक।

सान्त्वना पुरस्कार-1. श्रीमती शर्मिला जी जैन, जयपुर 2. श्रीमती सुनीता जी मेहता, जोधपुर 3. श्रीमती माधुरी जी जैन, आगरा 4. श्रीमती मोना जी जैन, मण्डावर 5. श्रीमान् शिखरचन्दजी छाजेड़, करही 6. सौ. स्नेहलता जी छाजेड़, अहमद नगर 7. श्रीमती सुनीता जी भण्डारी, बेंगलुरु 8. श्रीमती अभिलाषा जी पटवा, जोधपुर 9. श्रीमती सूरज जी बोहरा, जोधपुर 10. श्रीमान् नरेन्द्र मोहन जी जैन, सवाई माधोपुर 11. श्रीमती शशि जी चौधरी, जोधपुर 12. श्रीमती आरती जी मुथा, अमरावती।

-सुनील संकलेचा, सचिव-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु द्वारा वेबिनारों का आयोजन

युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शतीवर्ष में श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु द्वारा विगत माह में Zoom App के माध्यम से 5 वेबिनारों का आयोजन किया गया, उसमें आशा से अधिक सफलता मिली। पाँचों वेबिनारों का संचालन श्री एस. सौरभजी बाघमार ने किया।

1. प्रथम वेबिनार 27 जून 2020 शनिवार को हमारी बेटियों के लिए 'लाइफ इज ब्यूटीफूल' ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें श्रीमती आशाजी छाजेड़, बेंगलोर ने वर्तमान जमाने में विभिन्न प्रकार की आग और चुनौतियों का सामना एवं आत्म सुरक्षा करने की और आत्म विश्वास एवं आत्म सम्मान को कायम रखने की क्षमता के गुणों के विकसित करने प्रेरणा की। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मन्जूजी भण्डारी, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल चेन्नई की अध्यक्ष श्रीमती संगीताजी बोहरा, श्री जैन रत्न युवक परिषद् के क्षेत्रीय प्रधान श्री जम्बूकुमारजी नाहर एवं देश-विदेश से 170 बालिकाओं ने भाग लेकर युवा संघ का हौसला बढ़ाया।
2. द्वितीय वेबिनार 5 जुलाई 2020 रविवार को दोपहर में आयोजित की गई। जिसमें 'जीतना मेरी आदत है' अतिरोचक विषय पर युवा रत्न अनन्य गुरु भक्त श्री राजेन्द्र कुमारजी दुधेड़िया, बेंगलोर ने वर्तमान माहौल में 'कैसे जीते जीवन के कठिन पथ पर कठिनाइयों की डगर' पर हमें हार नहीं माननी है और 'जीतना तो हमारे जन्म के संस्कार हैं।' इस विषय पर अतिरोचक चिन्तन रखा और इस वेबिनार में मुख्य अतिथि शासन सेवा समिति के सदस्य एवं स्वाध्याय भवन के चेयरमेन श्री गौतमराजजी सुराणा एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

के कार्याध्यक्ष श्री अनिलकुमारजी बोथरा, उपाध्यक्ष श्री नितेशजी कटारिया और श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु के पूर्व अध्यक्ष श्रीमान् दुलीचन्दजी नाहर एवं श्री जैन संस्कार मन्त्र चेन्नई के युवा अध्यक्ष श्री पंकजजी कोठारी, श्री एस. एस. जैन युवक संघ, किलपॉक के युवा अध्यक्ष श्री नितिनजी चौपड़ा, श्री एस. एस. जैन नवयुवक, अयनावरम के युवा संघ के अध्यक्ष श्री महावीरजी बाँठिया और कई संघ एवं संस्थाओं के अध्यक्ष व 225 महानुभावों ने सम्मिलित होकर युवा संघ का गौरव बढ़ाया।

3. 11 जुलाई, 2020 शनिवार सायं 8.00 बजे तृतीय वेबिनार For Young Parenting is heart work में बेस्ट वक्ता श्रीमती रुचिजी मोहता ने वर्तमान युग में बच्चों की परवरिश कैसे करें एवं उनके मन को जानकर उनके दिल को कैसे जीते तथा वर्तमान माहौल में अपनी आत्म-रक्षा और धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण कैसे किया जाए, विषय पर अपने अतिरोचक विचार रखकर सबका मनमोह लिया और इस वेबिनार में भाग लेने पर सभी अभिभावकों ने युवा संघ का आभार प्रकट करते भावना रखी ऐसे वेबिनार का आयोजन और किया जाए। इस वेबिनार के मुख्य अतिथि श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान में श्री एस.एस. जैन संघ, कलाडीपेट के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी कांकरिया और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के महासचिव श्री अमितजी हीरावत और उपाध्यक्ष वेदान्तजी सांखला, श्री एस. एस. जैन संघ, अयनावरम के अध्यक्ष श्री भँवरलालजी राठौड़ तथा कई संस्थाओं के अध्यक्ष व देश-विदेश से लगभग 200 महानुभावों ने सम्मिलित होकर युवक संघ का गौरव बढ़ाया।
4. 18 जुलाई, 2020 को सायं 8.00 बजे 'एक शाम गुरुदेव के नाम' Online Live भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया, जिसमें गायक कलाकार श्री राकेशजी परमार ने युग मनीषी गुरु भगवन्त आचार्य हस्ती के दीक्षा शताब्दी वर्ष पर श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु तथा अखिल भारतीय के सभी सम्मानीय पदाधिकारियों के साथ गुरु गान करने का सुअवसर पाकर अपने आपको धन्य माना और ऐसे महान् गुरु के गुणों की भक्ति और अपनी मधुर आवाज से सबका मन मोह लिया। यह हमारा परम सौभाग्य है कि ऐसे पुनीत पावन प्रसंग पर मुख्य अतिथि अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष युवा रत्न अनन्य गुरु संघ सेवी धर्म निष्ठ, समाज सेवी श्री मनीषजी मेहता, कार्याध्यक्ष युवा रत्न श्री विवेकजी लोढ़ा, कार्याध्यक्ष श्री अनिलजी बोथरा, महासचिव श्री अमितजी हीरावत और भारत के समस्त श्री जैन रत्न युवक परिषद् के शाखाओं अध्यक्षगण श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु के क्षेत्रीय प्रधान युवा रत्न श्री जम्बूकुमारजी नाहर एवं अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं देश-विदेश से अनेक महानुभावों ने गुरु भक्ति में भाग लेकर जिनशासन तथा तमिलनाडु युवक संघ का गौरव बढ़ाया। ऐसे सुनहरे अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, जोधपुर युवा शाखा के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा, श्रावक रत्न श्री गौतमचन्दजी कटारिया, बालयुवा रत्न प्रणतजी धींग एवं श्रीमती हेमलताजी बोहरा ने अपनी मधुर आवाज में गुरुदेव के श्रीचरणों में अपनी भक्ति भजनों के माध्यम से रखी।
5. 19 जुलाई, 2020 रविवार सायं 8.00 बजे Online Live कार्यक्रम 'खुशियों का पासवर्ड' कार्यक्रम रखा गया जिसमें बेंगलोर प्रवासी बेस्ट वक्ता श्रीमती इन्दुजी कटारिया ने अपने उत्कृष्ट विचार रखकर सबका हृदय गद्गद् कर दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि खुशी तो आपके हाथ में ही है उसका पासवर्ड किसी अन्य के पास नहीं, बल्कि स्वयं आपके पास ही है। वेबिनार के मुख्य अतिथि अनन्य गुरु भक्त समाज सेवी श्रावक रत्न श्री मंगलचन्दजी भंसाली-मन्त्री श्री एस.एस. जैन संघ, कोडमबाक्कम-वडपल्लनी एवं देश-विदेश से 210 सदस्यों ने भाग लेकर इसका लाभ उठाया।

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु के पाँच वेबिनारों में देश-विदेश व सभी सम्प्रदाय के महानुभावों ने युवा संघ को धन्यवाद देते हुए भावना व्यक्त की ऐसे युग मनीषी महापुरुष के शताब्दी वर्ष पर ऐसे कार्यक्रम प्रति रविवार को रखे जाने चाहिए।

-माँगीलाल चोरड़ियार, अध्यक्ष

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर

(सिद्धान्त-शाला) में वर्ष 2020 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

(भारतवर्ष के विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक-नैतिक अध्ययन/ संस्कारों के साथ उच्च अध्ययन का जयपुर शहर में स्वर्णिम अवसर)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्त शाला) में वर्ष 2020 से प्रवेश प्राप्त करने वाले छात्रों के रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हो गये हैं। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रेरणा से वर्ष 1973 में संस्थापित शिक्षण संस्थान में आध्यात्मिक शिक्षण के साथ-साथ उच्च अध्ययन की समुचित व्यवस्था है। साथ ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कई कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ कम्प्यूटर शिक्षण, अंग्रेजी स्पिकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं।

शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र एवं अभिभावक संस्कारित रहकर जयपुर में उच्च अध्ययन करना चाहते हैं वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें। रजिस्ट्रेशन के लिए योग्यता-कक्षा 9वीं से उच्च कक्षा के कोई भी विद्यार्थी रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। विद्यार्थी को धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों को सीखने में रुचि हो। रजिस्ट्रेशन कैसे करें-संस्थान के दिये गये सम्पर्क सूत्र पर सम्पर्क करें अथवा <https://ratnasangh.com/> वेबसाइट से अथवा हमारे फेसबुक पेज facebook.com/sidhantshala से फॉर्म डाउनलोड कर संस्थान के पते पर अथवा ईमेल ahassanathan@gmail.com पर प्रेषित करें।

संस्थान में प्रवेश कैसे होगा-अगस्त माह में संस्थान में प्रवेश के लिए प्राप्त आवेदनों में से चयनित छात्रों का इण्टरव्यू के आधार पर सलेक्शन किया जायेगा। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य', ए-9 महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015, फोन न. 0141-2710946, 94614-56489, 79762-6596 Email:-ahassanathan@gmail.com

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्त शाला) के सन्दर्भ में.....

बच्चों का जीवन निर्माण : आपका सहयोग

संघ-समाज के प्रतिभावान एवं जरूरतमन्द विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार के साथ शैक्षणिक अध्ययन की समुचित व्यवस्था आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्त शाला) में उपलब्ध है। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा की पावन प्रेरणा से जैन धर्म एवं दर्शन के विद्वान् एवं संस्कारित व्यक्तित्व के धनी व्यक्तियों के निर्माण के उद्देश्य से वर्ष 1973 में इस संस्था की स्थापना की गई। अब तक सैकड़ों विद्यार्थी इस संस्था में आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कारों के साथ अपना व्यावहारिक अध्ययन कर चुके हैं एवं वर्तमान में देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। ये विद्यार्थी प्रशासनिक सेवा, राजकीय सेवा, प्रोफेशनल सेवा एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सेवारत हैं।

इनमें से कुछ विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार है-

1. डॉ. धर्मचन्द जैन (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर) (सम्पादक, जिनवाणी) कार्याध्यक्ष, सम्यज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, अध्ययन वर्ष 1975-1981
2. श्री गौतमचन्द जैन (सेवानिवृत्त, जिला रसद अधिकारी) (RAS) अध्ययन वर्ष 1976-1981
3. श्री पारसचन्द जैन (चार्टर्ड अकाउंटेंट) President & Group Head, Welspun Group, Mumbai अध्ययन वर्ष 1974-1981
4. पवन कुमार जैन (अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, RPS) अध्ययन वर्ष 1993-1996
5. रतीश कुमार जैन (Assistant Commissioner, GST Commercial Tax Department) अध्ययन वर्ष 1997-2000
6. लोकेश कुमार जैन (IRS) Joint Commissioner CGST Bhopal अध्ययन वर्ष 2001-2006
7. ज्ञानचन्द जैन (Special Assistant to Hon'ble Governor Rajasthan) अध्ययन वर्ष 1980-1981
8. माँगीलाल हिरण, बैंकॉक (प्रबुद्ध रत्न व्यवसायी) (Director Thai Gem Jewelry Traders Association, Bangkok (Thailand) अध्ययन वर्ष 1990-1992

इनके अतिरिक्त भी अन्य विद्यार्थी राजकीय एवं प्राइवेट सेक्टर में प्रामाणिकता के साथ सेवारत हैं। वर्तमान में संघ-समाज में भी इन पूर्व विद्यार्थियों की सेवाएँ पूज्य साधु-साध्वियों, विरक्त भाई-बहिनो, धार्मिक शिविरों में अध्ययन अध्यापन, पर्युषण पर्व के समय स्वाध्यायी सेवा के रूप में प्राप्त होती रहती है।

वर्तमान में लगभग 60-70 विद्यार्थियों के आवास-निवास की समुचित व्यवस्था संस्थान में निःशुल्क उपलब्ध है। संस्थान में रहने वाले विद्यार्थियों को शुरू से ही व्यवस्थित दिनचर्या के साथ अनुशासन, नैतिक संस्कार एवं आध्यात्मिक अध्ययन सिखाया जाता रहा है, साथ ही विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए बेहतर साधन उपलब्ध कराने का प्रयास रहता है। कम्प्यूटर प्रशिक्षण, लाइब्रेरी, मोटिवेशनल सत्र आदि के माध्यम से व्यक्तित्व विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है। वर्तमान में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों को व्यावहारिक अध्ययन के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक संस्कार प्रदान किये जाते हैं, पर्युषण पर्व में सभी विद्यार्थियों के द्वारा स्वाध्यायी सेवा प्रदान की जाती है। व्यावहारिक अध्ययन में भी ये छात्र अपना विशिष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।

हमारी भावना-संघ-समाज का कोई भी प्रतिभाशाली विद्यार्थी एवं परिवार संसाधनों के अभाव में संस्कारों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में पीछे न रहे, इस हेतु हम इस संस्था में अधिकाधिक विद्यार्थियों को प्रवेश देकर उनके जीवन निर्माण की दिशा में प्रयासरत हैं।

आपसे विशेष निवेदन-साधर्मिक बच्चों के जीवन-निर्माण एवं बेहतर भविष्य बनाने में आप भी सहयोगी बनें, क्योंकि एक बच्चे के जीवन-निर्माण से एक सशक्त परिवार का निर्माण होता है। हम सहज में ही इनके भविष्य-निर्माण में निमित्त बन सकते हैं। आइये, हम सब मिलकर इस अनूठे जीवन-निर्माण में सहभागी बनें। आने वाले समय में इस संस्था से अध्ययन करने वाले विद्यार्थी हमारे संघ-समाज के विशिष्ट रत्न बनेंगे, ऐसी शुभ भावना भाते हैं।

आप ट्रस्ट को Donation राशि चैक, बैंक ड्राफ्ट, नेफ्ट, आरटीजीएस, ऑनलाइन के माध्यम से कर सकते हैं। बैंक विवरण निम्नानुसार है-

ACCOUNT NAME :: GAJENDRA CHARITABLE TRUST, ACCOUNT NO :: 10332191006750, BANK & BRANCH :: ORIENTAL BANK OF COMMERCE (PNB) KVIB, BAJAJ NAGAR, JAIPUR,

IFSC CODE :: ORBC101033, A/C MODE :: SAVING, PAN NO. :: AABTG3213E

नोट :-आप द्वारा दिया गया सहयोग (दानराशि) को आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त रहेगी।

| | | |
|--|--|--------------------------------------|
| कैलाशचन्द्र हीरावत चेयरमेन ट्रस्टी 99290-56442 | निवेदक डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा व्यवस्थापक 93145-02203 | सुमन कोठारी संयोजक 98292-52113 |
|--|--|--------------------------------------|

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन, 94614-56489, 79762-46596

राष्ट्रीय प्राकृत कवि सम्मेलन का हुआ सफल आयोजन

श्रावण कृष्णा एकम् 6 जुलाई, 2020 को मूल प्राकृत भाषा जन-जन तक पहुँचे, सभी लोग प्राकृत भाषा सीखें, पूरे देश में जैनधर्म और सर्वप्राचीन प्राकृत भाषा का प्रचार-प्रसार हो, इसी भावना के साथ डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव ने 'प्राकृत काव्य प्रवाह' की परिकल्पना की और 'वीर शासन जयन्ती' (दिगम्बर जैन परम्परानुसार) के दिन पहली बार 'प्राकृत काव्य प्रवाह' के विशेष कार्यक्रम का आयोजन जैनम् डिजिटल चैनल के माध्यम से किया गया। प्राकृत काव्य प्रवाह के इस विशेष कार्यक्रम में राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित प्रो. रमाकान्त शुक्ल-दिल्ली, प्राकृत मनीषी प्रो. जयकुमार उपाध्ये-दिल्ली, राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त प्रो. अनेकान्त कुमार जैन-दिल्ली, डॉ. बलराम शुक्ल-शिमला, डॉ. अरिहंत जैन-मुम्बई, सभी विद्वानों ने प्राकृत गाथाओं का सस्वर काव्य पाठ किया। कुछ विद्वानों ने स्वरचित प्राकृत काव्य का भी पाठ किया। इस कार्यक्रम का कुशलता पूर्वक संयोजन तथा संचालन डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव, दिल्ली ने किया। इस कार्यक्रम को करवाने में 'श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन धर्म संरक्षिणी महासभा' के अध्यक्ष श्री निर्मल जैन सेठी दिल्ली, कार्याध्यक्ष श्री जमनालाल हपावत मुम्बई, जैनम् चैनल के श्री पारस लोहाडे नासिक एवं श्री राकेश जैन दिल्ली का विशेष सहयोग रहा। दर्शकों ने प्राकृत कवि सम्मेलन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

-राकेश जैन

बधाई

जयपुर-श्री अशोक कुमार जी जैन सुपुत्र स्व. श्री मुन्शीलालजी जैन (हरसाना वाले), जयपुर की अतिरिक्त निजी सचिव से निजी सचिव (वन विभाग) जयपुर के पद पर पदोन्नति हुई है। आप राजकीय सेवा में रहते हुए लगभग 22 वर्षों से निरन्तर स्वाध्यायी के रूप में पर्युषण पर्वों में सेवा प्रदान कर रहे हैं। आप प्रीष्मावकाश में धार्मिक शिक्षण शिविरों में अध्यापन का कार्य कराते हैं। आपको सामाजिक स्तर पर विशिष्ट समाज सेवा तथा राजकीय स्तर पर राज्य-स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। आप अभी आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्व छात्र परिषद् के मानद सचिव पद को सुशोभित कर रहे हैं।

-विमल कुमार जैन

चेन्नई-डॉ. दिलीप धींग, निदेशक-अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र को राज रचना काल एवं साहित्य समिति, रायपुर (छत्तीसगढ़) की ओर से राष्ट्रीय साहित्य सम्मान (2020) से विभूषित किया गया। समिति अध्यक्ष श्री रामनारायण साहू ने बताया कि डॉ. धींग को यह सम्मान उनकी सतत, सुदीर्घ एवं समर्पित साहित्यिक सेवाओं के लिए प्रदान किया गया है।

-शान्तिनाराल कोठारी, अध्यक्ष



श्रद्धाञ्जलि

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती अमरावकुंवरजी धर्मपत्नी श्री इन्दरचन्दजी सुराणा, अयनावरम् (मरुधरा में झाख, बिलाड़ा) का 7 जुलाई, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के वेपेरी-चेन्नई चातुर्मास और व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के अयनावरम्-चेन्नई आपने चातुर्मास में धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। चेन्नई में सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आप सदैव अग्रणी रहती थी। आपने कई छोटी-बड़ी तपस्याएँ और अनेक व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर रखे थे। साथ ही विगत कई वर्षों से आपके रात्रि-भोजन का त्याग तथा जर्मीकन्द का आजीवन त्याग था। उन्होंने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था। आपके धर्मसहायक श्री इन्दरचन्दजी सुराणा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं और आपके सुपुत्र श्री राजकुमारजी एवं दिनेशजी सुराणा युवक परिषद् में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। रत्नसंघीय सन्तरत्न श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनिजी म.सा. की आप सांसारिक भाभीजी थी। सुराणा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मी-वात्सल्य और आतिथ्य-सत्कार में भी सदैव समर्पित रहा है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सीताबाईजी धर्मपत्नी श्री प्रसन्नचन्दजी भण्डारी (बारणी खुर्द वाले) का 19 जुलाई, 2020 को 68 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप रत्नसंघीया सरल हृदया महासती श्री सायरकैवरजी म.सा., साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की सांसारिक भतीजा वधू थी। आप धर्मपरायण सेवाभावी सहिष्णु, वात्सल्यमूर्ति होने के साथ नियमित पाँच सामायिक, स्वाध्याय करने वाली श्राविका थी। आपने कई नियम-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई पधारने पर आप सहित समस्त भण्डारी परिवारजनों ने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

हैदराबाद-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मिलापचन्दजी छाजेड़ का 17 जुलाई, 2020 को देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक आप नियमित रूप से स्थानक में पधारकर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लेते थे। आप ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हैदराबाद के मन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया था। केवल आप ही नहीं सम्पूर्ण छाजेड़ परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहनों के आतिथ्य-सत्कार में छाजेड़ परिवार सदैव तत्पर रहता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री रामराजजी गांग का 06 जुलाई, 2020 को परलोकगमन हो गया, आप अपने कार्य के प्रति निपुण, व्यवहार कुशल, मिलनसार और सेवाभावी थे। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती चंचलकैवरजी गांग ज्ञानाराधना, धर्मारोधना एवं तपाराधना के क्षेत्र में विशेष पुरुषार्थ करने वाली समर्पित श्राविका है। गोल्फकोर्स क्षेत्र में पधारने वाले सन्त-सतीवर्ग की सेवा में आप का परिवार समर्पित भाव से संलग्न है तथा दर्शनार्थ पधारने वाले मेहमानों के आतिथ्य सेवा में सदा अग्रणी रहा है। आपके मूल गाँव रजलाणी (भोपालगढ़) में निर्मित

सामायिक-स्वाध्याय भवन के निर्माण में आपके परिवार का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ है। -*महेन्द्र सेठिया*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री शान्तिलालजी सुपुत्र स्व. श्री रतनलालजी लोढ़ा का 29 जून, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में तथा संघ-सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। जोधपुर और पाली में रत्नसंघीय गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहा। गत वर्ष परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के पाली में पधारने पर आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आपके लघु भ्राता श्री छगनलालजी लोढ़ा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली का अध्यक्षीय दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। लोढ़ा परिवार सदैव स्वधर्मी भाई-बहनों की सेवा के लिए तत्पर रहता है। -*धन्यपत्त सेठिया, मद्रामन्त्री*

बृहदपुर-धर्म परायण सुश्राविका श्रीमती यशवन्तदेवीजी धर्मपत्नी श्री सुन्दरलालजी सरूपरिया (स्वतन्त्रता सेनानी) का 22 जून, 2020 को 88 वर्ष की आयु में समाधि भावों से देवलोक गमन हो गया। आप प्रसन्नचित्त, मिलनसार एवं साहसिक श्राविका थी। आपने अपने जीवनकाल में दो वर्षी तप किए। आपके 25 साल से जर्मिकन्द के त्याग थे। 18 वर्षों तक स्वाध्यायी सेवाएँ दी। आप सभी पर अपनी ममता, स्नेह और आदर का अपार धन बरसाती थी। बहुओं और पुत्रियों पर एक समान स्नेह बाँटती थी। आप अपने पड़ोसियों, सगे-सम्बन्धियों में बहुत लोकप्रिय थी। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपका सम्पूर्ण परिवार धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत है। आप भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। -*चेतनसिंह मेहता*

बेंगलूर (कर्नाटक)-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती दाकीबाईजी धर्मसहायिका श्री चम्पालालजी मुथा का 3 जुलाई, 2020 को संथारा सहित समाधिमरण हो गया। आपके धर्मसहायक श्री चम्पालालजी मुथा चिकपेट, बेंगलूरू सिटी संघ के अध्यक्ष रहे तथा श्री संघ को अपनी अमूल्य सेवाओं से लाभान्वित किया। आप संकल्प की धनी एवं नियम में दृढ़ थी। आपने उपवास, आयम्बिल, एकाशन, तीन, आठ, ग्यारह, पन्द्रह, सोलह, इक्कीस से लगाकर मासखमण तक की बड़ी तपस्या की। रात्रि चौबिहार त्याग, बाहर के आहार-पानी का आजीवन त्याग, प्रत्येक अमावस्या को उपवास करना आपका नित्य नियम था। पर्युषण के दौरान आठों दिन आप स्थानक में रहकर धर्मारधन करती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है। -*श्रीरामचन्द्र अरोस्तवाल*



आबुधाबी-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गणपतजी सुपुत्र स्व. श्री जगतम्बराजजी सिंघवी (सिंहपोल जोधपुर वाले) का 7 जून, 2020 को आबुधाबी (यू.ए.ई.) में स्वर्गवास हो गया। आप गत 40 वर्षों से आबुधाबी स्थित प्रसिद्ध तेल कम्पनी में उच्च पद पर आसीन थे। आपका जीवन सरल था। आपने अपने जीवन काल में सैकड़ों युवाओं को वहाँ अच्छी कम्पनियों में नियुक्ति दिलवाई। आपने न सिर्फ प्रतिष्ठा और शोहरत ही हासिल की, बल्कि अपने परोपकारी गुणों से विशेष ख्याति अर्जित की। आबुधाबी की कई बड़ी-बड़ी संस्थाओं के आप चेयरमेन, अध्यक्ष एवं उच्च पदों पर रहे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। -*अखीरत भण्डारी, जोधपुर*



जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती धन्नीबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री हस्तीमलजी बरड़िया (पालासनी वाले) का 10 जुलाई 2020 को देहावसान हो गया। आप साधु-सन्तों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। नियमित सामायिक एवं धर्मध्यान में संलग्न रहती थी। आप अपने पीछे भरा-भूरा परिवार छोड़कर गई है। -*राजीव नेपालिया*



ब्रह्मपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जेठमलजी सामसुखा का 03 जुलाई, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने संस्कारी जीवन व्यतीत करते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था।

-अशोक कुमार सेठ, मण्डल मन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विद्यावतीजी धर्मपत्नी श्री सरदारचन्दजी सुराणा का 03 जुलाई, 2020 को देहावसान हो गया। आप साधु-सन्तों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थी। नियमित सामायिक एवं धर्मध्यान में व्यस्त रहती थी। 50 वर्षों से रात्रि-भोजन का त्याग था। प्रतिवर्ष चातुर्मास में एकाशन की तपस्या थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



-राजीव नेपार्लिया

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री हस्तीमलजी सुपुत्र स्व. श्री चैनमलजी सुराणा का 16 जुलाई, 2020 को संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। सन्त-सतीवृन्द के प्रति श्रद्धा-भक्ति के साथ आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपने संस्कारों से अपने समूचे परिवार को समृद्ध किया। इसी का सुफल है कि आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा संचालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों में निष्ठा पूर्वक जुड़ा हुआ है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

ब्यावर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शारदादेवीजी धर्मपत्नी श्री तेजराजजी लोढ़ा का 2 जुलाई, 2020 को सागरी संथारे से समाधिमरण हो गया। सन्त-सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी तथा सदैव उनकी सेवा में तत्पर रहती थी। आप नियमित सामायिक, प्रवचन, प्रतिक्रमण में रुचि रखती थी। आप अपने पीछे श्री तेजराजजी लोढ़ा, श्री अनिल-शकुन्तला, श्री सुनील-सरिता, श्री पंकज-डिम्पल सुपुत्र-सुपुत्रवधू एवं पौत्र-पौत्रियों से भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



-निहालचन्द चोरड़िया

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रतनलालजी सुपुत्र स्व. श्री मोहनलालजी धारीवाल का 19 जुलाई, 2020 को 83 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप मानव-सेवी, जीव-दया प्रेमी एवं अरिहन्त चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष रहे। 28 वर्षों से अनाथ बच्चों, विकलाङ्ग बच्चों और असहाय लोगों को तथा गरीबों को घर जाकर राशन पहुँचाते थे। मेडिकल कैम्प का संचालन करने के साथ आप पशु-पक्षियों के लिए चारा, दाना, पानी डलवाते थे। आपका जीवन सहज, सरल और करुणामय होने के साथ-साथ समाज सेवा में समर्पित रहा। आप पण्डितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के पूर्व सहपाठी एवं उनके अनन्य भक्त रहे। आप अपने पीछे दो सुपुत्र श्री धर्मेन्द्रजी, श्री महेन्द्रजी और दो सुपुत्रियाँ सुशीलाजी, ललिताजी सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



-लखपतचन्द भण्डारी

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सुलतानमलजी सुपुत्र स्व. श्री चाँदमलजी सुराणा का 3 जुलाई, 2020 को देहावसान हो गया। आप शान्तस्वभावी, सरलमना तथा धार्मिक प्रवृत्ति के श्रावक थे। आप सभी सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। धर्मसहायिका एवं तीन धर्मनिष्ठ सुपुत्रियों का परिवार छोड़कर गये हैं।



-चंबलचन्द सिंघवी

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विमलाबाईजी गाँधी का 22 जुलाई, 2020 को देहावसान हो गया। आपने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दक्षिण प्रवास के समय गुरुदेव के मुखारविन्द से शीलव्रत के

नियम ग्रहण किए थे। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालालजी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई पधारने पर तथा आपके मूल निवास थाँवला में शेखेकाल सन्त-सतीवृन्द के पधारने पर आपने सपरिवार दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ लिया। गाँधी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी गाँधी परिवार सदैव समर्पित रहा है।

-धनपत खेरिया, महामन्त्री

सूरत-धर्मनिष्ठ पण्डित श्री धीरजलाल डाह्या भाई मेहता का 10 जुलाई, 2020 को निधन हो गया। वे आगमवेत्ता, कर्मग्रन्थ एवं जैनसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् थे। सन्त-सतियों को अध्यापन कराने के साथ विगत 25 वर्षों से प्रतिवर्ष 4 से 6 माह अमेरिका में धर्म-प्रचार करते थे।

-प्रवीण कुमार शाह

अखिल भारतीय स्तर पर 'आवश्यक सूत्र' आगम पर लिखित खुली किताब परीक्षा 24 जनवरी-2021 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म-योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष को पूरे भारत वर्ष में अटूट श्रद्धा-भक्ति, सेवा एवं उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

रत्न संघ के प्रत्येक परिवार में कम से कम एक सदस्य प्रतिक्रमण को अर्थ सहित कण्ठस्थ करे, ऐसा लक्ष्य संघ द्वारा रखा गया है। प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्र आगम का एक अंग है। प्रत्येक सदस्य सूत्रों के अर्थ एवं भावार्थ को समझकर अपने क्रियात्मक पक्ष को मजबूत करे, एतदर्थ अखिल भारतीय स्तर पर आवश्यक सूत्र आगम पर लिखित परीक्षा का आयोजन आचार्य भगवन्त के 111वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 24 जनवरी-2021 को किया जा रहा है। सभी सदस्य दीक्षा शताब्दी वर्ष में आवश्यक सूत्र का प्रतिदिन स्वाध्याय कर इस परीक्षा में अवश्य भाग लें। इस हेतु जितनी पुस्तकों की आवश्यकता हो, निम्न नम्बरों पर व्हाट्सएप करें- विनोद जैन, चेन्नई-9444734394, सुरेश हिंगड़, चेन्नई-9444852330, मनोज संचेती, जलगाँव-9156898108, महावीर प्रसाद जैन, पल्लीवाल क्षेत्र-8949816129, आनन्द जैन, पोरवाल क्षेत्र-8104104285, कार्यालय जोधपुर-7610953735

वरीयता सूची में प्रथम स्थान पाने वाले को ₹ 25,000/-, द्वितीय ₹ 21,000/-, तृतीय ₹ 15,000/- का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। परीक्षा में 90 से अधिक अंक पाने वाले को ₹ 1,000/- तथा 80 से 90 तक अंक पाने वाले को ₹ 500/- का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा। 50 अंक लाने वाले को उत्तीर्ण माना जायेगा तथा सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।

1. आवेदन करने की अन्तिम दिनांक 15 दिसम्बर, 2020
2. इस परीक्षा हेतु फार्म ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध हैं। ऑनलाइन फार्म रत्नसंघ एप्प (ratansangh app) एवं वेबसाइट के माध्यम से भरे जा सकेंगे।
3. परीक्षा का समय 12.30 से 3.30 बजे तक रहेगा, जिसमें दो तरह के प्रश्न-पत्र होंगे। प्रथम (Objective Type) के प्रश्न-पत्र का समय आधा घण्टा रहेगा, जिसमें परीक्षार्थियों को उत्तर कण्ठस्थ किए गए ज्ञान के आधार पर देना होगा। द्वितीय (Subjective Type) के प्रश्न-पत्र का समय 2.30 घण्टा रहेगा, जिसमें आवश्यक सूत्र की पुस्तक साथ में लेकर प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर लिखे जा सकेंगे।

4. परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूत्र पुस्तक का अर्द्ध मूल्य ₹ 50/- रखा गया है। जो परीक्षार्थी इस परीक्षा में भाग लेने हेतु फार्म भरकर देंगे, उन्हें ही पुस्तक दी जायेगी। डाक द्वारा पुस्तक मँगवाने पर उसका व्यय अलग से देय होगा।
5. जहाँ कम से कम 10 परीक्षार्थी होंगे वहाँ परीक्षा का केन्द्र रखा जायेगा।
6. परीक्षा हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित आगम 'आवश्यकसूत्र' ही मान्य होगा। इस पुस्तक में से कहीं से भी प्रश्न दिये जा सकते हैं।
7. आवश्यकसूत्र की परीक्षा में बैठने वाले सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
8. उक्त परीक्षा से सम्बन्धित अन्य कोई जानकारी एवं किसी भी प्रकार का उचित परिवर्तन होने पर उसकी सूचना जिनवाणी, रत्नम् एवं रत्नसंघ एप्प के माध्यम से दी जायेगी। फोन नं. 0291-2630490, 2624891, 2636763, 2622623

आचार्य हस्ती दीक्षा-शताब्दी वर्ष में रत्नसंघ एप्प के माध्यम से ऑनलाइन मासिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास-मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म-योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में रत्न संघ मोबाइल एप्प के माध्यम से 10 मासिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम प्रतियोगिता 24 मई-2020 में 583, द्वितीय प्रतियोगिता 21 जून 2020 में 634 तथा तृतीय प्रतियोगिता 26 जुलाई-2020 में 538 प्रतियोगियों ने भाग लिया।

चतुर्थ मासिक प्रतियोगिता 30 अगस्त-2020 को दोपहर 3:00 से 4:00 बजे तक रहेगी। इस प्रतियोगिता में प्रतियोगी को बहुविकल्पात्मक 30 प्रश्न मिलेंगे। परीक्षा प्रारम्भ करने के पश्चात् प्रतियोगी को 30 मिनट मिलेंगे परन्तु 4 बजे के पश्चात् परीक्षा समाप्त हो जायेगी। इस प्रतियोगिता में 'नमोपुरिसवरगंधहृत्थीणं' ग्रन्थ भाग 1 में पृष्ठ संख्या 95 से 125 तक के प्रश्न तथा सामायिक-प्रतिक्रमणसूत्र की पुस्तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित में से दिये जायेंगे।

प्रथम एवं द्वितीय प्रतियोगिता में प्राप्त अंकों के आधार पर ऑनलाइन मासिक प्रतियोगिता परिणाम

| | | |
|-----------------------|------------------------|----------------------|
| प्रथम स्थान (2100/-) | द्वितीय स्थान (1500/-) | तृतीय स्थान (1100/-) |
| प्रियंकाजी जैन-जयपुर, | संजयजी देशलहरा-इन्दौर | कमलेश मुणोत-मुम्बई |

10 सान्त्वना पुरस्कार (250/-)-हंसराजजी चौपड़ा-जोधपुर, निशाजी जैन-अलीगढ़, सपनाजी जैन-नाशिक, दिलीपजी जैन-जयपुर, इन्दुजी मुणोत-मुम्बई, राजकुमारजी नवलखा-कोटा, अनुजाजी जैन-नाशिक, सौरभजी जैन-जयपुर, सन्तोषजी लोढ़ा-चेन्नई, लीलाजी जैन-सुमेरगंज मण्डी।

प्रतियोगिता सम्बन्धी अन्य सभी सूचनाएँ रत्न संघ एप्प के ऑनलाइन मासिक प्रतियोगिता विभाग अथवा समाचार विभाग में देखी जा सकेगी।

अशोक बाफना-संयोजक, सुभाषचन्द नाहर-सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.) फोन नं.-0291-2630490

❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16150 से 16152 तक कुल 3 सदस्य बने

‘जिनवाणी’ मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

- 100000/- श्री सोहनलालजी जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले), मुख्य क्षेत्र प्रबन्धक इफको-झालावाड़, अपने सुपुत्र श्री शुभांशुजी जैन आई.पी.एस. झारखण्ड केडर में नियुक्ति होने की खुशी पर श्री हिमांशु जैन के द्वारा जिनवाणी प्रकाशन योजना में।
- 11000/- श्री शंकरलालजी भूरचन्दजी तातेड़, नन्दूरबार की ओर से सप्रेम।
- 2100/- श्री शान्तिलालजी, मदनलालजी, राजेन्द्र कुमारजी, हनुमानजी बरडिया, जोधपुर, श्रीमती धन्नीबाईजी धर्मसहायिका श्री हस्तीमलजी बरडिया (पलासनी वाले) का 10 जुलाई, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में।
- 2100/- श्रीमती पिस्ताबाईजी, ललितजी कटारिया, चेन्नई, श्री भँवरलालजी सुपुत्र स्व. श्री मोहनलालजी कटारिया (बिलाड़ा वाले), हाल निवासी चेन्नई का 9 जुलाई, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
- 1111/- श्री जगदीश प्रसादजी, रविन्द्र कुमारजी, आनन्दजी जैन (चकेरी वाले), आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर, श्री मोहित जी जैन के कनिष्ठ सहायक (अभियोजन विभाग) पद पर नियुक्ति होने की खुशी में।
- 1100/- श्री नथमलजी मूथा एवं समस्त मूथा परिवार (बगड़ीनगर वाले), बेंगलूरु, सुश्राविका श्रीमती दाकीबाई मूथा धर्मसहायिका श्री चम्पालालजी मूथा का 3 जुलाई, 2020 को संधारा सहित प्रयाण

हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

- 1100/- श्रीमती पदमादेवीजी सुराणा, जोधपुर, श्री सुलतानमलजी सुपुत्र स्व. श्री चाँदमलजी सुराणा का 3 जुलाई, 2020 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री सरदारचन्दजी सुराणा, जोधपुर, सुश्राविका श्रीमती विद्यावतीजी धर्मसहायिका श्री सरदारचन्दजी सुराणा का 03 जुलाई, 2020 को देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में।
- 1100/- श्री धर्मेन्द्रजी, राजेन्द्रजी गांग, जोधपुर, सुश्रावक श्री रामराजजी गांग का 06 जुलाई, 2020 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री संजीव कुमारजी छाजेड़, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्रीमती रीतिकाजी सुराणा, जयपुर, स्वप्निलजी सुराणा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री अभिषेकजी जैन (हरसाना वाले), मानसरोवर-जयपुर, पूज्य पिताजी श्री अशोक कुमारजी सुपुत्र स्व. श्री मुंशीलालजी जैन की अतिरिक्त निजी सचिव से निजी सचिव के पद पर पदोन्नति होने की खुशी में।
- 1100/- डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, अपने भतीजे श्री सार्थकजी जैन सुपुत्र श्री विनोद कुमारजी जैन (अलीगढ़-रामपुरा) के द्वारा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकेण्डरी परीक्षा में 92 प्रतिशत अंक प्राप्त करने की खुशी में।

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, मानसरोवर-जयपुर हेतु साभार

- 25000/- श्री सिद्धार्थजी, सुशीलजी सिंघवी, निर्माणनगर-जयपुर।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र-छात्राओं को सैकेण्डरी एवं सीनियर सैकेण्डरी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

-सम्पादक

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

रात्रि भोजन करने के हानिकारक परिणाम

श्री अभय कुमार जैन

हर पल चौबीस घड़ी सातों दिन इस भागमभाग और आपाधापी की दुनिया में रात के भोजन का पूर्ण रूपेण त्याग करना भले ही कठिन लगता हो, लेकिन शारीरिक दृष्टि से यह आदत हानिकारक है। एक अमेरिकन शोध से यह निष्कर्ष सामने आया है कि जो लोग देर रात खाना खाते हैं, वे तुलनात्मक रूप से ज़्यादा खा लेते हैं। इस कारण अधिक कैलोरी का सेवन हो जाता है और न चाहते हुए भी लोग कई बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। धार्मिक दृष्टि से रात्रि-भोजन में सूक्ष्म जीव भी भोजन के साथ खाने में आ जाते हैं, जिससे हिंसा का दोष लगता है तथा भोजन भी शुद्ध नहीं रह पाता है।

अच्छी सेहत के लिए सोने के तीन घण्टे पहले भोजन करना हितकर है। डॉक्टरों के अनुसार रात्रि के समय शरीर की पाचनक्रिया और मेटाबॉलिज़्म प्रोसेस धीमा होता है, जिससे भोजन पूरी तरह नहीं पच पाता है और शरीर में अतिरिक्त फेट जमा होने लगता है, जो कई बीमारियों को बुलावा देता है।

हमारे बड़े-बुजुर्ग कहा करते थे कि जल्दी खाने और जल्दी सोने से शरीर चुस्त-दुरुस्त बना रहता है,

स्वास्थ्य की दृष्टि से आज भी ग्रामीण लोग अधिक तन्दुरुस्त है।

जीवन में पैसा, पद, प्रतिष्ठा ही सब कुछ नहीं होता। एक बार सोचिए जब यह शरीर ही स्वस्थ नहीं होगा तो यह सब चीजें क्या काम आएगी, अतः अपनी आदत में सुधार करें। जो लोग देर रात खाना खाने की आदत से पीड़ित हैं वे जान लें कि इससे क्या-क्या हानियाँ है। यहाँ शारीरिक स्वास्थ्य-विषयक हानियों का उल्लेख किया जा रहा है-

1. **मोटापा**-देर रात खाना खाने से अपच की समस्या सदैव बनी रहती है, क्योंकि शरीर में पाचन तन्त्र की क्रिया बहुत धीमी हो जाती है और जो भी भोजन हम खाते हैं, वह ट्राइग्लिसराइड्स में बदल जाता है जिससे शरीर में अतिरिक्त फेट जमने लगता है। अतः लोग मोटापे के शिकार हैं, वे तुरन्त देर रात भोजन की आदत को छोड़ दें।
2. **अल्सर**-देर रात खाना खाकर तुरन्त सोने से पेट का एसिड आहार नली के द्वारा मुँह में आने लगता है। जिससे खट्टी डकारें आती हैं तथा बदहज़मी के अलावा अल्सर और कैंसर जैसी समस्या भी दस्तक दे सकती है।
3. **अनिद्रा**-दिन का भोजन सूर्य की रोशनी में जल्दी पचता है, रात्रि-भोजन को पचने में अधिक समय

लगता है। इस कारण नीन्द में बाधा आती है जो धीरे-धीरे अनिद्रा की समस्या बन जाती है।

4. **उच्च रक्तचाप**—जिन लोगों के देर रात-खाना खाने की आदत है उनके शरीर में एड्रेन लाइन हार्मोन का लेवल बढ़ जाता है, जो हाई ब्लड प्रेशर का बहुत बड़ा कारण है। भोजन करने के कम से कम तीन घण्टे बाद सोने का नियम बनाएँ।
5. **मधुमेह**—अगर आप देर रात खाना खाने के अभ्यस्त हैं तो मधुमेह की सम्भावना कई गुणा बढ़ जाती है। रात को अधिक देरी से भोजन करने पर शरीर का मेटाबॉलिज़्म प्रोसेस ठीक से काम नहीं करता जिससे शुगर का लेवल बढ़ सकता है और मधुमेह जैसी गम्भीर समस्या भी हो सकती है।
6. **तनाव**—अधिक देरी से खाना खाने से नींद समय पर नहीं आती और सुबह जल्दी उठने के चक्कर में नींद पूरी नहीं होती, इससे स्ट्रेस का लेवल बहुत बढ़ने लगता है, यह एक ऐसी समस्या है जो अन्य अनेक समस्याओं का कारण बनती है।
7. **हृदयघात**—देर रात खाना खाने से वजन में धीरे-धीरे इजाफ़ा होने लगता है, जिससे शरीर में कॉलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ने लगता है। खराब कॉलेस्ट्रॉल के कारण हृदय कमज़ोर होने लगता है जो बाकी दिल सम्बन्धी बीमारी का कारण भी होता है।
8. **मांसपेशियों में दर्द**—देर रात खाना खाने से टहलने का समय ही नहीं मिल पाता है और न पर्याप्त पानी पीया जाता है। अतः कभी-कभी मांसपेशियों एवं पेटदर्द की शिकायत होती है।

दिन ढलने के साथ शारीरिक क्रियाएँ शिथिल यानी धीमी पड़ने लगती हैं। यह एक प्राकृतिक नियम है जाहिर है ऐसे में आँतों को भारी काम देने में समझदारी नहीं है, रात को भोजन भारी होगा तो आँतों को अतिरिक्त सक्रियता दिखानी पड़ती है जिसके परिणामस्वरूप उपर्युक्त समस्या के अलावा अपच,

गैस, एसिडिटी, हाइपर टेन्शन, बेचैनी और चिड़चिड़ापन जैसी समस्या भी घेर लेती है। हृदय रोग विशेषज्ञ का कहना है कि शरीर को सलामत रखना है तो पश्चिम की नकल से बचना होगा। रात में ज़्यादा तेलीय, जंकफूड, मसालेदार, आइसक्रीम और कॉर्बोहाइड्रेट वाली चीजों से बचना चाहिए।

— 'तृप्ति' बन्दा रोड़, भवानीमण्डी-326502 (राज.)

...जो जानना जरूरी है

श्री कन्नू जैन

ये बातें! जो जानना जरूरी हैं,
कुछ कड़वी हैं, लेकिन जानना जरूरी हैं।।
सवेरा होता है, एक नए उजाले के साथ।
सूरज की नई किरणों के साथ।।
अफसोस! इस भाग-दौड़ की जिन्दगी में।
लगे हुए हैं हम, अपने और अपनत्व को खोने में।।
खो रहे हैं हम सब प्रकृति की इस सुन्दरता को।
और आमन्त्रण दे रहे हैं, भविष्य के महाविनाश को।।
अरे! कभी इस प्रकृति के सौन्दर्य को भी करीब से निहार के देखो।
बहुत कुछ कहती है यह शान्त ठण्डी हवा,
इसको महसूस तो करो।।
लेकिन, क्या करें? संसार की इस चकाचौंध में हम सब कुछ खो बैठेंगे।
भाइयों! इस प्रकृति के अनमोल उपहार का आदर करो,
नहीं तो अभी आगे बहुत कुछ सहेंगे।।
अभी तो ये केवल शुरुआत है,
ये महामारी तो जाग्रत होने का एक छोटा सा संकेत है।
'जल है तो कल है' बात तो हम सब कहते हैं,
लेकिन बड़ा दुःख, जब इसका कुछ अर्थ नहीं समझते हैं।
प्रकृति हमें सम्भलने का बार-बार मौका नहीं देगी।
अगर हम इसकी हत्या करेंगे,
तो ये हमारी जान ही ले लेगी।।

अभी भी हम समय रहते सम्भल जाँँ और संकल्प लें।
 स्वच्छ वातावरण की सुन्दरता को,
 हम कभी खोने न दें।।
 दोस्तों! आज भी अगर हम न जागे,
 तो हमारा सारा ज्ञान बेकार है।
 और प्रकृति का ऐसा ताण्डव होगा कि
 हम कहेंगे-मचा ये कैसा हाहाकार है।।
 शुरुआत में ही कहा था कि बात जरा कड़वी है।
 ज्यादा तो क्या कहूँ,
 समझदार के लिए इशारा ही काफी है।।
 इस प्राकृतिक सौन्दर्य को समझना,
 हमारे लिए बहुत जरूरी है।
 भविष्य में ऐसी महामारी से बचने के लिए,
 ये बातें! जो जानना जरूरी हैं।।
 जो जानना जरूरी हैं.....

-सुपुत्र श्री सतीश जैन, पुरानी अनाज मण्डी, वाई
 नं. 10, मु. प्. वैर, तह.- वैर (भरतपुर) राज.

महापुरुषों का निर्मल जीवन, नव इतिहास रचाता है

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

महापुरुषों का निर्मल जीवन, नव इतिहास रचाता है,
 'पूज्य गुरु हस्ती' की सचमुच, अनुपम गौरव गाथा है।
 महापुरुषों का निर्मल जीवन.....।।टेर।।
 चेहरे पर था तेज अनूठा, अमृत जैसी वाणी थी,
 अन्तर में वात्सल्य भरा, करुणा की अमर कहानी थी।
 जैन जगत् का दिव्य सितारे, याद सभी को आते हैं,
 महापुरुषों का निर्मल जीवन.....।।1।।
 उत्कृष्ट आपकी संयम साधना, अप्रमत्त जीवन चर्या थी,
 मैत्री भाव रखो जीवों पर, ऐसी उत्तम शिक्षा थी।
 वर्षों, वर्षों बीत जाने पर, ऐसा फरिश्ता आता है,
 महापुरुषों का निर्मल जीवन.....।।2।।
 संस्कारों का दिया खज़ाना, सबको माला-माल किया,

सामायिक और स्वाध्याय का, अनुपम है उपहार दिया।
 गुरु महिमा बड़ी निराली, जन-जन के भाग्य विधाता हैं,
 महापुरुषों का निर्मल जीवन.....।।3।।
 नमन आपके चरणों में गुरु, जीने की कला सिखाई है,
 मानवता का पाठ पढ़ाया, जग को राह दिखाई है।
 गुरु चरणों में जो भी आता, जग से वो तिर जाता है,
 महापुरुषों का निर्मल जीवन.....।।4।।

-जनता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्पलेक्स, स्टेशन
 रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

Questions and Answers

Sh. Dulichand Jain

Q.1- Why do Jainas avoid eating certain vegetables?

Ans. In addition to being vegetarians or vegans, Jainas take considerable efforts to reduce harming plants. For example, Jainas avoid eating green leafy vegetables during the rainy season. These tend to collect grit in the damp weather, causing tiny life-forms to multiply. This results in additional harm.

The eating practices of Jainas are based on the concept of minimal violence. Many Jainas do not eat root vegetables, like onions and potatoes, because they need to be plucked from their roots. This harms the minute creatures in their vicinity. Also, the bulb of these plants sprout if left for a few days, which means that it still has life.

The more strict Jainas also avoid vegetables with many seeds such as eggplants (brinjal), because each seed constitutes a soul.

Q.2- Can a vegetarian diet meet my nutritional need ?

Ans. Yes, balanced vegetarian and vegan diets are considered to be extremely healthy. Many scholars believe that vegetarianism is the most natural diet for human beings. The human body is not biologically designed to digest meat. A

vegetarian diet is easily digestible, highly nutritious, and has life-sustaining and body-building properties. It is also more economical and reduces the risk of diseases.

No. 70, T.T.K. Road, Aalwarpeth, Chennai-600018
(Tamilnadu)

व्यवहार सम्यक्त्व के 67 बोल

सातवें बोले भूषण पाँच

जिन प्रवृत्तियों से श्रद्धा में अधिक विशिष्टता आती हो, उन्हें 'भूषण' कहते हैं।

1. जिन शासन में निपुण और कुशल होवे।
2. जिन शासन की प्रभावना करें अर्थात् जिन शासन के गुणों को दिपावें व सुसाधुओं की सेवा-भक्ति करे।
3. चार तीर्थ की सेवा करे।
4. शिथिल पुरुषों को जो धर्म में अस्थिर हों, उन्हें उपदेशादि द्वारा जिनधर्म में स्थिर करे तथा अन्य मतावलम्बियों को जिनधर्म की महिमा बतलाकर इसके मार्ग की ओर लगावे।
5. अरिहन्त, साधु तथा गुणी पुरुषों का आदर सत्कार करें और उनकी विनय भक्ति करे।

मृत्यु का ध्यान

श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

उस दिन भरत महाराज अपने दरबार में बैठे थे। दरबार में प्रजा पर लगने वाले कर पर चर्चा हो रही थी। उसी वक्त एक व्यक्ति दरबार में आया और महाराज भरत से पूछने लगा- 'महाराज! आप इतने बड़े साम्राज्य का सञ्चालन करते हुए भी जीवन में निर्लिप्त भाव से कैसे रह लेते हैं?'

राजा भरत ने उस व्यक्ति को कहा- 'तेल से भरा हुआ एक कटोरा लेकर तुम राज्य के सारे बाजारों में घूम आओ। लेकिन ध्यान रहे कि कटोरे में से तेल की एक भी बूँद नीचे गिरा दी तो तुम फाँसी के तख्ते पर लटका दिए जाओगे।'

भरत के आदेश से भयभीत हुआ वह व्यक्ति आदेशानुसार सम्पूर्ण नगर में पूरी सावधानी के साथ घूमकर राजा भरत के पास लौटा। रास्ते में यद्यपि नृत्य, नाटक, संगीत आदि मनोरञ्जन के कई आयोजन चल रहे थे, किन्तु वह व्यक्ति मृत्यु के भय से किसी पर भी दृष्टि न डाल सका।

भरत ने पूछा- "तुम पूरे नगर में घूम आए तो बताओ नगर में तुमने क्या देखा?"

व्यक्ति ने उत्तर दिया कि- "महाराज! मैंने कटोरे के अलावा और कुछ नहीं देखा।"

भरत ने फिर सवाल किया- "तुमने नगर में हो रहे नाटक, संगीत आदि मण्डलियों के अनेक सुन्दर कार्यक्रम नहीं देखे?"

इस पर वह व्यक्ति बोला- "राजन्! जिसके सामने मृत्यु नाच रही हो, वह नाटक, नृत्य आदि मनोरञ्जन के कार्यक्रम कैसे देख सकता है। मृत्यु का भय कैसा होता है, यह तो उससे भयभीत ही जानता है। सच यही है कि मैंने कुछ नहीं देखा।"

यह सुनकर महाराजा भरत ने कहा- "मैं प्रत्येक क्षण जागरूक रहता हूँ। मृत्यु का मुझे हर क्षण ध्यान रहता है। इसलिए साम्राज्य का सुख-वैभव मुझे परेशान नहीं करता। मैं इसका आनन्द लेते हुए भी उसमें आसक्त नहीं होता। मैं निर्लिप्त रहता हूँ।" उस व्यक्ति को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। अब उसकी शंका दूर हो चुकी थी।

पर्युषण पर्व कैसे मनाएँ

श्रीमती नीलू डागा

पर्युषण पर्व अहिंसा-मैत्री का पर्व है। वैर-विरोध को मिटाने का पर्व है। प्रेम से जीने की बात सिखाने वाला पर्व है। प्रमुख बातें ध्यान में रखनी चाहिए-

1. इन दिनों में भौतिक आकर्षण कम होना चाहिए।
2. संवत्सरी के दिन उपवास करें।
3. पौषध की साधना करें।

4. सामूहिक प्रतिक्रमण करें।
5. रोज सुबह-शाम सामायिक करें।
6. टी.वी., सिनेमा, कम्प्यूटर का त्याग करें।
7. सन्त-सतियों का व्याख्यान सुनें।
8. पारणे से पूर्व क्षमायाचना करें।
9. सचित्त वस्तु, रात्रि भोजन और जर्मीकन्द का त्याग करें।
10. साधर्मिक भाइयों से प्रेम बढ़ाएँ।
11. धार्मिक प्रभावना करें।
12. पार्ष्णों की आलोचना, सुपात्रदान और अखण्ड जाप में भाग लें।

-7 ए, शार्दूल गंज, बीकानेर (राज.)

वर्णों की पाठशाला

श्री नरेन्द्र जैन

- अ से - अदब करो।
 आ से - आत्मविश्वास रखो।
 इ से - इबादत करो।
 ई से - ईमानदार बनो।
 उ से - उत्साह रखो।
 ऊ से - ऊर्जावान बनो।
 ए से - एकता रखो।
 ऐ से - ऐश्वर्यवान बनो।
 ओ से - ओजस्वी बनो।
 औ से - औरों की सेवा करो।
 अं से - अंग प्रदर्शन मत करो।
 क से - कर्म करो।
 ख से - खरे बनो।
 ग से - गरिमा रखो।
 घ से - घमण्ड मत करो।
 च से - चरित्रवान बनो।
 छ से - छलो मत।
 ज से - जलो मत।
 झ से - झगड़ो मत।

- ट से - टकराओ मत।
 ठ से - ठगो मत।
 ड से - डरो मत।
 ढ से - ढलना सीखो।
 त से - तरक्की करो।
 थ से - थको मत।
 द से - दया करो।
 ध से - धर्म करो।
 न से - नरम बनो।
 प से - परिश्रम करो।
 फ से - फर्ज निभाओ।
 ब से - बलवान बनो।
 भ से - भलाई करो।
 म से - महान बनो।
 य से - यकीन करो।
 र से - रहम करो।
 ल से - लक्ष्य पाओ।
 व से - वचन निभाओ।
 स से - समय के पाबन्द बनो।
 श से - शक मत रखो।
 ष से - षड्यन्त्र मत रचो।
 ह से - हँसमुख बनो।
 क्ष से - क्षमा करो।
 त्र से - त्राहि मत मचाओ।
 ज्ञ से - ज्ञानी बनो।

सन्तों की बताई गई बातों का चिन्तन करें, मनन करें आचरण में उतारे तो निश्चित रूप से यह जीवन आनन्ददायी, सुखदायी, समृद्धशाली से भरपूर रहेगा, परिवार में प्रेम, स्नेह-आत्मीयता बनी रहेगी। व्यक्ति तुच्छ, हीन बातों से, प्रवृत्तियों से, आचरण व्यवहार सोच से दूर रहेगा। उसका व्यक्तित्व-कृतित्व प्रेरणादायी बन जायेगा।

-विजोबा विहार, मालवीय नगर-17, जयपुर (राज.)

प्रायश्चित्त

डॉ. दिलीप धींग

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 सितम्बर, 2020 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

आचार्य हेमचन्द्र (12वीं सदी) ने अपने युग के दो राजाओं को प्रतिबोधित किया था-सिद्धराज जयसिंह और कुमारपाल। उन्होंने सिद्धराज को सुलभ-बोधि बनाया तो कुमारपाल को समकित-रत्न से अलङ्कृत किया। कुमारपाल सिद्धराज जयसिंह के उत्तराधिकारी थे। राजा बनने से पूर्व कुमारपाल का लम्बा वनवास-काल चला। निःसन्तान सिद्धराज जयसिंह नहीं चाहते थे कि उनके बाद कुमारपाल राजा बने। अतः वे कुमारपाल के प्राणों के प्यासे बने हुए थे। लेकिन कुमारपाल का राजा बनना तय था। अथक प्रयासों के बावजूद शक्तिशाली सिद्धराज कुमारपाल का बाल भी बाँका नहीं कर सके।

विपत्ति के समय में कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र ने कुमारपाल को शरण, संरक्षण, मार्गदर्शन और साहस दिया। उन्हें मालूम था कि कुमारपाल के माध्यम से जिनशासन की अभूतपूर्व प्रभावना होगी। अतः उन्होंने कुमारपाल के राजा बनने की तिथि की भी भविष्यवाणी कर दी थी। सचमुच! घोषित तिथि को कुमारपाल गुर्जर प्रदेश के राजसिंहासन पर आसीन हो गये थे। कुमारपाल ने आचार्यश्री के उपकारों को सदैव सर्वोपरि रखा और न्याय-नीति से विशाल गुर्जर राज्य का सञ्चालन किया।

यह प्रसंग कुमारपाल के उस कठिन समय का है, जब वे वन-वन भटक रहे थे। एक बार कुमारपाल ने जंगल में एक रहस्यमय दृश्य देखा। एक चूहा अपने बिल से एक स्वर्ण-मुद्रा लेकर बाहर निकला। बाहर बिल के पास उसने वह स्वर्ण-मुद्रा रखी और बिल में चला गया। इस तरह वह क्रम से एक दर्जन स्वर्ण-मुद्राएँ अन्दर से लाया और बाहर रखीं। उसके बाद पुनः एक-एक स्वर्ण-मुद्रा लेकर वह अपने बिल में रखने लगा। इस क्रम से ग्यारहवीं स्वर्ण-मुद्रा अन्दर रखने गया और बिल के बाहर एक स्वर्ण-मुद्रा बची रही।

कुमारपाल चुपचाप यह आश्चर्यजनक दृश्य देख रहे थे। जब अन्तिम स्वर्ण-मुद्रा बची, तब कुमारपाल के मन में कौतूहल पैदा हुआ। उन्होंने वह स्वर्ण-मुद्रा वहाँ से उठा ली और अपने पास रख ली। चूहा बिल से बाहर आया तो देखा कि वहाँ स्वर्ण-मुद्रा नहीं है। उसने बिल के आसपास चारों ओर मुद्रा की तलाश की, लेकिन वह नहीं मिली। अपनी स्वर्ण-मुद्रा के गुम होने से चूहा गुमसुम हो गया और देखते ही देखते उसने अपने प्राण त्याग दिये। एक छोटे-से सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय (मूषक) की चर्या, परिग्रह-संज्ञा, गणना-बोध और उसका प्राणान्त विस्मयकारी था।

कुमारपाल कुछ विचार करें उससे पूर्व ही एकाएक चूहे द्वारा प्राण त्यागने से कुमारपाल को अकथनीय पीड़ा हुई। कुमारपाल नीतिमान थे। उन्होंने वह स्वर्ण-मुद्रा लालचवश नहीं, अपितु कौतूहलवश उठा ली थी। वे चाहते तो एकाधिक या एक दर्जन स्वर्ण-मुद्राओं का हरण भी कर सकते थे। बेचारा चूहा उनका क्या बिगाड़ लेता? लेकिन संकटकाल में भी उन्होंने वैसा नहीं किया था। अपनी वह गलती और उसकी दुःखद परिणति को कुमारपाल कभी नहीं भुला पाए। गुर्जर-नरेश बनने के बाद भी महायोद्धा कुमारपाल को मूषक वाली घटना विचलित करती थी।

अहिंसा और वीरता के संगम सम्राट कुमारपाल एक बार आचार्य हेमचन्द्र की निश्रा में बैठे थे। उस समय उन्होंने अपना वह मूषक प्रसङ्ग बताया और गुरु हेमचन्द्रसूरि से हाथ जोड़कर प्रायश्चित्त की याचना की। आचार्यश्री ने व्रत-नियम के रूप में जो प्रायश्चित्त दिया, वह कुमारपाल ने सहर्ष ग्रहण किया। साथ ही कुमारपाल ने राजा होने के नाते एक और भलाई का कार्य किया। उन्होंने एक यात्रा-मार्ग पर पथिकों के लिए विश्राम-स्थल बनवाया, उसका नाम उन्होंने 'मूषक विहार' रखा। यह नामकरण करके राजा कुमारपाल ने अपनी प्रजा को एक नहीं, अनेक सन्देश दिये थे-

1. सभी प्राणियों के प्रति करुणाभाव रखना चाहिये।
2. जानवर भी भावनाएँ और संवेदनाएँ महसूस करते हैं, चाहे वे उन्हें अभिव्यक्त कर पाएँ या नहीं; अथवा मानव उन्हें समझ पाएँ या नहीं।
3. कौतूहल या खेल-खेल में भी किसी पशु-पक्षी को

नहीं सताना चाहिये।

4. मनुष्य तो ठीक, अन्य प्राणियों के साथ भी धोखा नहीं होना चाहिये।
5. नाहक किसी के धन या साधन का अपहरण नहीं करना चाहिये।
6. मानव को संकट में धैर्यवान और सुख में निरभिमान होना चाहिये।
7. गलती हो जाए तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिये। सद्गुरु या आत्मसाक्षी से अपनी भूलों का प्रायश्चित्त करना चाहिये।
8. अपने निर्धारित कर्तव्य या व्यवसाय के साथ पुण्यानुबन्धी पुण्य का अर्जन करना चाहिये।
9. सफलता के शिखर पर भी देव-गुरु-धर्म का विस्मरण नहीं करना चाहिये।

-निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केंद्र, सुगन हाउस, 18, रामानुज अख्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-01 (तमिलनाडु)

- प्र. 1. सिद्धराज जयसिंह राजा कुमारपाल का बाल भी बाँका क्यों नहीं कर सके?
- प्र. 2. कुमारपाल के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।
- प्र. 3. प्रस्तुत कहानी हमें क्या सन्देश देती है?
- प्र. 4. प्रायश्चित्त क्यों किया जाता है? जैनधर्म के अनुसार प्रायश्चित्त का महत्त्व लिखिए।
- प्र. 5. दिए गए शब्दों से मूल शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय अलग कीजिए-निरभिमान, सद्गुरु, अकथनीय, नीतिमान, कौतूहलवश, संवेदनाएँ।
- प्र. 6. 'जानवर भी भावनाएँ और संवेदनाएँ महसूस करते हैं।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

चातुर्मास सूची 2020 में संशोधन

जिनवाणी जुलाई 2020 में पृष्ठ संख्या 77-78 को निम्नानुसार संशोधन कर पढ़ा जाए।

1. मालवीय नगर, जयपुर में श्री पूनमचन्दजी भण्डारी को मन्त्री पढ़ा जाए, श्री सुरेशचन्दजी कोठारी को नहीं।
2. खामगाँव का जिला जलगाँव के स्थान पर नाशिक पढ़ा जाए।

बाल-स्तम्भ [मई-जून-2020] का परिणाम

जिनवाणी के मई-जून-2020 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'प्रेम से हारा नुकसान' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

| पुरस्कार एवं राशि नाम | | अंक |
|--------------------------|-----------------------------------|------|
| प्रथम पुरस्कार-500/- | सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान) | 25 |
| द्वितीय पुरस्कार-300/- | अरिष्ठ कोठारी, अजमेर (राजस्थान) | 24.5 |
| तृतीय पुरस्कार-200/- | अभिषेक पालरेचा, जोधपुर (राजस्थान) | 24 |
| सान्त्वना पुरस्कार-150/- | विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान) | 23 |
| | अंशुल कचोलिया, बेंगलूरू (कर्नाटक) | 23 |
| | प्रियंका जैन, अजमेर (राजस्थान) | 23 |
| | झील जैन, जोधपुर (राजस्थान) | 23 |
| | अरिन चोरडिया-जयपुर (राजस्थान) | 23 |

बाल-जिनवाणी जुलाई, 2020 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 सितम्बर, 2020)

- प्र. 1. "अवसरवादिता के युग में सफलता प्राप्ति के तरीके बदल गए हैं।" आशय स्पष्ट कीजिए।
- प्र. 2. 'जीवन में सद्गुण अपनाओ' कविता में कौन-कौन से सद्गुणों को अपनाने की बात कही है?
- प्र. 3. हम अपने दोष देखकर किसी तरह निर्दोष रह सकते हैं?
- प्र. 4. प्रतिक्रमण के सूत्रों एवं पाठों में कौन-से विषय समाविष्ट हैं?
- प्र. 5. प्रतिक्रमण याद करने से क्या-क्या लाभ हैं?
- प्र. 6. श्रद्धा में बाधक तत्त्व कौन-कौन से हैं?
- प्र. 7. 'जय जिनेन्द्र जय भारत का सूरज धरती पर लायेंगे' कविता का मूलभाव लिखिए।
- प्र. 8. What were the differences between both signs?
- प्र. 9. वास्तविक सफलता के लक्षण कौन-कौन से हैं?
- प्र. 10. दिए गए शब्दों से उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग कीजिए-अनुत्तीर्ण, संयोग, सद्गुण, प्रत्याख्यान।

बाल-जिनवाणी [मार्च-2020] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2020 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

| पुरस्कार एवं राशि नाम | | अंक |
|------------------------------|--|------|
| प्रथम पुरस्कार-600/- | भूमि सिंघवी-जोधपुर (राजस्थान) | 37.5 |
| द्वितीय पुरस्कार-400/- | प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान) | 36.5 |
| तृतीय पुरस्कार-300/- | काजल जैन, जयपुर (राजस्थान) | 36 |
| सान्त्वना पुरस्कार (3)-200/- | उत्कर्ष कुमार जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान) | 35 |
| | आरची जैन, सिंगोली (मध्यप्रदेश) | 35 |
| | वंश जैन, जयपुर (राजस्थान) | 35 |

संस्कार केन्द्र एवं पाठशाला अध्यापकों से निवेदन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि वे जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित 'बाल-जिनवाणी' का वाचन कक्षा में करावें एवं उसमें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भेजने हेतु व्यवस्था करावें। आचार्य हस्ती दीक्षा शती वर्ष में बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : 022 2628 7187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

| MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR) | | |
|-----------------------------|-------------------------|------------------------------|
| SILVER MEMBER RS.50000 | GOLD MEMBER RS.75000 | PLATINUM MEMBER RS.100000 |
| DIAMOND MEMBER RS.200000 | | KOHINOOR MEMBER RS.500000 |

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavard, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722

PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुन्यार्जन किया ऐसे संघनिष्ठ श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

| KOHINOOR MEMBER (RS.500000) | PLATINUM MEMBER (RS.100000) |
|---|---|
| श्रीमान् मोफतराज सा मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव सा नीता जी डागा, झूस्टन। युवारल श्री हरीश सा क्वाड़, चैन्नई। | श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद सा सुरेश सा क्वाड़, पुन्नामल्लई। श्रीमान् राजेश सा विमल सा पवन सा बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम सा क्वाड़, चैन्नई। |
| SILVER MEMBER (RS.50000) | श्रीमान् अम्बालाल सा बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज सा राजकंवर जी मंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। |
| श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमति गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् म्हावीर सोहनलालजी बोधरा, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। | कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। |

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें- M.Harish Kavard - No.5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सर्मक करें- मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाम बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का’

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रैल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्बन्धानुसार प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

- (1) श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता, अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (2) श्रीमती मंजूजी भण्डारी, बेंगलोर, अध्यक्ष-अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
- (3) श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष एवं पूर्व मण्डल अध्यक्ष
- (4) श्री विनयचन्दजी डगा, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (5) डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (6) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (7) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (8) श्री दुलीचन्दजी-श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई
- (9) श्री अशोक कुमारजी चोरड़िया, जोधपुर
- (10) श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर
- (11) श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक
- (12) श्री गौतमचन्दजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर

निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु स्वीकृति प्राप्त हो गयी है-

1. श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, पूर्व संघाध्यक्ष, जयपुर
2. श्री आनन्दजी चौपड़ा, कार्याध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर
3. श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर, मण्डल कार्यकारिणी सदस्य
4. श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया, अजमेर, महासचिव-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
5. श्री अतिशजी सेठिया, होलनांथा
6. श्री रतनराजजी भण्डारी, मुम्बई
7. श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ

जिन महानुभावों ने अर्थसहयोग हेतु स्वीकृति प्रदान की है, उनके प्रति भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कृतज्ञता ज्ञापित करता है तथा स्वेच्छा से इस योजना से जुड़ने वाले महानुभावों की स्वीकृति के लिए प्रतीक्षारत है।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138

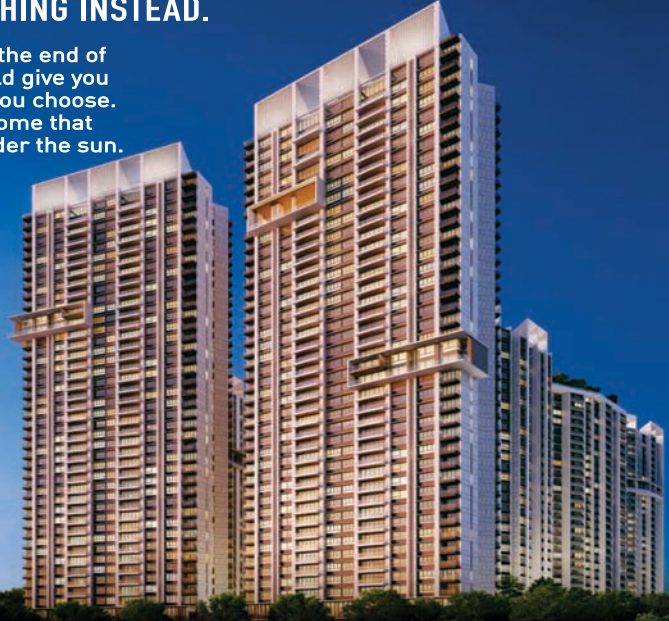




**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भूमिओं का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन